डकैत
प्रियांशी जैन

परिचय

पुलिस थाने में सुबह से हलचल थी ,बड़े बड़े पुलिस के अधिकारी सुबह से वहां जमावड़ा लगाए बैठे थे ,साथ ही थे बहुत से प्रेस वाले ,

अभी भी इंस्पेक्टर महेंद्र देव का सर पुलिस स्टेशन के गेट पर लटक रहा था ,वँहा का स्टाफ ख़ौफ़ज़दा दिखाई पड़ रहा था ,जिला एस. पी. बाकी के अधिकारियों के साथ विचार विमर्श में लगे हुए थे …

तभी गाड़ियों का काफिला वँहा आकर रुक गया

कई गनमैन निकले और सभी अधकारी उठकर खड़े हो गए ,सामने से आ रहे थे केशरगड के जमीदार और विधायक साहब ठाकुर अमरीश सिंह …

चेहरे के रौब से अच्छे अच्छे थर्रा जाए लेकिन आज उनके ही आदमी को इस बेरहमी से मार दिया गया था ,

“आइए ठाकुर साहब “

जिला एस. पी. खड़ा हो गया था

“हम यंहा बैठने नही आये है एस .पी. कब पकड़ोगे तुम फुलवा देवी को “

फुलवा का नाम सुनकर ही सभी की बोलती बंद हो गई ..

“हम पूरी कोशिश कर रहे है ठाकुर साहब “

“अरे भाड में गई तुम्हारी कोशिशें तुम लोगो से कुछ भी नही होगा”

ठाकुर के मुह से गाली सुनकर एस.पी. भी भड़क गया

“हमे गाली देने से क्या होगा ठाकुर साहब ? आपके पास भी तो बाहु बल है ! बहुत बाहुबली बने फिरते हो ,आप ही क्यो नही पकड़ लेते उसे ,प्रभात आपका ही तो आदमी था “

ठाकुर को मानो झटका लगा ,जैसे उसे किसी ने दर्पण दिखा दिया था ,वो सकपकाया और चिढ़ते हुए वँहा से चला गया …

इस सब घटनाक्रम को वँहा पदस्थ नया इंस्पेक्टर सुमित देख रहा था ,उसे आज ही बुलाया गया था ताकि तुरंत ही जॉइन कर ले ,बेचारा अभी अभी तो सब इंस्पेक्टर की तालीम से

इंपेक्टर बना था नई नई उम्र थी और ऐसी जगह तबादला कर दिया गया जंहा कोई भी नही आना चाहता था …

सुमित ने डरते हुए वँहा के हेड कांस्टेबल हरिराम त्रिवेदी से कहा

‘‘पंडित जी ये फुलवा कौन है ‘‘

‘‘मत पूछिये इंस्पेक्टर साहब नाक में दम कर के रखा है इस लड़की ने.कभी इसी गांव की एक नाजुक सी भोली भली परी हुआ करती थी फुलवा.लेकिन हालात ने ऐसी पलटी खाई की आज वो एरिया की सबसे बड़ी डकैत बन गई है.यहां के लोग उसे अब फुलवा की जगह खूबसूरत डकैत के नाम से जानते है ..’’

सुमित के मुह से आश्चर्य से निकाला

‘‘खूबसूरत डकैत .....!’’

कहानी की शुरुआत

रात के अंधियारे में झींगुरों की आवाजे फैल रही थी.छोटी छोटी पहाड़ियों के बीच कुछ लोग हथियारों के साथ खड़े या बैठे हुए थे एक छोटी सी गुफा नुमा जगह में एक बहुत ही हसीन लेकिन भरे हुए बदन की औरत लेटी हुई थी ,उसके पैरो के पास ही एक लंबा चौड़ा मर्द बैठा हुआ था जो उस लड़की के पैरो को दबा रहा था. कमरे में मशालों से थोड़ा उजाला था ,

उस आदमी की छाती चौड़ी और बालो से भरी हुई थी उसका बदन नग्न था और मशाल की रौशनी में चमक रहा था.वो कोई काम का देवता ही प्रतीत हो रहा था वही वो महिला भी किसी काम की प्रतिमा सी दिखाई दे रही थी ,बिल्कुल मांसल दार अंग जो की अपने गोर रंग और तेल के कारण चमक रहा था. हर अंगों में संतुलित भराव था. लेकीन कही भी मांस या चर्बी की अधिकता नही थी ,वो मर्द भी उसे ललचाई निगाहों से देख रहा था लेकिन किसी सेवक की तरह ही पेश आ रहा थेलड़की की आंखे बंद थी और उसका लहंगा उसके घुटने तक उठा हुआ था वही उसके ब्लाउज मे कोई भी चुन्नी नही थी जिससे उसके उन्नत उरोजो के बीच की खाई आसानी से दिख पा रही थी ,

वो मर्द उसके घुटनो तक ही तेल के साथ मालिश कर रहा था लेकिन लड़की के चेहरे पर कोई भाव नही था जैसे वो कही खोई हुई हो ,आंखे तो बंद थी लेकिन चेहरे पर एक चिंता की लकीर भी थी …

‘‘सरदार आज कुछ चिंता में लग रही हो ,लगता है मेरे हाथो ने भी तुमपर कोई असर नही किया ‘‘

फुलवा के चेहरे में मुस्कान आ जाती है ..

‘‘हा रे बलवीर आज प्रभात सिंह को मारने के बाद भी मुझे चैन नही मिला ,पता नही ये चैन कब पड़ेगा …’’

बलवीर जैसे धधक उठा था

‘‘जब आप उस जमीदार के खून से नहाओगी ‘‘

फुलवा उठ कर उसके सर को बड़े ही प्यार से सहलाने लगी

‘‘सच कहा तूने ‘‘

वो उस लंबे चौड़े दानव की देह वाले मर्द को किसी बच्चे की तरह पुचकार रही थी ,और वो मर्द भी जैसे अपने मां के सामने बैठा हो ,वो किसी देवी की तरह उसे देख रहा था ,उसके

आंखों में प्रतिशोध की ज्वाला थी लेकिन फुलवा की आंखों में उसके लिए ममतामई प्रेम ही दिख रहा था ,चाहे वो कितनी भी क्रूर हो ,चाहे सरकार भी उससे ख़ौफ़ खाती हो लेकिन अपने गिरोह के लिए वो बाईस तेईस साल की लड़की किसी देवी से कम नही थी और वो भी अपने गांव और गिरोह के सदस्यों को अपने बच्चों की तरह प्यार करती थी ,यंहा तक की पैतिस साल का भरा पूरा मर्द बलवीर भी उसके आगे उसका बच्चा लग रहा था …

वो उसे अपने सीने से लगा लेती है ,जैसे बलवीर उसकी बड़ी बड़ी ऊरोजो में धंस जाता है ,वो अपने ब्लाउज के आगे के बटन खोलने लगती है और मानो दो गेंदे उछल कर बाहर आ गए हो ,जैसे उन्हें जबरदस्ती ही कस कर बांध दिया गया था ,

बलवीर जैसे सदियों से प्यासा था ,वो उसके उरोजो को चूसने लग.लेकिन फुलवा के चेहरे पर वासना की लकीर भी नही खिंची वो बलवीर को अपने बच्चे की तरह अपने सीने से और भी जोर से चीपका कर उसे अपने उरोजो का रस पिलाने लगी ,उसके बाल बलवीर का चेहरा ढंके हुए थे और उसके हाथ बलवीर के सर को सहलाते हुए उसे अपना प्यार दे रहे थे,बलवीर किसी भूखे बच्चे की तरह फुलवा की भरी ऊरोजो को चूस रहा था ,उसके आंखों में आंसू था ,और फुलवा की भी ममता जैसे छलक रही हो वो भी उस मजे में आंसू बहा रही थी…

ना जाने ये कैसा अजीब सा रिश्ता था इन दोनो के बीच का…

बहुत देर तक वो बस ऐसे ही उसकी ऊरोजो को चूसता रहा…

जब दोनो ही थक गए तो वो अलग हुआ और कुछ सोचता हुआ बोला…

“सरदार एक नया इंस्पेक्टर आया है प्रभात की जगह पर “

“तो क्यो मुश्किल है क्या ???”

“हा है तो “

“क्या “

“बहुत ईमानदार है “

फुलवा जोरो से हँस पड़ी और उसके चेहरे में एक गजब की आभा छा गई जिसे बलवीर देखता ही रह गया जैसे उसमे खो जाएगा

“हा ईमानदार है तब तो सच में मुश्किल है ,लेकिन देखे तो उसकी ईमानदारी कितनी है और किस चीज की है ,जो पैसे से नही बिकते वो डर के बिक सकते है ,जो डरते भी ना हो वो औरत के जिस्म के आगे बिक जाते है “

फुलवा थोड़ी गंभीर हो चुकी थी

“सरदार जंहा तक मुझे पता चला है वो ना तो आजतक पैसे में बिका ना ही किसी से डरा इसलिए एस.पी.ने आपको पकड़ने यंहा भेजा है ,लेकिन औरत का पता नही …”

फुलवा के चेहरे में मुस्कान आ गई

“ठीक है उसे भी आजमा लेंगे “

सुबह सुबह जब सूर्य भी नही निकला था ,सुमित अपनी आदत के मुताबिक दौड़ने निकल पड़ा उसे सुबह का माहौल बहुत पसंद था ,साथ ही उसे पसंद थी सुबह की हवा ,और पसीने में तर होता हुआ शरीर ..

अभी चार ही बजे होंगे,जगह नई थी लेकिन सुहानी थी ,जंगलों और पहाड़ो से घिरा हुआ जगह थेदूर दूर तक कोई बस्ती नही ,वो दौड़ाता हुआ जंगल में बने पगडंडियों में आगे निकल आया था ,थककर एक जगह रुक गया जहां पानी की कलरव ध्वनि सुनाई दे रही थी ,लगा जैसे पास ही कोई झरना होगावो अपनी सांसों को काबू में करता हुआ था आगे जाने लग.

उसे किसी लड़की की मधुर आवाज सुनाई देने लगी …

झाड़ियों के कारण उसे कुछ दिखाई तो नही दे रहा था लेकिन वो उस ओर बढ़ता गया.सूरज अभी अभी अपनी लालिमा फैला रहा था. उसे घर से निकले एक देढ घण्टे तो हो ही गए होंगे …

मौसम में ठंड अभी भी थी ,लेकिन वो पसीने से भीग चुका था ,उसे इस जंगल के सुहाने मौसम में पता ही नही लगा की वो कितना आगे आ गया है ,

सामने के दृश्य को देखकर सुमित का युवा मन आनंदित हो उठा ,वो कौतूहल से सामने देखे जा रहा था ..

एक परी सी हसीन लड़की साड़ी में लिपटी हुई छोटे से झरने के पास खड़ी थी ,वो उससे अभी दूर ही थी लेकिन सुमित की नजर उसपर जम गई ,

साड़ी उसके शरीर से चिपकी हुई थी और गोरा रंग खिलकर दिख रहा था.पूरी तरह भीगी हुई अपने धुन में गाने गा रही थी,वो मस्त थी और उसकी मस्ती को देखकर सुमित भी मस्त हुए जा रहा था …

दूर से ही उसे लड़की के उरोजो का आभास हुआ ,उसने कोई भी अंतःवस्त्र नही पहने थे ,सुमित का दिल धक कर रह गया …

लेकिन उसे अचानक ख्याल आया की वो क्या कर रहा है ,एक स्त्री के रूप से ऐसा मोहित होकर उसे इस तरह छुप कर देखना क्या सही होगा ,उसके अंदर की नैतिकता अचानक से जाग गई और वो मुडकर तुरंत ही जाने लगा…

झाड़ियों में हुए शोर से जैसे लड़की का ध्यान उधर गया ,और उसका गाना बंद हो गया ,

सुमित जैसे ठिठक गया और मुड़ा..

लड़की उसे डरकर घूरे जा रही थी साथ ही उसने अपने हाथो से अपने उरोजो को भी छुपा लीया था जैसे उसे अंदेशा हो की हो ना हो वो उसे ही घूर रहा था …

ऐसे उसके जिस्म का हर अंग घूरने के लायक था. उसके पुष्ट पिछवाड़े भी निकल कर सामने आ रहे थे,और पेट में नाभि की गहराई भी खिल रही थी ,लेकिन सुमित को बस उसकी आंखे दिखी ..

बड़ी बड़ी आँखे जैसे सुमित को सम्मोहित ही कर जाएगी ..

और उसमे लिपटा हुआ डर देखकर सुमित को अपने स्थिति का बोध हुआ ..

वो वही से चिल्लाया

“डरो नही मैं गलती से यंहा आ गया थेमुझे माफ करो “

ये बोलता हुआ सुमित वँहा से चला गया ! लड़की के होठो में मुकुरहट फैल गई ….

सुमित को पास ही एक छोटा सा मंदिर दिख.छोटे से चबूतरे में एक पत्थर रखा हुआ था.जिसपर लोगो ने तिलक लगा दिया था.वो जगह साफ सुथरी थी जिससे ये अनुमान लग रहा था की यंहा लोग अक्सर आते होंगे,आस पास किसी बस्ती का नामोनिशान नही था बस वो झरना था और दूर तक बस जंगल का फैलाव …

सुमित पास ही एक पत्थर में जा बैठा ..

तभी उसे पायलों की आवाज सुनाई दी.छम छम की आवज से सुमित जैसे मोहित ही हो गया ,उसने देखा वही लड़की थी ,और वही साड़ी पहने आ रही थी ,वो साड़ी अब भी गीली थी थी और उसके बदन से चिपकी हुई भी थी लेकिन लड़की के चेहरे में सुमित को देखकर भी डर नही था बल्कि एक मुसकान थी ,उसके हाथो में एक छोटा सा पात्र था ,वो आकर पहले तो उस छोटे पत्थर पर जल चढ़ाती है ,और फिर थोड़ी देर हाथ जोड़े जैसे भाव मग्न हो जाती है …

सुमित उसके उस सौंदर्य को देखता ही रह गया ,गोरा कसा हुआ बदन लेकिन बेहद ही मासूम सा और आकर्षक चेहरा था उसका ,चेहरे के नीचे ठोड़ी में गोदना था. जो की हल्के नीले रंग में कुछ बिंदियाों की तरह दिख रहा था ,नाक में छोटी सी नथनी उसके सौंदर्य को और भी बढ़ा रही थी ,हाथ पाव भरे हुए थे लेकिन कही से भी चर्बी की अधिकता नही थी ,लग रही थी जैसे जंगल में जंगल की देवी उतर आयी हो ,पाव में पायल था और छोटी सी एक साड़ी उसके शरीर का एक मात्रा कपड़ा था.वो भी गीला ही था और उसके शरीर से चीपक कर उसके एक एक अंग को निखार कर सामने ला रहा था …

सबसे आकर्षक थे उसकी आंखे ,तेज आंखे,बड़ी बड़ी और बिल्कुल काली पुतलीयां,सुमित के जेहन में अभी भी वो आंखे घूम रही थी जो उसने झरने में देखी थी …

थोड़ी देर तक लड़की यू ही बैठी रही और सुमित भी फिर वो खड़ी हुई और पास पड़ी झाड़ू उठाकर उस जगह में पड़े कुछ पत्तो को झाड़ने लगी …

पास से ही कुछ फूल तोड़ लायी और उस पत्थर में चढ़ा दिया ..

फिर सुमित की ओर मुड़ी जो बहुत देर से युही बैठा हुआ बस उसे ही देख रहा था…

और जाकर उसके पास बैठ गई ,सुमित को जैसे कोई करेंट लगा हो ,

वो हड़बड़ाया और लड़की जोरो से हँस पड़ी .उसके साफ चमकते दांतो की पंक्तियां सुमित के आंखों में झूम गई …

“अब तुम मुझसे डर रहे हो ,मैं कोई भूत थोड़ी हु “

“तुम यंहा अकेले ..इतने घने जंगल में “

“जंगल तुम्हारे लिए होगा हमारे लिए तो घर है “

लड़की ने ऐसे कहा की सुमित को अपनी ही बात पर पछतावा हुआ

“ओह और ये पत्थर “

सुमित ने उस उस पत्थर की ओर इशारा किया जिसे अभी अभी वो लड़की पूज रही थी

“अरे ये पत्थर नही है ये तो देवी है ! जंगल की देवी ,और हमारी कुल देवी “

“ओह मुझे लगा की इस जंगल की देवी तुम हो “

सुमित के मुह से अनायास ही निकल पड़ा ,

“क्या ?...... क्या कहा ? “

“कु…छ .....कुछ नही “

थोड़ी देर तक कोई कुछ भी नही बोल पाया

“तुम्हारा नाम क्या है ,कहा रहती हो “

“चंपा ...मैं पास के ही कबिले के सरदार की बेटी हु और तुम ...तुम तो शहरी लगते हो यंहा क्या कर रहे हो “

“मैं इस चौकी का इंस्पेक्टर हु “

लड़की ने अजीब निगाह से उसे देखा

“ओह तुम हो नए इंस्पेक्टर ...लेकिन तुम तो पुलिस वाले नही लगते “

उसके चेहरे में एक अजीब सी मुस्कान थी

“क्यो ??”

सुमित को भी उसकी बात पर आश्चर्य हुआ

“क्योकि तुम इतने जवान हो और फिर भी तुमने मुझे नहाते देखकर मुह फेर लीया और यंहा के पुलिस वाले तो औरतों को देखकर लार टपकाते है ,वो पुराना इंस्पेक्टर भी वैसा ही था.सही किया फुलवा ने जो उसे मार दिया “

सुमित बिल्कुल अवाक रह गया था ,वो हमेशा से शहरों में रहा था औऱ ये जगह भी उसके लिए अनजानी थी ,वो सोच रहा था की पुलिस को लेकर यंहा के लोगो का नजरिया ऐसा है …

“सभी लोग एक जैसे थोड़ी होते है “

उसने अपने बचाव में कहा

“हा लगता तो ऐसा ही है”

उस नाजुक बाला ने अपने बड़े बड़े नयनो में ऐसे चंचलता से नचाया की उसकी निगाहे सीधे सुमित के दिल को छेद कर गई ,और वो उठकर भागने लगी सुमित बस उसके रूप में खोया हुआ हुआ ठगा सा बैठा रह गया ...

‘कितने आदमी थे रे कालीया ‘

‘सरदार 2’

‘और तुम 3 फिर भी खाली हाथ आ गए ,क्या सोचा था सरदार खुश होगा शाबासी देगा …’

एक ब्लैक एंड वाइट टीवी में शोले का ये डायलॉग सुनकर फुलवा बच्चों की तरफ खुश हो रही थी ,और अचानक उसने टीवी बंद कर दिया और खुद खड़ी हो गई …

“तो कितने आदमी थे रे कालीया “

सभी लोग अपनी सडी हुई दांत निकाल कर हँसने लगे

“अरे सरदार मेरा नाम कालीया नही लखन है “

सामने खड़ा हुआ एक 50 साल का पतला दुबला सा आदमी हँस पड़ा ,

“हमने कह दिया ना की तू कालीया हे ,तो तू कालीया ही है ! बताओ कितने आदमी थे ? “

“सरदार दो ही थे और वो आपके सामने है “

लखन ने दांत दिखाते हुए कहा ,फुलवा अभी आर्मी जैसे कपड़ो में थी और हाथ में एक बड़ा सा बंदूक पकड़े हुए थी ,

उसके सामने दो शक्स थे ! एक जैसे फिरंगी औरत थी और दूसरा देशी पतला दुबला मर्द उनके आंखों में पट्टियां बंधी हुई थी …

“अच्छा खोल दो दोनो को “

थोड़ी ही देर में दोनो के हाथ और आंखों की पट्टियां हटा दी गई ,

पट्टी हटते ही फिरंगी जैसे दिखने वाली लड़की का मुह खुला का खुला रह गया …

“अरे ऐसे क्या देख रही हो मेडम जी “

फुलवा ने अपने अंदाज में कहा

“आप तो बहुत सुंदर हो “

सच में फुलवा इस समय किसी नई नई जवान अटखेलीया करती हुई लड़की सी लग रही थी ,उसके लंबे खुले हुए बाल लहरा रहे थे जिसे उसने बंधने की भी कोशिश नही की थी …

लकड़ी की तारीफ से वो किस नजाकत से भरी हुई लड़की के जैसे शर्मा गई …

“तुम्हारी हिंदी तो बड़ी अच्छी है हमे तो लगा तुम फ़िरंगन हो “

“नही मैं तो भारत की ही हु बस मेरे पिता जी फिरंगी थे “

“नाम क्या है तुम्हारा “

“मेरी “

“मेरी?? ये कैसा नाम है “

“बस ऐसा ही नाम है मेरा ,तो इंटरव्यू शुरू करे फुलवा देवी “

मेरी के होठो में बड़ी प्यारी मुस्कान थी जिसे देखकर फुलवा को भी बड़ी खुशी हुई

“बिल्कुल लेकिन ऐसा क्या हो गया की आपको हमारा इंटरव्यू लेना है “

“अरे आपको नही पता की आप इंस्पेक्टर प्रभात को मारकर कितनी फेमस हो गई हो ,सभी आपके बारे में और भी ज्यादा जानना चाहते है इसलिए हमने सोचा की आपका इंटरव्यू ले ले “

“अच्छा ऐसा है क्या तो फिर चलो ,ऐसे मैं तो सिर्फ डॉक्टर साहब के कहने पर इंटरव्यू दे रही हु ,क्योकि उन्होंने आपको भेजा है ,और ये क्या उनका क्लिनिक अच्छे से नही चलता क्या जो वो न्यूज़ चैनल खोल रहे है “

दोनो ही जोरो से हँस पड़े

“अरे वो डॉक्टर बॅनर्जी है उनका कोई भी भरोसा नही है ,पहले मैं उनकी सेकेट्री थी अब न्यूज़ चैनल की एंकर बना दिया है मुझे ,कहते है की पहले फुलवा की स्टोरी लाओ उसके जीवन में जो हुआ उसे दुनिया को दिखाना जरूरी है “

फुलवा उसकी बात को सुनकर थोड़ी शांत हो गई और उसके आंखों में आंसू की कुछ बूंदे आ गई …

“हा डॉक्टर साहब जानते है की मेरे साथ क्या बीती है और किन परिस्थितियों में मैंने हथियार उठाने का फैसला किया ,लेकिन उन्हें इन सबसे दूर ही रहने को कहना क्योकि अगर मैं नग्न हो जाऊ तो कई लोगो के कपड़े उतर जाएंगे,और इससे डॉक्टर को भी दिक्कत हो सकती है क्योकि वो कभी नही चाहेंगे की मेरी कहानी दुनिया तक पहुचे ….”

फुलवा थोड़ी देर तक बस ऐसे ही रही ,फिर अपने आंसू पोछने लगी

“अच्छा चलो शुरू करते है “

इधर चौकी में सुमित बस चंपा के ख़यालो में खोया हुआ था ,तभी हरिराम त्रिवेदी आता है

‘‘कहा खोए हो सर,जो काम करने आपको यंहा भेजा गया है उसपर भी कुछ ध्यान देतो है ‘‘

वो हड़बड़ाया

‘‘अरे हा पंडित जी ,तो पहले मुझे फुलवा की तस्वीर तो दिखाइए ‘‘

त्रिवेदी एक फाइल उसके सामने पटक देता है..

और सुमित फाइल खोलते ही उस तस्वीर को बस देखता रह जाता है ....

वही चेहरा जिसे वो दिन भर से याद कर रहा था ,उसके खुले हुए बाल और पासपोर्ट फ़ोटो में भी वही मादकता ,वो अपना सर पकड़ लेता है ...

‘‘हे भगवान ‘‘

‘‘अरे क्या हुआ सर ‘‘

‘‘अरे इसे तो मैं आज ही झरने के पास मिला था ,साली मुझे बना के चली गई ‘‘

सुमित अपना सर जोरो से ठोकने लगता है लेकिन त्रिवेदी आश्चर्य होने के बदले जोरो से हँसने लगता है ..

‘‘अरे सर वो चंपा होगी ‘‘

सुमित की आंखे फट जाती है

‘‘तूम उसे जानते हो ...लेकिन ये तस्वीर ‘‘

‘‘चंपा ,फुलवा की जुड़वा बहन है ...जब से जमीदार ने उनके माता पिता को मार डाला था तबसे पास के कबीले के सरदार ने उसे गोद ले लीया और फुलवा को डाकु होशियार सिंग अपने साथ ले गए ,दोनो में जमीन आसमान का अंतर है ‘‘

सुमित बस अजीब सी मनोदशा में उसकी बातो को सुनता रहा

‘‘लेकिन तब तो बड़ी दिक्कत होती होगी ,अगर फुलवा की जगह किसी के चंपा को मार दिया तो या उसे जेल में डाल दिया तो ...’’

‘‘नही सर हम यहां के निवासी है तो हमे कोई भी दिक्कत नही है ,हमे ये पहले से पता ही की वो दोनो जुड़वा है ,और इसलिए कबिले के सरदार ने चंपा के ठोड़ी में तीन बड़े बिंदी

बनवाये है ,जो की एक टेटू की तरह है जिसे यंहा पर गोदना कहा जाता है वही सबसे बड़ा अंतर है दोनो में ..”

सुमित के नजरो में चंपा की तस्वीर उभर गई ,सचमे चंपा के ठोड़ी पर वो गोदना था जिसे देखकर वो सुबह मोहित हो गया था ……

“लेकिन फिर भी ,अगर फुलवा ऐसा गोदना बनवा ले तो “

“अरे साहब फिर भी दोनो को पहचानना बहुत ही आसान है ,फुलवा एक डकैत है उसके चेहरे में वो उजाड़पन है लेकिन चंपा के चेहरे में एक कोमलता है,चंपा में एक नाजुकता है जबकि फुलवा सामने हो तो अच्छे अच्छे का मुत ही निकल जाता है ,और सबसे बड़ी बात की फुलवा ने कभी अपने को छिपाया नही अगर वो सामने होगी तो वो खुद ही बता देती है की वो क्या है ,उसके पास इतना जिगर है की वो खुद को कभी नही छिपाती ,और हा फुलवा चंपा से थोड़ी पतली भी तो है “

सुमित को समझ नही आ रहा था की इन सबसे वो कैसे दोनो में भेद कर पायेगा लेकिन त्रिवेदी बड़ा ही कॉंफिडेंट लग रहा था क्योकि उसने बचपन से दोनो को देखा था …

“अच्छा अच्छा ठीक है लेकिन चंपा को और कबिले के सरदार को कह देना की वो सतर्क रहे “

“वो हमेशा ही सतर्क रहते है इसलिए बेचारी चंपा कही आती जाती भी नही ,बस घर से जंगल और जंगल से घर !बाहर गांव या दूसरी जगह इसी डर से नही निकलने दिया जाता क्योकि कोई उसे फुलवा समझकर मार ही ना दे “

सुमित को जाने क्यो लेकिन चंपा के ऊपर बहुत दया आई ,उसने उसके हुस्न को देखा था ,उसकी टपकती हुई जवानी को देखा था. उसे वो मदमस्त होकर नाचना था लेकिन बेचारी अपनी बहन की वजह से बस एक जेल सी जिंदगी जी रही थी ….

सुमित थोड़ी देर बस सोचता रहा

“तो कहा से शुरू किया जाए ,मुखबिरों को सूचना भेज दो ,और पता करो की अब फुलवा कहा मिल सकती है …”

त्रिवेदी भी कुछ सोच रहा था

“साहब एक बात पुछु बुरा तो नही मानोगे “

“हा बोलो ना “

‘‘आप चंपा से कहा मिल गए ‘‘

त्रिवेदी के होठो में मुस्कान थी

‘‘वो जंगल के अंदर एक झरना है वही ,वो वँहा जंगल देवी की पूजा कर रही थी ,मैं सुबह दौड़ाता हुआ वँहा पहुच गया था ‘‘

सुमित ने चंपा के नहाने के बात को पूरी तरह छुपा लीया

‘‘ओह ये बात मैंने पहले किसी इंस्पेक्टर से नही कही लेकिन आपसे कह रहा हु …’’

सुमित उसके चेहरे को बस देखे जा रहा था

‘‘क्योना चंपा का इस्तेमाल फुलवा को पकड़ने के लिए किया जाए …’’

सुमित चौका

‘‘नही नही ...वो एक सीधी साधी सी लड़की है उसे इन सब झमेलो से दूर ही रखो तो अच्छा है ‘‘

त्रिवेदी के होठो में एक मुस्कान आ गई

‘‘एक ही दिन में बहुत कुछ जान लीया साहब आपने ‘‘

सुमित झेप गया

‘‘चलिए कोई बात नही लेकिन मेरी बात पर ध्यान जरूर देना ‘‘

सुमित बस सर हिला कर रह गया ….

सुबह के इंतजार में सुमित रात भर बेचैन रहा उसे चंपा से मिलने की बहुत इच्छा हो रही थी ,बार बार उसका वो रूप उसकी आंखों के सामने आ रहा था वही फुलवा का भी अहसास हो जात.उसे बार बार याद आ जाता था की फुलवा भी चंपा की तरह ही दिखती है …

आज वो 4 बजे से पहले ही घर से निकल गया ,और दौड़ाता हुआ उसी जगह पहुच गया जंहा झरना था. उसने झड़ियो के ओट से देखा तो चंपा अभी अभी आयी मालूम हुई ,उसका शरीर अभी पानी से भीगा नही थेथोड़ी सी आहट और पता नही क्या जो चंपा को सुमित के होने का अहसास दिला गया …

वो उसकी ओर मुड़ी तो सुमित डर के कारण तुरंत ही पलट कर छुपने लगा ,लेकिन उसे चंपा की जोरो की हँसी सुनाई दी ..

“हा हा हा इंस्पेक्टर बाबु बाहर आ जाइये ये क्या शहरी लोगो की तरह छुप छुप कर देख रहे हो देखना है तो सामने से ही देख लो ,जंगल में आये हो तो जंगल के कानून से रहो...

मैं कोई शहर की लड़की नही जंगल की लड़की हु और ये जंगल ही मेरा घर है ,तो फिक्र मत करो इस एकांत में भी एक मर्द को देखकर मैं डरूँगी नही …”

वो फिर खिलखिलाई लेकिन सुमित को लगा जैसे मेरी चोरी पकड़ी गई हो ,वो बाहर आया ,

“यंहा आओ “

वो उसके पास जाकर रेत में बैठ गया और वो पानी में जाने लगी,मौसम में अभी भी ठंड थी लेकिन उसके पानी में जाने से सुमित के माथे पर पसीना आने लग.सिर्फ एक छोटी सी साड़ी का टुकड़ा उनके शरीर में थेसिर्फ साड़ी और कुछ भी नही ,उसने औरत को कभी इतना निर्भीक नही देखा था. लेकीन ये जंगल था ,और चंपा के शरीर में भी कोई अंतःवस्त्र या पेटीकोट जैसी चीज नही थी,मात्रा एक साड़ी थी जो भीगने के साथ साथ उसके शरीर से चीपक गई और उसकी जवान भरी हुई देह की एक एक करवट सुमित के आंखों के सामने आ गई ,साड़ी ऊरोजो से ऐसे चिपके जैसे उसके शरीर का ही कोई अंग हो ,उसके उन्नत उरोजो की गोलाई का पूरा आभास होने लगा था ,सही कहा था पंडित जी ने चंपा थोड़ी मोटी थी लेकिन उसे मोटा नही गदराया कहा जाता है,

भरा पूरा देशी शरीर ,और हर एक अंग से मादकता का झलकन.सुमित के लिए तो खुद को संभालना भी मुश्किल हो रहा थेसुमित उसके देह के जादू में फंस रहा था लेकिन उसकी नैतिकता ने ही उसे आगे बढ़ने से रोके रखा था ..

वो बिना किसी भी परवाह के बड़े ही चैन से नहा रही थी,अपने हर अंग को अपने हाथो से रगड़ती हुई,सुमित के चेहरे में पसीने की एक धार आ गई ..

"बाबुजी लगता है आपको बहुत गर्मी लग रही है आप भी आ जाइये पानी बहुत ठंडा है "

वो कुछ नही कह पाया लेकिन और उसे शांत देख वो बाहर आ गई ,सुमित उसके हुस्न को बस एकटक देखता ही रह गया ,वो सुमित के पास आयी और उसके हाथो को पकड़ कर पानी में खिंचने लगी,उसे आज समझ आया की जंगल की लड़की की ताकत क्या है ,वो सच में बलशाली थी सुमित जैसा जवान और गठीला मर्द भी मानो उसके सामने बच्चा ही लग रहा था. लेकीन सुमित के मन के किसी कोने में उठाने वाले अहसासों ने उसे और भी कमजोर बना दिया था क्योकि वो खुद भी तो उसके साथ जाना चहता था ,ऊपर से तो ऐसे ही दिखा रहा था की उसे नही जाना है लेकिन अंदर से मन के किसी कोने से वो जाने को बेताब ही था…

उसके पैर चंपा के थोड़े ही प्रयास से चलाने लगे और वो अपने कपड़ो की फिक्र किये बिना ही पानी में चला गया ..

चंपा ने सही कहा था की पानी ठंडा था. लेकीन चंपा के पास होने के अहसास से उसके शरीर में थोड़ी गर्मी तो आ ही गई थी ,उसका दिल उतना धड़क रहा था जितना तो उसने कभी दौड़ाते हुए भी महसूस नही किया था …

सुमित का शरीर ठंडे पानी में भी आग की तरह जलने लगा थेबचपन से वो एक शर्मिला लड़का था और ये उसके लिए किसी लड़की का प्रथम स्पर्श था ,वो भी ऐसे मौसम में वो भी इतनी हसीन लड़की का वो भी ऐसी जगह जंहा दूर दूर तक कोई ना हो ,और वो भी उस अप्सरा की इस अवस्था में जबकि सुमित खुद ही उसपर मोहित हुए बिना नही रह पाया था…

चंपा का पूरा बदन पानी से गीला था और उसने सुमित के हाथो को अपने कमर पर टिका दिया सुमित की दशा देखकर वो खिलखिलाई ,उसके दांतो की पंक्ति ने सुमित को और भी मोहित कर दिया था ,वही सुमित उसके गीले कमर को अपने जलते हुए हाथो से महसूस कर पा रहा था ,उसने एक चांदी की पतली करधन पहनी थी जो की उसके नाभि के नीचे लटक रही थी ,चंपा को जैसे कोई फर्क ही नही पड़ रहा हो वो सुमित से थोड़ा अगल हुई और सुमित के ऊपर पानी फेकने लगी ,वो किसी बच्चे की तरह व्यवहार कर रही थी ,उसकी मासूमियत ने सुमित के दिल में प्यार का एक झोंका सा चला दिया ,जिस्म की हवस कुछ पलो के लिए ही सही लेकिन प्यार की मिठास में बदल गई थी ,सुमित बड़े ही

ध्यान से उसे देख रहा था और उसके होठो में एक मुस्कान आ गई ,वो प्यार की छोटी सी मिठास भी बड़ी ही काम की थी क्योकि उसने सुमित को चंपा के रूप को देखने का एक नया ढंग दे दिया था ,वो अब उसके चेहरे की मासूमियत उसकी अल्हड़ अदाओं में खो रहा था ,चंपा के द्वारा फेके गए पानी से वो पूरी तरह से गीला हो गया था और अब वो भी अपने शर्म को हटाकर उसके साथ खेलना चाहता था ,उसने भी पानी को चंपा की तरफ फेकना शुरू कर दिया दोनो ही खिलखिला रहे थे और उस सन्नाटे से भरे हुए जंगल में दोनो की अठखेलियाों से उठाने वाली हँसी की आवाजे गूंज रही थी ...

चंपा और सुमित एक दूसरे को ज्यादा से ज्यादा भिगाने की कोशिश कर रहे थे जबकि दोनो ही भीग चुके थे और इसी कोशिश में सुमित चंपा के पास आ चुका था और अचानक ही वो चंपा के ऊपर गिर पड़ा ,पानी अभी उनके कमर तक ही था ,लेकिन सुमित के यू गिर जाने से चंपा उसे और खुद को संभालने में लग गई यही हाल सुमित का भी था ,और उसने अपने हाथो से चंपा की कमर को जोरो से जकड़ लीया दोनो ही जिस्म एक साथ एक दूसरे से लिपट कर पानी में जा गिरे और इसी दौरान चंपा के वक्षो को ढका हुआ साड़ी का पल्लू जो की ऐसे भी बहुत छोटा ही था सरक गया और चंपा के गुम्बदों से उन्नत और गोल लेकिन मुलायम वक्ष सुमित के सीने में गड़ गए..

जैसे एक करेंट सुमित के शरीर पर चल गया था ,वो ये सोचकर ही घबरा गया की एक लड़की की नग्न उरोज उसके सीने में धंसी जा रही है ,वो उन वक्षो के मुलायम अहसास को महसूस कर पा रहा थेचंपा भी अब थोड़ी शांत हो गई शायद उसे भी ये अहसास हो गया था की आखिर उनके जिस्म अब जवान हो चुके थे और वो किसी मर्द की बांहों में इस स्तिथि में है ...

लेकिन दोनो ही पानी में पड़े हुए थे और अब भी खुद को संभालने में लगे हुए थे ,सुमित ने खुद को संभाल लीया और चंपा को भी सहारा देकर खड़ा कर लीया ,अब भी दोनो के जिस्म मिले हुए ही थे लेकिन सुमित को इतनी हिम्मत ना हुई की वो चंपा के वक्षो को निहार सके ,वो उन्हें देखना चाहता था लेकिन नही देख पाया ,वो बस चंपा के चेहरे को ही देख रहा था जो की ऐसे शर्मा रही थी और उससे अलग भी नही हो पा रही थी,सुमित ने भी चंपा को पहले बार ऐसे शर्माते हुए पाया था ,वो उससे अलग होने को मचली ही थी की उसे अहसास हुआ की सुमित ने उसे कसकर जकड़ लीया है ,सुमित का हाथ अभी भी चंपा के कमर पर कसे हुए था. और वो एकटक उसकी ओर देखे जा रहा था इससे चंपा की शर्म और भी बढ़ गया थी ,सुमित और चंपा की सांसे एक दूसरे में टकरा रही थी और दोनो ही मूर्तियों की तरह वही जम चुके थे ...

चंपा का हाथ भी अभी तक सुमित के गले में पड़ा हुआ था उसने अपना सर नीचे कर लीया और उसका चेहरा लगभग सुमित के गले से नीचे और सीने से थोड़ा उपर तक थेसुमित को अपना सर हल्का सा नीचे करके उसे देखना पड़ रहा था ,सुमित ने उसके बालो में ही चूम लीया ,सुमित की इस हरकत से चंपा ने सर उठाया और सुमित को आश्चर्य से देखने लगी,सुमित ने फिर से उसके माथे को चूम लीया ,जिससे चंपा के होठो में एक हल्की शर्म से भरी हुई मुस्कान खिल गई ..

"क्या इरादा है बाबू जीवन भर ऐसे ही रहना है की छोड़ोगे भी"

चंपा ने अपना हाथ उसके गले से हटाया और उसकी बात से सुमित भी हड़बड़ाया और उसने तुरंत ही चंपा के कमर को छोड़ दिया ,चंपा ने तुरंत ही अपने साड़ी का पल्लू उठाकर अपने खुले हुए वक्षो को ढंक लीया लेकिन इस 1-2 सेकेंड में ही सुमित के सामने चंपा की जवानी का भरपूर खिला हुआ सबूत उसके गोल और बड़े वक्ष आ गए ,जो कुछ ही पलो के लिए उसके सामने रहे लेकिन सुमित की नजर में ऐसे बस गए की उसके पूरे शरीर में झुनझुनी सी छूट गई …

सुमित भी शर्म से भर गया और खुद ही नजर घुमा लीया और पानी से बाहर जाने लग.उसकी इस हरकत से चंपा के होठो में एक मुस्कान आ गई ना जाने को सुमित का इस प्रकार उससे शर्माना उसे बहुत भा गया था ..

सुमित ने नजर तो घुमा ली थी लेकिन उसके आंखों में अब भी चंपा के वक्ष नाच रहे थे ,वो अपना सर झटकता लेकिन वो फिर के आ जाते ,और उसके औजार में भी एक अजीब सी झुरझुरी का अहसास उसे हो रहा था ,वो अपने गुदाद्वार को ऊपर खिंच कर अपनी झुरझुरी पर काबू पाने की कोशिश कर रहा था जिसे उसे स्कूल में एक योग के शिक्षक ने सिखाया था जिसे मूलबन्ध कहा जाता है...लेकिन ना जाने क्यो आज सुमित अपनी इस हल्की सी वासना को दूर भागना नही चाहता था जबकि वो उसके साथ हो जाना चाहता था…

वो जाकर उस चबूतरे के पास जा बैठा जिसपर पत्थर के रूप में जंगल की देवी विराजमान थी ,थोड़ी देर में चंपा भी आ गई और चंपा वँहा आ गई और फिर से फूल चढ़ा कर उस जगह को साफ करने लगी ………….

सुमित बस उसे एकटक देखता रहा और चंपा अपने काम में व्यस्त रही ,लेकिन कहने को ही वो काम कर रही थी असल में उसका पूरा ध्यान ही सुमित की ओर था उसे पता था कि वो उसे घूर रहा है,लेकिन जैसे ही वो पलटती थी सुमित अपनी नजरे फेर लेता था ,वो मंद मंद मुस्कुराती लेकिन कुछ नही कहती थी ,

आखिर में वो सुमित के पास आकर बैठी ,

और उसे देखने लगी,सुमित थोडा असहज हो गया ...और इधर उधर देखने लगा

“क्यो बाबुजी ऐसा क्या खास है मुझमें जो आपकी नजर मुझसे हट ही नही रही “

सुमित बुरी तरह से झेंपा

“नही नही तो …”

चंपा मुस्कुराई ,,,वो पहले की तरह खिलखिलाकर हँसी नही,उसकी मुस्कान में एक दर्द की झलक सुमित को साफ दिख रही थी…

“क्या हुआ तुम उदास हो “

“नही बाबू बस सोच रही हु की मर्द कैसे जिस्म से आकर्षित हो जाते है और उसे ही प्यार समझने लगते है ,चाहे तुम जैसा अच्छा मर्द ही क्यो ना हो…”

सुमित को ऐसा लगा मानो किसी ने उसे आईना दिखा दिया हो ..

वो बिल्कुल ही चुप हो गया ,उसके मन में एक ग्लानि का भाव उभरा और उसकी नजर झुक गई …

चंपा ने बड़े ही प्यार से उसके सर पर हाथ फेरा ..

“बाबू तुम बहुत ही अच्छे हो इसलिए नही चाहती की तूम किसी दलदल में फंस जाओ ,जिस्म के आकर्षण को प्यार मत समझ बैठन.यंहा बहुत से शहरी लोग आते है जो यंहा की औरतो के जिस्म से मोहित हो जाते है ,कुछ तो उनसे प्यार की बाते करते है और भोली भाली लड़कियों को बहला कर उनके जिस्म से खेलकर वापस चले जाते है,कुछ को लगता है की वो प्यार में पड़ गए है लेकिन वो बस हवस में होते है…

तुम इन दोनो में से कोई नही हो तुम अच्छे हो ,तुम्हारा दिल साफ है ,इसलिए तुम जिसे अपना मानोगे उसे कभी धोखा नही दोगे ,इसलिए समझा रही हु ,प्यार और जिस्म के आकर्षण में पहले फर्क करना सिख लो फिर आगे जाने की सोचना ….”

सुमित ने कभी सोचा ना होगा की ये जंगल की सीधी साधी सी लगने वाली लड़की इतने ज्ञान की बाते करेगी ,लेकिन वो खुश था की चंपा ने सब कुछ साफ कर दिया था उसके मन में भी उठाने वाले अंतर्द्वंद जैसे खत्म से हो गए थे उसे थोड़ा हल्का महसूस हुआ …

वो चंपा के दमकते हुए चेहरे को देखने लगा ,चंपा के चेहरे में अब भी मुस्कान थी लेकिन वो उदास नही थी जैसे की वो अपने दिल की बात कहकर बोझ से मुक्त हो गई हो …

सुमित ने हा में सर हिलाया

‘‘हा लेकिन इन सबका मतलब ये नही है की तुम यंहा आ नही आ सकते,असल में तुम्हारे आने से मुझे बहुत अच्छा लगता है वरना ऐसा लगता है मानो पूरा जीवन अकेलेपन में ही निकल रहा है ‘‘

‘‘तूम अपने को अकेला मत समझो चंपा मैं हु ना ,और तुमने बिल्कुल सही कहा मुझे इस बात की खुशी है की तुमने मुझे फंसने से बचा लीया ,ये मेरे जीवन में पहली बार हुआ है की मैं किसी से आकर्षित महसूस कर रहा हु,और मुझमें तो इतनी हिम्मत भी नही थी की मैं तुमसे कुछ कह पाऊ,शायद मैं इसे ही प्यार समझ लेता लेकिन तुम तो मुझसे बहुत ही ज्यादा समझदार निकल गई तुमने मुझे सोचने का मौका दिया की ये क्या थे......मैं तुम्हारा हमेशा इस बात के लिए आभारी रहूंगा चंपा ‘‘

इस बार चंपा खिलखिलाकर हँस पड़ी

‘‘क्या अजीबोगरीब बाते करते हो बाबू आप भी ,संचमे आप बहुत ही शरीफ हो ,पता नही इंस्पेक्टर कैसे बन गए ‘‘

उसकी हँसी देखकर सुमित भी मुस्कुरा उठ.

‘‘पता नही कैसे बन गया बस गलती से परीक्षा पास हो गया था ‘‘

इस बार दोनो ही जोरो से हँस पड़े …

‘‘तुम मेरे साथ बाहर घूमने चलोगी’’

सुमित ने हल्के से कहा

‘‘नही बाबा ,अगर बाहर निकली तो लोग मुझे फुलवा समझकर डरने लगेंगे या कोई हमला भी कर दे ‘‘

‘‘अरे मैं तो हु ना तुम्हारे साथ कुछ नही होगा ‘‘

चंपा सोच में पड़ गई ..

बहुत देर तक ऐसी ही शांति छाई रही

‘‘क्या हुआ ‘‘

‘‘मेरे पास सिर्फ दो साड़ी है ‘‘

सुमित को उसकी बात समझ आ गई थी ,

“कोई बात नही ...मैं तुम्हे कपड़े ला दूंगा “

चंपा मानो खुशी से झूम गई

“सच में “

और सुमित के गले से लग गई ,फिर एक बार दोनो के जिस्म मिल गए और सुमित को अपने सीने में मुलायम लेकिन बड़े उरोजो का आभस हुआ ,चंपा ने खुद को काबू में किया ,जब वो अलग हुई तो उसके चेहरे में शर्म फैली हुई थी ……….

“सर इसे अगर चेनल में चला दे तो हाहाकार मच जाएगा …”

मेरी अभी डॉक्टर बॅनर्जी के बाजू में बैठी हुई थी दोनो फुलवा के इंटरव्यू वाले वीडियो को ध्यान से देख रहे थे

“ह्म्म्म”

डॉक्टर बस इतना ही बोला

“आपकी जान को भी खतरा हो सकता है “

“ह्म्म्म”

डॉक्टर ने एक अंगड़ाई ली,और कमरे में उपस्थित दोनो लोगो को देखा जिनमे से एक मेरी थी और एक वो कैमरामैन जिसने वीडियो रिकार्ड किया था …

“ये बात बाहर नही जानी चाहिए की फुलवा ने कोई इंटरव्यू दिया है ...ये वीडियो मेरे पास सही सलामत रहेगा वक्त आने पर ही इसे बाहर निकलेंगे “

दोनो ने डॉक्टर की बात में सहमति में सर हिलाया …

दिन भर सुमित के होठो में एक मुस्कान रही और शाम होते ही वो अपने कस्बे से कुछ दूर एक छोटे शहर की दुकान में पहुच गया और लड़कियों के कुछ कपड़े खरीदने लग.उसने एक दो सलवार सूट और 2 साड़ियां ली ,लेकिन उसे याद आया की वो ब्लाउज तो लीया ही नही ,और चंपा तो अंडरगारमेंट भी नही पहनती,ये सोचकर ही सुमित के होठो में मुस्कान आ गई जिसे हम लोग समाज में गलत मानते है और अंगप्रदर्शन कहते है वो उस जंगल की लड़की के लिए बिल्कूल प्राकृतिक और नैसर्गिक है..

लेकिन अगर उसे बाहर अपने साथ घूमना था तो उसे कुछ समाज में प्रचलित कपड़े देने होंगे …

उसने कुछ अंडरगारमेंट्स भी ले लिए और एक दो ब्लाउज भी लेकिन उसे उसके शरीर के सही माप का अंदाज भी तो नही था.वो बस अपने अंदाजे से ही कपड़े ले रहा था ,लेकिन फिर भी वो संतुष्ट था ..

वो सारे कपड़े पकड़ कर घर आया दिन भर उसे बस चंपा ही चंपा याद आ रही थी और साथ ही उसके द्वारा कही गई बाते,वो काम तो कर रहा था लेकिन दिमाग कही और ही लगा हुआ था.वो उसकी बातो को याद करके कभी गंभीर हो जाता तो कभी हँस लेता ..

सुबह बस उसे चंपा से मिलने का ही इंतजार था ……..

रात के अंधियारे में हल्की मोमबत्ती की रौशनी बिखर रही थी और बलवीर अपनी सरदार के शरीर की मालिश कर रहा था ,

फुलवा अभी बस एक पेटीकोट पहने हुए बैठी थी,ऊपर का बदन पूरा नग्न ही था.उसके बड़े और घने बाल ही उसके वक्षो को छुपा रहे थे ,और बलवीर उसके पीछे बैठा हुआ उसके पीठ पर तेल मल रहा था ,उसके हाथो की फिसलन से चंपा को बेहद ही सुकून मिल रहा था ..

ऐसे तो बलवीर को फुलवा अपना सब कुछ ही दिखा चुकी थी लेकिन फिर भी एक पर्दा जरूर रखती थी क्योकि उसे पता था की वो उसकी सरदार है और अगर वो अपनी इज्जत नही करेगी तो गिरोह के लोग उसकी इज्जत कैसे करेंगे …

वो अपने मर्जी से मजे करती थी ना की किसी के जबरदस्ती या दवाब में ,चाहे दबाव प्यार का ही क्यो ना हो …

ऐसा बलवीरर के लिए तो वो उसकी मां थी माना की गिरोह के सभी सदस्य फुलवा से उम्र और बल में बड़े थे लेकिन फिर भी उसका प्रभाव ऐसा था की वो उसे मां मानते थे ,और फुलवा अपने गिरोह के सभी सदस्यों को अपना बेटा…

ये अलग बात थी की ये बस एक प्रतीक ही था और सब कुछ फुलवा के ऊपर ही था………

बलवीर के गर्म हाथो के स्पर्श से फुलवा के जिस्म की गर्मी भी बढ़ रही थी लेकिन फिर भी ना जाने वो आजकल खुद को क्यो बलवीर से दूर रख रही थी ,बलवीर के दिमाग में ये बात भी चलती थी लेकिन वो फिर भी था बड़ा ही वफादार साथी,

“सरदार आप कुछ अलग सी लग रही हो कुछ दिनों से “

फुलवा के चेहरे में थोड़ी मुस्कान आ गई वो जानती थी की आखिर बलवीर ऐसा क्यो कह रहा है …फिर भी उसने कहा

“क्यो..”

बलवीर को कुछ भी बोलते नही बना ,वो क्या बोलता की हमारे बीच जिस्मानी संबंध नही बन पा रहे है?

फुलवा को भी पता था की बलवीर ये नही बोल पायेगा ,फुलवा पलट कर लेट गई ,उसके घने काले बाल अब भी उसके वक्षो को ढंके थे लेकिन अब उसका चेहरा बलवीर के चेहरे के नीचे था. दोनो की ही आंखे मिल रही थी ..

फुलवा ने अपना हाथ आगे किया ,बलवीर इशारे को समझता हुआ उसकी ओर झुक.फुलवा ने अपने हाथो से बलवीर का सर पकड़ लीया और अपने सीने से लगा लीया ,बलवीर जैसे आनन्द के सागर में डूब गया हो ,उसकी आंखे बंद हो गई ,

बाल अभी भी फुलवा के छाती पर फैले हुए थे और बलवीर के चेहरे से रगड़ खा रहे थे ,लेकिन बलवीर ने कोई भी शिकायत नही की ,वो फुलवा के ऊपर जबरदस्ती नही कर सकता थेचाहे पूरे गिरोह में उससे बलशाली कोई नही था लेकिन फुलवा के सामने वो बस एक गुलाम की तरह वफादार था और एक बच्चे के तरह मासूम ..

बलवीर का विशाल शरीर फुलवा के ऊपर छा गया था और फुलवा के इशारे से वो उसके वक्षो में अपने जीभ को रगड़ता हुआ उसका दूध निचोड़ने लगा था ,फुलवा की आंखे मजे में बंद हो जाती लेकिन फिर वो बस शून्य को देखने लगती जैसे कोई लाश हो ,बलवीर जब कुछ देर तक उसे ऐसे ही लेटे हुए महसूस किया तो वो उठकर फुलवा के आंखों को देखने लगा जो की अभी भी शून्य को ही घूरे जा रही थी ..

“क्या हुआ सरदार ..”

जैसे फुलवा की तंद्रा टूट गई…

“उस इंस्पेक्टर का समझ नही आ रहा है”

“चंपा को तो उसके पीछे लगाया है ना अपने “

“हा लेकिन वो इतना अच्छा है की चंपा भी उसके प्यार में पड़ने लगी है…”

उसकी बात सुनकर बलवीर के चेहरे का भी रंग उड़ने लगा …

“रास्ते से ही हटा देतो है “

बलवीर थोड़ा धीरे से ही कहा लेकिन फुलवा के चेहरे पर डर के भाव आ गए

“नही हमने कसम खाई थी की किसी बेगुनाह को नही मरेंगे “

“लेकिन वो हमारी सबसे बड़ी मुसीबत बन सकता है “

फुलवा थोड़ी देर यू ही चुप रही

“उसे चंपा ही अपने प्यार से संभालेगी…”

बलवीर थोड़ा चिंतित तो था लेकिन फुलवा के सामने वो क्या कह सकता था ...

जोरो की बारिश सुबह से ही हो रही थी और सुमित चंपा से मिलने को बेताब था.वो अपनी गड्डी उठाकर सुबह ही चंपा से मिलने चला गया ,वँहा जाकर देखा तो उसके दिल में खुशी की लहर दौड़ गई और साथ ही एक टीस भी उठी ,खुशी इसलिए क्योकि चंपा एक पेड़ के नीचे दुबकी हुई खड़ी थी ,बारिश बहुत ही तेज थी ,जंगल की बारिश ऐसे भी बहुत ही डरावनी होती है वो भी तब जब अभी सूरज पूरी तरह से नही निकला हो ,और टिस उसके दिल में इसलिए उठी क्योकि उसे देख कर ही लग रहा था की वो सिर्फ इसलिए आयी थी क्योकि वो जानती थी की सुमित भी यंहा आएगा ,उसके चेहरे में हल्का गुस्सा था और वो झूठी नाराजगी का भाव जिसमें बहुत सा प्यार मिला हो ,नाराजगी इसलिए क्योकि सुमित को आने में देर हो गई थी …

सुमित मुस्कुराते हुए उसके पास पहुचा ,वो ठंड से कांप रही थी ,सुमित ने तुरंत ही अपने बेग जो वो अपने साथ लाया था उसे खोलकर एक रेनकोट निकाला और उसे पहना दिया ,

“कितनी देर लगा दी ??”

चंपा ने तुरंत ही कहा

“तुम्हे क्या जरूरत थी इतनी बारिश में इतनी सुबह यंहा आने की “

दोनो ने एक दूसरे को देखा

चंपा के चेहरे में हल्की सी मुस्कान आ गई

“क्योकि मुझे पता था की तुम यंहा जरूर आओगे ..”

चंपा के आंखों से एक आंसू भी निकला था जो बारिश में धूल गया ,अब उसके होठो में बस एक मुस्कान थी ,सुमित का मन किया की वो वही उसके होठो से अपने होठो को मिला दे लेकिन उसने अपने को काबू कर लीया था..

“तो अब तो पूरी ही भीग गई हो ,और ठंड से कांप भी रही हो चलो तुम्हे तुम्हारे घर छोड़ दु “

चंपा जोरो से हँस पड़ी

“मेरे घर तक ये मोटर नही जाएगी साहेब …”

“तो मेरे घर चल ऐसे भी तेरे लिए बहुत से कपड़े लाया हु “

सुमित की बात से चंपा अपनी बड़ी बड़ी आंखों से सुमित को देखने लगी ,

उसका रूप देखकर सुमित हमेशा की तरह ही मोहित था ,बारिश की झमाझम के शोर में उस जंगल में दोनो ही एकांत में थे कोई और होता हो जरूर ही कोई फायदा उठाने की

कोशिश करत.ऐसे में सुमित के औजार ने भी विद्रोह कर दिया था वो भी अपने पूरी ताकत से खड़ा हुआ था ,और वही चंपा की योनि ने भी पानी छोड़ा था ,जो की बारिश के पानी से भीगी उसकी साड़ी में कही गुम होकर रह गई थी ..

लेकिन दोनो ने ही अपने को काबू में रखा था ,पता नही कब और कौन सी एक चिंगारी उस ज्वालामुखी को फोड़ देती,

"तुम्हारे घर जाना क्या सही रहेगा .लोग क्या बोलेंगे "

चंपा थोड़ी शर्मायी

"हम लोगो की फिक्र करेंगे तो लोग हमे जीने ही नही देगें ,जो बोलना है बोले ,मेरे सामने तो नही कह सकते न.जब मैं सही हु तो मैं क्यो डरु"

सुमित की बात सुनकर चंपा का चेहरा खिल गया ..

"और अगर तुम अपने घर लेजाकर मेरे साथ कुछ ...यानी वो सब ..यानी कुछ करने की कोशिश करोगे तो "

चंपा बुरी तरह से शर्मा रही थी और सुमित बस उसकी अदाओं में खो गया था. दोनो ही बस चाह रहे थे की कोई तो शुरवात करे कोई भी पीछे नही हटता लेकिन शुरुवात करना ही तो सबसे बड़ी मुश्किल होती थी …

"अगर करना होता तो यही नही कर लेता …"

सुमित ने हल्के से कहा और चंपा और भी शर्मा गई ..

चंपा की मौन स्वीकृति मिल चुकी थी ,सुमित भीगता हुआ गया और अपनी गड्डी स्टार्ट कर दी..

चंपा भी उसके पीछे आकर बैठ गई…

ये पहला मौका था जब सुमित को चंपा पर शक हुआ ..

क्योकि चंपा ऐसे गड्डी में बैठी जैसे उसे गड्डी में बैठना आता हो …

सुमित भले ही चंपा के नशे में था लेकिन फिर भी उसका खोजी दिमाग जो की एक इंस्पेक्टर का होना चाहिए और जिसके लिए उसे ट्रेनिगं मिली थी वो बार बार कह रहा था की कुछ तो झोल है,क्या उसे चंपा से पूछना चाहिए की जंगल में रहते हुए ऐसा कोन है जिसके साथ वो गड्डी में बैठी है ???

लेकिन उसे इतनी हिम्मत नही हो पा रही थी ..

दोनो ही आगे निकल गए और चंपा ने अपना हाथ सुमित के कमर में कस दिया ,उन जंगली उबड़ खाबड़ रास्तों में चलते हुए सुमित की उत्तेजना का भाव कही गायब हो गया था वो चंपा की हर एक मूवमेंट को बड़े ही ध्यान से नोटिस कर रहा था ,वही शायद चंपा को भी उसके दिल की बात समझ में आ गई थी .....

"सालो के बाद किसी के साथ बैठी हु ..पहले पिता जी ले जाय करते थे,जबसे पिता जी का देहांत हुआ और फुलवा डकैत बन गई बाहर की दुनिया देखने को भी नसीब नही हुआ "चंपा ने पुरानी यादे ताजा कर ली

सुमित के मन में उठ रहे विचार अचानक ही शांत हो गए ..

लगा जैसे सभी सवालों का जवाब मिल गया हो …

दोनो ही सुमित के सरकारी क्वाटर तक पहुचने तक शांत ही रहे ..

सुमित ने जल्दी से घर को खोला

लगभग 5.30 हो चुका था लेकिन बारिश रुकने का नाम ही नही ले रही थी दोनो ही पूरी तरह से भीग चुके थे साथ ही ठंड के मारे कांप रहे थे ..

अंदर आते ही सुमित ने वो कपड़े चंपा के सामने रख दिए जिसे उसने उसके लिए लाये थे ,उसे देखकर चंपा के चेहरे में मुस्कान आ गई लेकिन वो कुछ भी नही बोली

"तुम्हे जो पसंद है वो पहन लो ,और मैं चाय बनाता हु बहुत ठंड लगी है "

चंपा हँस पड़ी

"क्या हुआ ???"

सुमित ने बड़े ही सवालीया नजरो से उसे देखा

"सामने शराब की बोतल रखी है और तुम चाय के पीछे पड़े हो "

वो और भी जोरो से हँसी, सुमित के कमरे के टेबल में एक आधी विस्की की बोतल रखी थी ,

"तुम पीती हो ??"

सुमित ने सवालीया अंदाज में चंपा से कहा

"बड़े अजीब मर्द हो तुम भी जवान लड़की सामने है और गर्मी लाने की लिए तुम चाय और विस्की की सोच रहे हो"

सुमित दंग सा वही खड़ा रहा लेकिन चंपा मुस्कुराते हुए चुपचाप एक साड़ी उठाकर एक कमरे के अंदर चली गई ……

जवानी कितनी खूबसूरत हो सकती है सुमित को आज ख्याल आया थेचंपा बाथरूम से बाहर आ चुकी थी और सुमित बस उसे घूर रहा था ,वो हल्के गर्म पानी से नहा कर निकली थी ,और बदन में एक मात्र टॉवेल था. जो उसकी भरी हुई जवानी को संभालने में नाकाम लग रहा थेबाल अब थोड़े सूखे थे उन्हें भी अच्छे से पोछा गया थेसुमित ने सामने रखी विस्की की बोतल से दो पैक बनाये और एक चंपा की ओर किया ,सुमित की नजर को इसतरह घूरता हुआ देखकर चंपा भी शर्मा गई थी लेकिन उसने झट से वो पैक पकड़ा और एक ही बार में हलक से उतार दिया ..

उसे देखकर सुमित ने भी एक ही सांस में पूरा पैक गटक दिया ,लगा जैसे उसके आहारनली में आग सी लग गई हो ,ना पानी ना सोडा उसे याद भी नही आया वरना वो तो बर्फ डालकर आराम से पीने वाला शख्स था ,उसका बिगड़ा हुआ मुह देखकर चंपा जोरो से हँस पड़ी ,उसके चेहरे में आयी हुई चमक से वो और भी हंसीन हो गई थी …

"तुम तो बेवड़ी निकली "सुमित के चेहरे में मुस्कान था लेकिन उसके चेहरे से पता लग रहा था की उसके जीभ का स्वाद अभी भी बिगड़ा हुआ है ..

चंपा पास ही रखे बिस्तर पर बैठ गई ,

"हमारे गांव में तो इससे भी कड़वी शराब मिलती है,ये तो कुछ भी नही है "

सुमित ने बिना कहे दूसरा पैक बना दिया लेकिन इस बार पानी के साथ ,दोनो ने फिर से उसे एक ही सांस में गटक दिया ,अब उसके जिस्म में गर्मी का संचार होना शुरू हो गया था ,

उस हल्के सुरूर में ऐसा लगा की मानो उनका शरीर हल्का हो गया ,सुमित भी पूरी तरह से भीग चुका था वो भी एक टॉवेल पकड़ कर अंदर चला गया और फिर अपने कपड़े उतार कर बस टॉवेल में ही बाहर आय.अब उसे चंपा से वो शर्म नही आ रही थी ,जब वो बाहर आया तो चंपा भी उसके गठीले बदन को वैसे ही देख रही थी जैसे सुमित चंपा को देख रहा थेअसल में सुमित के अदंर रहते चंपा ने दो पैक और लगा दिए थे और उसकी आंखों में नशा साफ दिख रहा था ,सुमित का गोरा गठीला शरीर और चौडे सीने में उगी हुई बालो का गुच्छा चंपा को आकर्षित कर रहा था ,चंपा उसका हाथ पकड़ कर उसे अपने पास बैठा लीया और उसके लिए एक पैक बनाकर उसके सामने कीया जिसे सुमित फिर से एक ही सांस में अंदर कर गया ,दोनो की निगाहे अब बिना रोक टोक और शर्म के एक दूसरे के बदन को घूर रही थी ,

अचानक ही सुमित का हाथ चंपा के पहने टॉवेल पर चला गया और उसने उसकी गांठ खोल दी ,वो बिना किसी रुकावट के गिर गया और पहली बार चंपा का पूरा बदन उसके सामने छलक पड़ा दोनो की आंखों में नशा था और साथ ही वासना भी ,दोनो की ही आंखे आधी बंद हो चुकी थी ,

सुमित का शर्मिलापन और चंपा की चंचलता दोनो ही वासना और शराब के सुरूर में काफूर हो गई थी ,

सुमित ने चंपा को थोड़ा धक्का दिया और वो बिस्तर में गिरती चली गई ,वही सुमित भी उसके ऊपर आ चुका थेना जाने कब सुमित ने अपने टॉवेल को भी निकाल फेका ,दोनो ठंडे बदन एक दूसरे से सट चुके थे और दोनो के शरीर गर्म होने लगे थे,सुमित और चंपा नंगे ही एक दूसरे से लिपटे सोए थे लेकिन एक चुम्बन भी दोनो के बीच नही हुआ था.चंपा ने सुमित के गले में हाथ डाला हुआ था और सुमित भी अपनी भुजाओं से चंपा का आऔजारन कर चुका था. लेकीन दोनो बस उसी अहसास में डूबे हुए थे ,

सुमित का औजार चंपा की बालो से भरी हुई योनि से टकराता जरूर था लेकिन फिसल कर चंपा के जांघो के बीच चला जाता ,दोनो में से किसी ने इतनी जहमत नही की कि सुमित के औजार को उसकी सही जगह में ले जाया जाय ,

इधर चंपा के योनि से भी रिसाव बढ़ने लगा था और वो भी मस्त हो रही थी ,लेकिन किसी को तो पहल करनी ही थी ,आखिर सुमित को अपने औजार के फटने जैसा अहसास हुआ,वो पूरी तरह से तना हुआ था और खून का वेग उसके औजार के नसो में तेजी से दौड़ रहा था ,साथ ही दिल भी बेहद जोरो से धड़कने लगा था मानो अब उससे बर्दास्त नही होगालेकिन सुमित के साथ ये पहली बार हुआ था वो थोड़ा डरा भी की ये क्या हो रहा है,

सुमित से जब सहा ही नही गया तो उसने अपने औजार को बस हाथो से सही जगह सताया थोड़ा चंपा की योनि में रगड़ने के बाद ही उसके औजार का शिरा गीला होगाएक बार फिर उसने हाथो के माध्यम से ही अपने औजार को चंपा की फूली हुई योनि के दोनो होठो के बीच चलाय.चंपा की पकड़ और भी बढ़ गई थी और उसके मुह से सिसकारियां निकल रही थी ,सुमित की कमर थोड़ी हिली और उसे ऐसा लगा जैसे उसके औजार की चमड़ी फ़टी जा रही है,वो दर्द से कहारा लेकिन तब तक देर हो चुकी थी ,योनि के दोनो होठ खुल चूके थे और उसके औजार का आगे का भाग चंपा की योनि के द्वार पर घुस चुका था. साथ ही चंपा की एक बड़ी सी आह भी उसके कानो में पड़ी जैसे वो भी कहार रही हो,

सुमित को लगा की उसके औजार को उन दो नरम और गीली चमड़ी ने इतने जोरो से जकड़ा हुआ है की वो थोड़ा भी नही हिल पायेगा लेकिन ये सुमित का वहम बस थेयोनि से

रिसने वाले गीले और चिपचिपे पानी में भीगते ही फिर से उसके औजार को मानो जगह मिल गई और वो थोड़ा और अंदर चला गया.फिर से एक कहार दोनो के होठो से निकल गई …

लेकिन इस बार सुमित ने अपने दांत चंपा के वक्षो पर गड़ा दिए थे,वो उनसे अभी तक खेला ही नही था और फुर्सत ही किसे थी ..

इस बार चंपा भी उसकी इस हरकत से तेज आह के साथ उसके बालो को अपने ओर और भी जोर से खिंचा और फिर कुछ ही सेकंड में उसका सर उठाकर उसके होठो को अपने होठो में भीच लीया ..

दोनो के होठ भी एक दूसरे में घुलने लगे थे ,और सुमित ने फिर से थोड़ी ताकत लगाई. इस बार सुमित की ताकत ज्यादा ही लग गई थी और उसका औजार पूरे का पूरा ही चंपा की योनि में धंस गया …

‘‘आआहह ‘‘चंपा के मुह से जोर की आह निकली और उसने उसे रोकने के एवज में सुमित के होठो के निचले हिस्से में अपन दांत ही गड़ा दिया ..

दोनो ने ही थोड़ी देर सांस लेने में बेहतरी समझी और एक दूसरे की आंखों में देख.दोनो को ऐसा लगा जैसे जन्म जन्म से बस इसी की तलाश में थे ,मानो दोनो ही खुशी से पागल हो गए और एक दूसरे को बेतहासा चूमने चाटने लगे ,और इसके साथ ही सुमित के कमर की रफ्तार भी बढ़ गई और दोनो की सिसकियों की भी ..

कमरे में फच फच और आह ओह की आवाजे ही गूंज रही थी ,दोनो ही जंहा दांत लगता गड़ा देतो थे और दोनो ही अपनी आंखे बंद किये इस सुख की दुनिया में मस्त हो गए थे …………..

सुमित और चंपा की आंखे मिली और दोनो ही थोड़े से शर्मा गए,शराब का नशा टूट चुका था और वासना की आग भी अब बुझ चुकि थी ,लेकिन दोनो ही अब एक दूसरी के प्रति एक अजीब से बंधन महसूस कर रहे थे ,

दोनो जल्दी से उठे और अपने अपने कपड़े पहनने लगे ,ना जाने कितने देर तक ये खेल चला था और उसके बाद आयी नींद ने दोनो को अपने आगोश में ले लीया था ..

शायद दोपहर हो गई थी और दोनो को ही जोरो की भूख लग रही थी ,

चंपा अपने टॉवेल को संभाला और फिर सुमित के द्वारा लाये गए कपड़ो को देखने लगी वही सुमित जल्दी से बाथरूम में घुस गया था ..

चंपा उसके द्वारा लाये सामानों को देखते देखते ही पता नही कहा खो गई ,जब सुमित बाहर आया तो उसने चंपा की आंखों को वही अटका पाया वो समान को देखे जा रही थी ,हल्के हाथो से छू छू कर और उसे ऐसे सहला रही थी जैसे कोई बहुत ही प्यारी चीज मिल गई हो ,लेकिन उसके आंखों में आंसू था …

वो उसके पास आया और मानो उसके मन की बात जानने के लिए पूछा

“क्या हुआ ??”

“ये मेरा सपना था बाबु की मैं भी कभी ऐसे कपड़े पहन पाऊ जिसे मेरे लिए मेरा मर्द लाया हो ,और ये चूड़ियां …”

वो फफक पड़ी थी ,सुमित को समझने में देर नही लगी की आखिर चंपा कहना क्या चाहती थी ,

उसने उसे पीछे से जकड़ लीया और उसके गले में एक चुम्मन कर दिया ..

“मैं अब तो तेरा मर्द बन चुका हु ना “

चंपा के रोते हुए चेहरे में मुस्कुराहट तो आ गई लेकिन अब भी आंखों में उदासी थी ..

“नही बाबू ना जाने मेरे कारण आपको क्या क्या सहना पड़े मैं आपको इन सब तकलीफो में नही डाल सकती ,मेरे लिए ये एक सुखद सपना ही अच्छा है जिसे मैं जीना चाहती हु ,जब नींद खुलेगी तो असली दुनिया में चली जाऊंगी लेकिन जब तक ये भ्रम रहेगा तब तक कम से कम खुश हो लेती हु “

चंपा की बातो में सच में एक अजीब सा दर्द था

“लेकिन मैं तो तुझे अपनी औरत मान चुका हु ..”

सुमित ने अपनी गिरफ्त बड़ा दी और चंपा जैसे उसके बांहो में सिमट गई ,वो अपने हाथो से उसे चूड़ियां पहनाने लग.चंपा का पूरा शरीर ही उसके चौड़े सीने से ठिका हुआ था ,जैसे वो कोई भी बल नही लगा रही थी और सुमित भी उसे प्यार से चूड़ियां पहना रहा था ,सुमित ने उसके टॉवेल को फिर इस निकाल फेका चंपा कोई भी विरोध नही कर रही थी असल में उसके चेहरे में कोई भाव आ ही नही रहे थे ,बस आंखों में पानी था जैसे वो किसी सपने में हो…

अजीब सा माहौल था ये चंपा के जिस्म में कपड़े नही थे लेकिन हाथो में लाल चमकदार चूड़ियां थी ,जो उसके गोरे कलाइयों में बहुत ही फब रही थी..

सुमित ने उसे एक बड़े आईने के सामने बिठा दिया थेसम्पूर्ण शरीर ही चमक रहा थेचंपा भी अपने को जैसे सालो बाद देखी हो वो अपने ही आकर्षण से मुग्ध हो गई थी ..

हाथो की लाल चुड़िया जो हर कलाई को आधे से ज्यादा भरे हुए थे ,और उसका गोरा गठिला शरीर उस आईने में खिलाकर कह रहा था की ये रूप की देवी है ,उसके काले और लंबे बाल बिखरे हुए थे ,चेहरा दीप्त था ,और आंखों में आंसू ..

सुमित बड़े ही प्यार से उसके बालो में कंघी कर रहा था ,उसके प्यार को देखकर चंपा और भी उसकी हो जा रही थी ,वो बस सुमित के प्यार को महसूस करती और उसके आंखों का पानी और भी बढ़ जात.सुमित के लिए प्यार हर पल ही बढ़ रहा था. और वो खुद का अस्तित्व ही मिटा कर सिर्फ सुमित की हो जाना चाहती थी ,बालो को संवारने के बाद सुमित ने उसका माथा चूमा और उसके कपड़ो की तरफ बढ़ गया ,

उसने एक पेंटी और ब्रा उठाई जिसे उसने बड़े ही मेहनत से चुना था ,वो भी लाल रंग की ही थी ,उसका कपड़ा रेशमी और मुलायम था जो हाथो में पड़कर भी बहुत ही सुख देता थेसुमित ने इसपर भी अच्छे पैसे खर्च किये थे ..

उसने पहले अपनी रानी के वक्षो को ब्रा से ढंका और फिर वो लाल पेंटी पहनाई ,

चंपा तो बड़े ही आश्चर्य से ये सब देख रही थी लेकिन उस लाल जोड़े में जो की बस उसकी गुप्तांगों के लिए था ,वो और भी मोहक सुंदर और मादक हो गई थी ,

सुमित तो एक बार उसकी इस सौंदर्य को बस देखता ही रह गया और चंपा उसकी नजरो से ही शर्मा गई ,उसका चेहरा लाल हो गया असल में उसे भी कभी महसूस नही हुआ था की वो इतनी सुंदर है ,और बिना अजीब बात ये थी की बिना कपड़ो की चंपा इन दो कपड़ो में और भी ज्यादा खूबसूरत लग रही थी ,

उसका यौवन खिलकर सामने आ रहा था …

सुमित ने फिर से कपड़ो की ओर रुख किया और उसके ब्लाउज पेटीकोट और एक साड़ी उसे पहनाई ,ब्लाउज थोड़ी कड़ी जरूर हुई लेकिन उससे चंपा के वक्षो का भरपूर सौंदर्य सामने आया ,,

सच ही था की नंगेपन से ज्यादा छुपी हुई चीज सुंदर होती है ,

वो बस चंपा को देखता ही रह गया था उसे नही पता था की चंपा इतनी भी खूबसूरत हो सकती है....

सुमित भी अब तैयार होने लगा तब तक चंपा ने उसके रसोई की कमान संभाली! ढंग का खाना बनाना तो उसे भी नही आता था ..लेकिन सुमित को लगा मानो वो स्वर्ग का खाना खा रहा हो सालो से वो बस अपने ही हाथो का खा रहा था ..

दोनो में बाते बहुत ही कम हो रही थी लेकिन एक दूसरे की हर अदा पर वो प्यार से भर जरूर जा रहे थे ,ऐसे माहौल में बात करके वो इसे बर्बाद नही करना चाहते है ,

सुमित ने उसे अपने गड्डी के पीछे बैठाया चंपा ने एक कपड़ा अपने चेहरे में बांध लीया था लेकिन फिर भी वो इतनी सुंदर दिख रही थी की सभी लोग एक बार तो उसे देख ही लेते थे,सुमित अपनी गड्डी को शहर की ओर बड़ा दिया ,चंपा भी उसके कमर पर अपने हाथो को कसे हुए शायद सालो बाद इस आजादी का अनुभव कर रही थी. वो भी अपने प्यार के साथ…

वो सुमित के कंधे में अपना सर चीपका चुकी थी. ये समर्पण का भाव था.जो एक लड़की के अंदर आता है जब वो किसी लड़के पर सबसे ज्यादा भरोसा करने लगती है …

सुमित के कहने पर चंपा ने अपना स्कार्फ खोल लीया था ,लेकिन उसे अब भी डर था की कोई उसे कुछ कह या कर ना दे ,लेकिन सुमित निश्चिंत था ,वो उसे उसी दुकान में ले गया जंहा से उसने चंपा के लिए कपड़े ख़रीदे थे वो और भी कुछ समान उसे दिलाना चाहता था ,उसके चेहरे की रौनक को देखकर तो हर लड़का ही उसकी ओर देखे बिना नही रह पा रहा था ,शायद वँहा सभी फुलवा को जानते थे और कई तो उसका चेहरा भी पहचानते थे लेकिन शायद ही किसी को इस बात पर शक हुआ हो की ये लड़की ही फुलवा है ,असल में वो इतनी सुंदर और सभ्य लग रही थी की किसी को फुलवा का ख्याल भी नही आया होगा …

वो बिना किसी रोक टोक के ही समान खरीदते रहे खाना खाया और सुमित ने उसे फ़िल्म भी दिखाई,चंपा तो बड़े ही आश्चर्य से उस बड़े पर्दे को देखने लगी ..

जब फ़िल्म शुरू हुई तो चिल्ला उठी

“इतना बड़ा सर ..”

इससे पहले की सभी उसकी ओर देखने लगे ,सुमित ने तुरंत ही हंसते हुए उसके उसे समझाया और चंपा अपनी गलती को समझ कर शर्मा गई और सुमित के कंधे में सर लगा कर देखने लगी ,फ़िल्म के दौरान ना जाने कितनी बार ही सुमित को चंपा पर प्यार आया और वो उसके होठो को अपने होठो में समा लीया ,ये अब उनके लिए एक सामान्य सी बात हो चुकी थी ,दोनो ही इस नए नए रिश्ते की मस्ती में मस्त हो चुके थे ,दोपहर से शाम हो चुकी थी और दोनो अभी अभी फ़िल्म से निकल कर दुकान में ही बने रेस्टारेंट में नाश्ता कर रहे थे ,चंपा के लिए ये सभी चीज अजीब थे.इस तरह के कपड़े ,फ़िल्म और ऐसा खाना लेकिन वो सबकुछ सिख रही थी.....

तभी कुछ लोग वँहा आये आश्चर्य की बात थी की उनके हाथो में बड़े बड़े लाठियां थी कोई खुलेआम रिवाल्वर को अपने हाथो में घुमा रहा था लेकिन किसी ने उन्हें रोकने की हिम्मत नही की ,वो लगभग 10-15 की संख्या में थे ,एक लड़का उनके सामने चल रहा था और एक जैकेट पहने हुए थेसभी लोग उन्हें शक और डर की नजर से देख रहे थे ..वो लोग सीधे आये और लड़के ने चंपा के सर पर गन टिका दी ,चंपा और सुमित दोनो के लिए के बिल्कुल ही अप्रत्याशित था ,बाकी के लड़के उन्हें घेर कर खड़े हो गए ,पूरी तरह से शांति पूरे माहौल में छा गई थी …

“ये क्या बतमीजी है “

सुमित गुस्से से चीखा

“तुम्हारा खेल खत्म हुआ फुलवा बाई “लड़के के चेहरे में क्रोध साफ दिख रहा था ..

लेकिन उसकी इस बात पर सुमित बस जोरो से हँस दिया लकड़ा उसे अजीब निगाहों से घूरा ..

“मुझे अभी तक इस बात पर शक हो रहा था की किसी ने इसे देखकर फुलवा क्यो नही कहा ..लेकिन अब समझ आया की अभी तक क्यो नही कहा क्योकि जमीदार साहब को खबर करना था...और फिक्र मत करो ये फुलवा नही उसकी बहन चंपा है”

लड़के के चेहरे में अविश्वास के भाव आये

“मैं तुम्हारे इलाके का नया इंस्पेक्टर हु सुमित ...जमीदार साहब मुझे पहचानते है “

सुमित ने उसे भरोसे में लाने के लिए कहा ..

लेकिन उस लड़के ने अभी भी वो गन नही हटाया था चंपा खामोश सी बैठी थी जैसे उसे पता था की ये होने वाला है …

लड़के ने एक फोन किया

“पिता जी ये तो चंपा है ,और वो नए इंस्पेक्टर के साथ है ..”

उधर से भी कुछ कहा गया और लड़के ने फोन सुमित को दे दिया लेकिन इस दौरान भी चंपा के सर से किसी ने भी गन नही हटाई थी …

सुमित वँहा से उठा और थोड़ी दूर जाकर बात करने लगा

“हम ठाकुर अमरीश बोल रहे है “

"जी ठाकुर साहब “

“ये क्या है इंसपेक्टर हमने तुम्हे फुलवा को पकड़ने के लिए भेजा था लेकिन तुम उसकी हमशक्ल के साथ रंगरलीयां मना रहे हो “

“ठाकुर साहब ये ही मेरे काम का ही हिस्सा है ,आप भी जानते है की दोनो ही बहने हमशक्ल है,लेकिन पता नही की अभी तक जितने भी लोग यंहा उसे पकड़ने आये वो इस बात का फायदा क्यो नही उठा पाये ,मैं इस बात का फायदा उठाकर उसे पकडूँग. ये मेरे प्रेम जाल में पूरी तरह से फंस चुकी हैं, इसके जरिए ही इसकी बहन तक पहुचा जा सकता हैं”

ठाकुर ने शाबासी के कई वाक्य कह डाले

“बहुत बढ़िया सुमित ,तुम बस उस कुतिया को हमारे हवाले करो और मुह मांगा इनाम तुम्हारा …और चंपा को फसाने में जितनी भी मदद लगे हम देंगे “

सुमित के चेहरे में कुटिल मुस्कान खिल गई

“फिलहाल तो 1 लाख ही भेज दो ,साली को पटाने में बहुत पैसा खर्च होगा….”

दोनो तरफ से हँसी गूंज गई …..

फुलवा के जिस्म में लगे हुए घाव को देखकर बलवीर के मन में अजीब सी तिलमिलाहट हो रही थी,लेकिन वो कर भी क्या सकता था आखिर फुलवा थी तो उसकी सरदार …

बलवीर बड़े ही प्यार से उस जख्म को छुआ..

“आउच “फुलवा के चेहरे में एक दर्द की लहर आने की बजाए खुशी झलकने लगी,आंखों में मस्ती के बादल थे और होठो में हल्की सी मुसकान….

बलवीर की चिढ़ इसे देखकर और भी बढ़ गई थी …

अचानक ही फुलवा की नींद खुली और अब भी उसके होठो में वही मुस्कान थी और थोड़ी शर्म भी …

“लगता है की चंपा सरदार पर भारी पड़ रही है,सरदार भूलिए मत की आप चंपा नही फुलवा है,शायद उस इंस्पेक्टर ने आपके अंदर वो सारे अरमान जगा दिए है जो एक साधारण लड़कियों के अंदर होते है और आज तो हद ही कर दी आपने अपना मिशन भूलकर उसके साथ ……”

वो चुप था ,लेकिन फुलवा के होठो में अभी भी वही मुस्कान थी,

बलवीर और भी बुरी तरह से झल्ला गया

“जिस्म की हवस मिटाने तक तो ठीक था सरदार लेकिन तुम तो ...तुम तो ऐसा लग रहा है जैसे तुम उसके प्यार में पड़ गई हो “

बलवीर का चेहरा रूवासु हो गया जिसे देखकर फुलवा खिलखिला कर हँस पड़ी …

“वाह बलवीर बहुत बड़ी बड़ी बाते करने लगा है तू तो ...लगता है की तु भी हमसे प्यार करने लगा है …”

फुलवा की बात सुनकर बलवीर थोड़ा घबरा सा गया लेकिन कुछ भी नही कहा ..

“घबरा क्यो रहे हो ,बलवीर मैं हमेशा से जानती हु और तुमसे मैं सिर्फ अपने जिस्म की प्यास ही बुझती थी लेकिन फिर भी तुम्हारे प्यार के कारण मेरे अंदर भी प्यार की लहरे उठनी शुरू हो गई ! मैं तुम्हे चाहती हु लेकिन अपने बेटे की तरह …”

बलवीर की आंखों में पानी थे

“तुम ये क्या कह रही हो सरदार “

“सच ही कह रही हु ,”फुलवा के आंखों में भी आंसू आ गए थे वो बलवीर के बालो पर प्यार से हाथ फेर रही थी

‘‘सरदार उस सुमित का कोई भी भरोसा करना ठिक नही है हो सकता है की वो आपको जमीदार के हवाले कर दे ,क्या पता सरकारी आदमी है! हम उसके बारे में जानते भी नही है और वो हो सकता है की जमीदार से मिला हुआ होगा ‘‘

फुलवा के होठो में एक मुस्कान आ गई

‘‘नही बलवीर मेरा सुमित ऐसा नही है ‘‘

बलवीर को फुलवा का सुमित के प्रति इतना अपनापन चुभ सा गया ..

‘‘क्या पता की आपके सुमित के मन में क्या चल रहा होगा ‘‘

अचानक ही बलवीर उठ खड़ा हुआ और फुलवा के हाथो को अपने सर पर लगा लीया

‘‘आपको मेरी कसम है की अपनी असलियात उसे नही बताओगी ‘‘

फुलवा थोड़ी मचल गई

‘‘सुनो सरदार तुमने ये नाटक किया था क्योकि तुम उस सुमित को फंसा कर जमीदार तक पहुचना चाहती थी लेकिन अब तो हद हो गई है आप तो खुद ही उसके प्यार में फंसती जा रही है ...क्या आप वो सब भूल गई जो उस हरामजादे जमीदार ने आपके और आपके परिवार के साथ किया था ...याद करो सरदार उस दर्द को जो उसने आपको दिया है…’’

बलवीर के चेहरे की नसे खिंच गई थी ,लेकिन फुलवा के आंखों में बस दर्द ही था…

‘‘वो दर्द मैं कैसे भूल सकती हु ...लेकिन पता नही क्यो सुमित के प्यार के आगे लगता है की वो सब चीजों को भूल कर बस उसकी बांहो में झूलती रहूं ……….’’

अब शायद बलवीर से ये असहनीय हो चुका था वो उठ खड़ा हुआ ..

‘‘आप वो सरदार नही रही जो अपने लोगो के लिए जिया मरा करती थी ‘‘

बलवीर उठकर जाने लगा था. फुलवा ने उसका हाथ पकड़ लीया..

‘‘रुको …मैं जानती हु की तुम क्या चाहते हो ,और फिक्र मत करो तुम्हारी सरदार में अभी भी इतनी ताकत है की वो अपने लक्ष्य के सामने अपने प्यार को आने नही देगी ...लेकिन तुम जो सोच रहे हो वो भी सच है की मैं सुमित के प्यार में बौरा सी गई हु ...उसमे मुझे मेरा भविष्य दिखाई देता है,लेकिन अपने भविष्य के लिए मैं तुम लोगो की गीताओ से नही खेल सकती …’’

फुलवा अब भी बलवीर को किसी आशा से देख रही थी ऐसे तो उसका हुक्म ही इस गुट का नियम था लेकिन फिर भी फुलवा अपने सभी सदस्य साथियों का समान सम्मान करती

थी……

“चंपा को अपने प्यार से प्यार करने दो इस बात पर मुझे मत रोको लेकिन फुलवा अपना इंतकाम लेगी ...और क्या पता शायद सुमित भी हमारे किसी काम आ जाए …”

फुलवा की बात सुनकर बलवीर ने एक गहरी सांस ली ,उसके चेहरे में संतोष के भाव तो अभी भी नही आये थे लेकिन फिर भी वो थोड़ा शांत जरूर दिख रहा था…….

सुमित के हाथो में रुमाल में लिपटी हुई नोट की दो गड्डिया थी ,वो उसे अपने हाथ में झूला रहा थेमन बिल्कुल शांत ऐसा लग रहा था जैसे वो इसे तौल रहा हो …

मन में कई विचार एक साथ चल रहे थे ,

“साहब साहब “

त्रिवेदी की आवाज से जैसे वो चौका और फिर तुरंत ही उन गड्डियो को एक दराज में डालकर बाहर आया …

“अरे पंडित जी आप यंहा “

“साहब आप कल से दिखे नही तो सोचा की चलो हलचल पूछ आऊ ,तबियत तो ठीक है ना “

“ओह वो हा मैं ठीक हु ,”

वो थोड़ी देर तक सोचता ही रहा

“अच्छा त्रिवेदी जी एक बात बताइये की क्या आपको चंपा का घर पता है “

त्रिवेदी एक गहरी मुस्कान में मुस्कुराया

“क्या बात है साहब बड़ी बेताबी हो रही है उससे मिलने की ..”

सुमित अपनी ही बात को संभालता हुआ बोला

“ऐसा तो कुछ नही बस ...बस सोचा की जो लड़की खतरनाक डकैत की बहन हो उसे अपनी नजर में रखना ही चाहिए “

त्रिवेदी जैसे उसके मन के दशा को समझ गया था

“अच्छा चलिए लिए चलता हु आपको भी ,आप भी इस शक को दूर कर ही लो की वो दोनो एक नही दो है “

सुमित थोड़ा झेंपा जरूर लेकिन वो उसके पीछे हो चल.दोनो ही सुमित के बुलेट से जा रहे थे,एक समय के बाद रास्ता भी बंद हो गया था ,इतना घना जंगल देख कर तो सुमित को थोड़ा डर भी लगा ,गाड़ी वही खड़ा कर वो दोनो ही बड़े बड़े पेड़ो के बीच से होते हुए उबड़ खाबड़ रास्तों पर चलने लगे ,और थोड़ी ही देर में उन्हें कुछ झोपड़ियां दिखाई दो ,मुश्किल से 7-8 झोपड़ियां थी ..

वँहा पहुचते ही लोग उन्हें अजीब निगाहो से देखने लगे ,वो सुमित को ऐसे देख रहे थे जैसे की वो किसी दूसरे ग्रह से आया हुआ हो,त्रिवेदी उनके लिए नया नही लग रहा था …

हर घर बड़ी दूर दूर में बसा हुआ था ,और बड़ी ही शांति पसरी हुई थी ,

सुमित और त्रिवेदी दूसरे छोर तक पहुचे एक छोटी सी झोपडी थी जो की अन्य घरों के मुकाबले थोड़ी और अलग थलग थी ,घर के बाहर एक बुड्ढा बैठे हुए बीड़ी पी रहा था ,चारो ओर अथाह शांति फैली थी बस झींगुरों की आवाजे फैली थी ,या तो पत्तो की सरसराहट.कभी कभी कुछ बच्चों की हँसी भी सुनाई दे जाती थी ,

बरामदे में घुसते ही एक मादक सी गंध सुमित के नाक में पड़ी जिसने उसे मदहोश सा कर दिया थेये गंध थी महुए ही ,महुआ जो की आदिवासियों के द्वारा बनाया गई शराब थी जो की वो लोग खुद ही बनाते है ,बिल्कुल ही शुद्ध..

त्रिवेदी जाकर बुजुर्ग के पैर पड़ता है

“चंपा दिखाई नही देती ,हमारे नए साहब है..... महुआ पीने आये है ..”

बुजुर्ग ने थोड़ी देर तक सुमित को घूरा फिर अदंर चला गया ,सुमित को उसका व्यवहार थोडा अजीब लगा लेकिन वो बुजुर्ग थोड़ी ही देर में एक मटकी जैसे पात्र लिए कोई पेय लेकर उपस्तिथ हुआ ,

सुमित के नाक में वही गंध फिर से फैल गई लेकिन इस बार वो थोड़ी ज्यादा ही थी ,

फिर उस बुजुर्ग ने तीन ग्लास लाये और पूरी तरह से महुए से भर दिया ,त्रिवेदी ने तिरछी निगाहों से सुमित की ओर देखा और मुस्कराया ,

तीनो ने ही ग्लास थाम लीया ये सुमित के जीवन में पहली बार था जब वो हाथ से बनी हुई शराब चख रहा था. उसे लगा जैसे आजतक उसने जो महंगी से महंगी शराब पी है वो भी इसकी मादकता और पवित्रता के सामने फीकी है ,बिल्कुल ही ओरिजनल और साफ …

पहला ही ग्लास सुमित के दिमाग में एक सुरुर पैदा कर चुका था ……..

दूसरे के बाद से उसकी आंखे बंद होनी शुरू हो गई ,

“चंपा कहा है “

उसने अपनी लड़खड़ाती हुई आवाज में कहा

“वो अभी जंगल में महुआ बीनने गई है ,लकड़ी वगेरह इकठ्ठा करके ही आएगी…”

बुड्ढे ने पहली बार कुछ सही कहा था ,तीसरा ग्लास भी भर दिया गया था लेकिन सुमित समझदार व्यक्ति था उसने उसे प्यार से मना कर दिया वो जो पता करने आया था वो नशे में समझ ही नही सकता थे

थोड़ी ही देर में एक लड़की एक साड़ी पहने आती हुई दिखाई दी,बस सूती साड़ी का एक कपड़ा और वही तराशा हुआ जिस्म जिसे देख कर सुमित जैसा मर्द भी मदहोश हो गया था ,सुमित की आंखों में चमक आ गई क्योकि सामने से आने वाली लड़की उसकी चंपा थी,,,

चंपा पास आयी और बड़े सलीके से उसने दोनो के सामने हाथ जोड़े और कमरे में चली गई ,

"लो मिल लो यही है चंपा "

त्रिवेदी अच्छे नशे की हालत में आ चुका था ,थोड़ी ही देर में चंपा बाहर आयी और सुमित को देखकर मुस्कुराने लगी ,

सुमित को इस नशे की हालत में चंपा और भी हसीन दिखाई देने लगी थी ,चंपा भी उसे यू देखता हुआ देखकर मुस्कुराई,साथ ही उसके चेहरे में नारी सुलभ शर्म फैल गया.

"अरे सर एक और हो जाए अब तो देख ही लीया ना अपने "

त्रिवेदी की बात सुनकर सुमित ने एक ग्लास और ले ही लीया ,लेकिन इससे वो पूरी तरह से घूम चुका था और आखिर में त्रिवेदी ने ही उसे उठाकर वँहा से उसके घर छोड़ा ….

शाम जब उसकी आंखे खुली तो होठो के एक मुस्कान थी वो चंपा से मिलना चाहता था और फिर से वो उसके घर के ओर चल दिया ,

वँहा चंपा उसे बच्चों के साथ खेलते हुए मिली शाम ढलने को थी और चंपा उसे देखकर भागते हुए अपने घर के अंदर घुस गई ..

"अरे रुको तो सही "

वो उसके पीछे ही भागा था लेकिन बाहर उसके बाप को देखकर वो वही रुक गया ,लेकिन देखा की वो चिलम जला कर रखा था और पूरे नशे में थे

सुमित जाकर उसके पैर छुवे

"फिर से पीने चले आये"

बुजुर्ग की बात सुनकर वो थोड़ा मुस्कुराया

और मन में सोचा

'पीने तो आया हु लेकिन शराब नही शबाब '

थोड़ी ही देर हुई थी की चंपा अपने हाथो में एक मटकी लेकर आ गई ,और एक ग्लास में शराब भर कर सुमित की ओर बड़ा देती है ,उसके चेहरे में शर्म की मुस्कान थी सुमित भी

उसे घूरे जा रहा था ,

"ऐसे क्या देख रहे हो "

उसकी प्यारी आवाज से सुमित जैसे फिर से होशं में आया

"बहुत प्यारी लग रही हो "

वो और शर्मा गई

"खाना खा के जाना आपके लिए देशी मुर्गा बना देती हु "

चंपा ने हल्के से कहा

"ओह पति देव की इतनी सेवा "

"चुप रहो"

चंपा घबराकर अपने बापू की ओर देखी लेकिन वो तो नशे में धुत पड़ा था और फिर हल्के से मुस्कुराई और सुमित के कंधे पर एक चपत मार दी ,

"चलो जल्दी से इसे खत्म करो जल्दी से खाना बना देती हुई बापू तो लगता है आज ऐसे ही रहेंगे "

"तो आज रात में …"

सुमित इतना ही बोलकर रुक गया लेकिन चंपा के चेहरे में मुस्कराहट और भी बढ़ गई लेकिन साथ ही शर्म भी ,वो भागते हुए वँहा से अंदर चली गई लेकिन उसकी अदा से ही सुमित के दिल में गुदगुदी उठ गई,और वो बेख़ौफ़ ही उठा और कमरे के अंदर चला गया ,उसे देखते ही चंपा घबराई और थोड़ी पीछे हो गई ,सुमित उसके करीब जा खड़ा हो गया था दोनो की ही सांसे तेज थी और एक दूसरे के चेहरे से टकरा रही थी ,

चंपा एक दम से शांत हो गई थी और अपनी नजर नीचे किये हुई थी ,वही सुमित की भी नजर बस उसके चेहरे में जा टिकी थी ..

"ऐसे क्या देख रहे हो ,बाहर बापू बैठे है"

चंपा की बात को जैसे सुमित ने अनसुना कर दिया और अपने चेहरे को उसके पास लाते हुए उसके गालो को चूमने की कोशिश की लेकिन चंपा ने अपना चेहरा सरका लीया ,उसके होठो में मुस्कुराहट थी लेकिन दिल जोरो से धड़क रहा था …

सुमित ने अपने हाथो से उसके चेहरे को अपनी ओर किया अब चंपा के माथे पर पसीना था ,वो कोई विरोध नही कर रही थी उसकी आंखे बंद थी ,सुमित ने अपने होठो को चंपा के

होठो के पास लाया और चंपा की सांसे और भी तेज होने लगी उसके होठो भी फड़फड़ाने लगे लेकिन,वो जड़वत बस वही खड़ी रही और सुमित ने बड़े ही इत्मीनान से उसके होठो को अपने होठो में ले लीया ..

चंपा की तो जैसे सांसे ही रुक गई थी उसे लगा जैसे उसके शरीर में कोई भी ताकत बाकी नही है और वो गिर जाएगी उसने खुद को सुमित के बांहो में डाल दिया ,सुमित भी प्यार से उसके बदन को सहलाते हुए फिर से उसके चेहरे को उठाया और उसके चेहरे को ध्यान से देखने लग.

इतना मोहक रूप सुमित ने देखा ही नही था.वो फिर से अनायास ही उसके होठो में खुद के होठो को भिड़ा दिया ,इस बार चंपा के हाथ सुमित के सर पर जा टिके थे और वो उसके बालो को सहला रही थी वही सुमित भी अपने जज़बातों की तूफान को होठो के जरिये चंपा के अंदर धकेल रहा था …..

चंपा का कसा हुआ बदन सुमित के बदन से मिल चुका था ,चंपा की गोल उभरी उरोजो का मुलायम अहसास सुमित के सीने में हो रहा थेसुमित ने चंपा की साड़ी को उसके कंधे से हटाया और अपने होठो को उसके कंधे पर लगा दिया ,

लेकिन सुमित को एक और आश्चर्य हुआ की वो सब घाव कहा गए जो उसने कल चंपा को दिए थे ,जबकि चंपा के दांतो के निशान अब भी सुमित के कंधे पर जिंदा थे…

लेकिन सुमित ने अभी ये सभी चीजे सोचने की फिक्र ही नही की और सुमित ने फिर से चंपा के कंधों को चूमना शुरू कर दिया ,चंपा भी अपने अस्तित्व को सुमित को सौपने लगी थी दोनो के जिस्म की गर्मी एक दूसरे में मिल रही थी …

और दोनो ही एक दूसरे में खोना चाहते थे …

लेकिन तभी …

गोली की आवाज पूरे वातावरण में गूंज गई …

सुमित तुरंत ही सतर्क हो उठा वही चंपा के चेहरे में ख़ौफ़ साफ साफ दिख रहा था ……...

‘‘ये क्या था ‘‘चंपा बुरी तरह से चौकी

सुमित तुरंत ही उठा और झोपड़े से बाहर की ओर गोली की दिशा में जाने लगा ,पहले तो चंपा ने उसका हाथ पकड़ लीया था लेकिन फिर सुमित ने उसे शांत किय.सुमित तो चंपा को बहुत ही निडर लड़की समझ रहा था लेकिन चंपा का इस तरह से घबराना उसे दुखी कर गया …

वो भागता हुआ जंगल में पहुच चुका था किसी के दौड़ाने की आवाज का पीछा करने लगा उसे कुछ लोग दिखाई दिए …

“रुको “सुमित जोर से चिल्लाया जिसे सुनकर सभी रुक गए और सुमित की ओर देखने लगे…

“तुम कौन हो और जंगल में क्या कर रहे हो “उस रौबदार आदमी ने सुमित से सवाल किया ,उसके साथ दो लोग और थे सभी के हाथो में बड़ी बन्दूखे थी …

“मैं इंस्पेक्टर सुमित हु ,यंहा का इंचार्ज …”सुमित अपने सांसों को काबू में करता हुआ बोला

“ओह इंस्पेक्टर साहब ,मैं यंहा का रेंजर हु ,पता लगा था की कुछ लोग यंहा पर शिकार कर रहे है तो उन्हें पकड़ने चले आया था ,लेकिन सालो ने गोली चला दी,उन्ही का पीछा कर रहे थे …”

तो ये भी सरकारी आदमी था सुमित को सुकून मिला

“कौन लोग थे मैं कुछ मदद करू “

“कहा सर वो लोग तो अब निकल चुके ….फुलवा गैंग के लोग होंगे नही तो यंहा किसके पास बन्दूखे होती है “

“ओह”

सुमित बस इतना ही बोल पाया था

“नाक में दम कर रखा है सालो ने ऊपर से भी प्रेशर रहता है ,क्या क्या देखे “

रेंजर तिलमिला गया था

“काम ही ऐसा है सर ,मेरी कोई मदद लगे तो बेहिचक कहिएगा ,मुझे भी उन्हें पकड़ना है ,आप की भी मदद लगेगी”

“बिल्कुल बिल्कुल और आप तो इसी लिए बुलाये गए है,जमीदार साहब ने तो आपको ऊपर बात करके बुलवाया है...चलिए आज आपसे मुलाकात भी हो गई “

दोनो ने हाथ मिलाया सुमित फिर से चंपा के झोपड़े की ओर चल पड़ा ,शांत जंगल में बस झींगुरों की आवाजे आ रही थी वो दौड़ाता हुआ दूर निकल गया था ,अब वो बिल्कुल ही अकेला था और रात के अंधेरे में सरसराता जंगल ,लेकिन फिर भी उसे डर नही लग रहा थी. बल्की वो तो चंपा से मिलने को रोमांचित हुआ जा रहा थे

वो थोड़ी दूर ही आया था की उसे फिर से किसी के कदमो की आहत सुनाई दी ,वो सतर्क हो गया था ,और बड़े ही धीरे धीरे कदम बड़ा रहा था ,चांद के मध्यम प्रकाश में उसे रास्ते का इल्म तो हो रहा था लेकिन फिर भी दूर तक दिखाई नही दे रहा था…

"मेरे जानू …"

एक बहुत ही मदभरी और मीठी आवाज ने उसे चौका दिया वो इस आवाज को अच्छे से पहचान सकता था.वो चंपा की आवाज थी …

वो इधर उधर देखने लगा लेकिन जंगल के बड़े बड़े पेड़ो में उसे कोई दिखाई नही दिया ,तभी उसे खिलखिलाने की आवाज आई ,वो समझ चुका था की चंपा ही उसके साथ मस्ती कर रही है..

"कहा छुपी हो तूम सामने आओ ना "

सुमित बेचैन होकर बोला

"तुम ढूंढो मुझे "

चंपा फिर से खिलखिलाई ,सुमित के चेहरे में भी मुसकान आ गई ,

'कहा ये लड़की अभी इतना डर रही थी और कहा ये मेरे पीछे पीछे आ गई ,ना जाने ये क्या क्या खेल दिखाएगी '

वो हसंते हुए उस आवाज का पीछा करने लगा ,चंपा के भागने से उसके पायलों की आवाज से पूरा जंगल ही गूंज उठा था ,छम छम की आवाज के पीछे सुमित भी भागा जा रहा था लेकिन चंपा को वो पकड़ ही नही पाया ..

भागते भागते उसकी सांसे फूल गई थी और आखिर वो उस झील के पास पहुच गया था जंहा चंपा उसे पहली बार और फिर कई बार मिली थी …

चंपा झील के किनारे ही एक बड़े पत्थर पर बैठी हुई थी ,उसके शरीर पर अब भी वही एक साड़ी थी जिसे उसने थोड़ी देर पहले पहना था लेकिन हाथो में बोतल थी जिसे वो अपने मुह से लगा रही थी,ये भी चंपा का एक अलग ही रूप था ,उसके पैरो में पायल थे जो काले रंग के थे जैसा यंहा की आदिवासी महिलाएं पहनती है ,उसका गोरा और खिला हुआ रूप चांद की रौशनी में चमक रहा था.वो इठला रही थी बलखा रही थी और इतरा रही थी…

सुमित उसके अदांओ में मोहित होकर उसके ओर खिंचा चला जा रहा थेजैसे एक चुम्बक दूसरे चुम्बक की ओर खिंचा चला जाता है ,उसे शराब का नशा फिर से मदहोश कर रहा था जिसे वो कुछ देर से भुला हुआ था ,

सुमित पत्थर के पास पहुच गया और चंपा के पैरो को पकड़ कर उसे चूमने लगा जिससे चंपा खिलखिलाई ,

लेकिन फिर उसे प्यार से देखने लगी ,सुमित ने ही अपना सर उठाया और उसे देखने लगा ,दोनो की नजर मिली और चंपा थोड़ी शर्मा गई ,और नजर नीचे कर लीया …

सुमित अपने स्थान से उठकर चंपा की कमर को पकड़ कर उसे पत्थर से नीचे ले आया ,अब वो सुमित के सामने खड़ी थी लेकिन उसका शरीर अब भी पत्थर से ठिका हुआ था ,दोनो के ही जिस्म आपस में सटे हुए थे ,चंपा के हाथो से सुमित ने शराब की बोतल को ले कर अपने मुह से लगाया ,उससे वही महुवे की खुश बू आ रही थी ,वो एक ही बार में आधी बोतल पी गया क्योकि आधी तो चंपा ने ही खत्म कर दी थी,बोलत फेकने के बाद सुमित फिर से चंपा को देखने लगा जो की उसे ही देख कर मुस्कुरा रही थी ,

“क्या हुआ “

उसने बस अपना सर ना में हिलाया और सुमित के पास थोड़ी और सरक गई ,ऐसे दोनो के बीच कोई जगह तो नही बची थी लेकिन फिर भी चंपा जितना हो सके उतना सुमित को अपने से सटाकर रखना चाहती थी ,दोनो के जिस्म उस हल्की ठंड में भी गर्म थे और एक दूसरे को अपनी गर्मी पहुचा रहे थे ,चंपा का चेहरा सुमित के सीने के पास था ,सुमित ने थोड़ा झुककर चंपा एक होठो के पास अपने होठो को लाया ,दोनो की सांसे एक दूसरे से टकराने लगी और होठो हल्के हल्के ही एक दूसरे को छू रहे थे ,दोनो के ही होठो में फड़फड़ाहट थी ,

सुमित हल्के से अपने सर को आगे करके चंपा के होठो को अपने होठो में भर लीया ,

चंपा का भी हाथ सुमित के बालो में कस चुका था ,दोनो के जिस्म मिल चुके थे और एक दूसरे में सामने का पूरा प्रयास कर रहे थे ,

चंपा की सुडौल उरोज सुमित के सीने में धंस रही थी और सुमित उसके बालो को पकड़ कर उसे अपने मुह में समाने की कोशिश कर रहा था ,

सुमित उसके होठो से निकल कर उसके चेहरे और कंधे तक आ गया ,उसने चंपा के एक मात्रा वस्त्र का पल्लू उसके सीने से सरका दिया.अब चंपा का जिस्म ऊपर से पूरी तरह से नग्न थेसुमित अपने एक हाथ से उसके उरोजो को सहलाने में लग गया ,

“आह……आह ….”

चंपा हल्के हल्के से सिसकियां ले रही थी सुमित उसके गले को चूमता हुआ उसके कंधे तक पहुचा और उसके जीभ ने कुछ खुरदुरा सा महसूस किया ,जिससे चंपा की आह ही निकल

गई ..

सुमित थोड़ा रुक कर उस जख्म को देखने लगा ,जो उसके कंधे पर था …

“ये ..”सुमित की आंखे आश्चर्य से बड़ी हो गई थी क्योकि कुछ देर पहले जब उसने चंपा के कंधे पर अपने होठ फेरे थे तक ये जख्म नही थे,वो दांतो के गढ़ने से बने हुए जख्म थे जो उसके कंधे पर भी थे …

सुमित की बात पर चंपा हल्के से हँसी ..

“कल की बात भूल गए क्या ,जानवरो की तरह कई जगह पर काट लीया था और अब ऐसे मासूम बन रहे हो ..”

सुमित का सर घुमा ,मतलब साफ था की वो फुलवा और चंपा दोनो के साथ रह चुका था इन दो लड़कियों में से एक फुलवा थी और दूसरी चंपा ….

लेकिन ……..

लेकिन दोनो में भेद कैसे किया जाए ???

दिखते एक जैसे है ,बाते एक जैसी,अदाएं भी एक जैसी ,और जो के मात्रा पहचान त्रिवेदी ने उनके अलग होने की बताई थी वो भी दोनो में था …

शायद यही फुलवा है ...सुमित के दिमाग ने कह.क्योकि इस लड़की में वो शर्म नही थी जो की दूसरे के अंदर थी …

लेकिन ..???

लेकिन ये भी हो सकता था की शर्म बस दिखावा हो ,

सुमित के दिमाग ने फिर से कहा ,वो बेचैन हो गया लेकिन अपनी बेचैनी भर जाहिर नही किया और अपने होठो से चंपा/फुलवा के कंधे को चूमता रहा ,

‘अगर ये फुलवा है तो इसका मतलब की मैं एक डकैत के साथ जिसे मैं पकड़ने आया हु ,उसके साथ रात बिताई है ,लेकिन मैंने इसकी आंखों में भी तो वही प्यार देखा था जो मैंने उस दूसरी लड़की के आंखों में देखा था ‘

सुमित बुरी तरह से घबरा गया था. और उसकी घबराहट चंपा से ज्यादा देर तक छुपी नही रह पाई ..

“क्या हुआ ??आप थोड़े बेचैन लग रहे हो “

“कुछ नही कुछ भी तो नही “सुमित हड़बड़ाया

‘‘बताइये ना ‘‘

सुमित ने उसके चेहरे को देखा ,चांद की झाबु में अब भी उसका चेहरा चमक रहा था. वही प्यारा चेहरा और आंखों में सुमित के लिए वही प्यार ,सुमित के दिल ने कहा यही चंपा है ,कोई भी लड़की झूट बोल सकती है लेकिन किसी की आंखे नही ,वो प्यार से भारी आंखे जो सुमित को निहार रही थी वो कैसे झूट बोल सकती है ….

सुमित का दिमाग तो कहता था की यही फुलवा है लेकिन दिल उसे चंपा ही समझ रहा था ,सुमित ने दिल की सुनने की ठान ली और चंपा के गालो में एक चुम्बन झड़ दिया ..

‘‘चंपा मैं एक परेशानी में हु ‘‘

सुमित ने एक दाव खेलने की सोच ली

‘‘क्या ‘‘

‘‘यही की तुम और फुलवा एक ही तरह दिखती हु ,अगर कभी फुलवा मेरे सामने आ गई तो मैं तुम दोनो में से तुम्हे कैसे पहचान पाऊंगा ‘‘

चंपा थोड़ी गंभीर हो गई थी …

‘‘उसका नाम मेरे सामने मत लो ,और उसे पहचानना कोई मुश्किल काम भी नही है ,बस उसकी आंखों में देखन.मेरी आंखों में आपके लिए बेपनाह प्यार दिखेगा और उसकी आंखों में बस शैतानियत ,वो किसी से प्यार नही कर सकती वो तो बस खून की प्यासी है ‘‘

चंपा का चेहरा तमतमा गया था

‘‘तो तुम उसे पसंद नही करती ‘‘

‘‘बिल्कुल नही ..कहने को तो हम दोनो ही बहने है लेकिन मेरे लिए तो वो कब की मर चुकी है ..’’

‘‘फिर भी अगर वो मेरे सामने आयी तो कैसे ..’’

चंपा थोड़ी देर तक उसे देखती है और मुस्कुराती है ..

‘‘बहुत ही आसान है ,उसके ठोड़ी पर ये गोदना नही है ,इसे बापू ने मेरे ठोड़ी में तब गुदवाया था जब उन्होंने मुझे गोद लीया ‘‘

चंपा अपने ठोड़ी में बने हुए गोदने को सुमित को दिखाने लगी

लेकिन सुमित को पता था की दोनो ही लड़कियों के चेहरे पर उसी जगह पर वैसा ही गोदना है

‘‘लेकिन अगर फुलवा ने भी पोलिस से बचने के लिए यही पर ऐसा ही गोदना गुदवा लीया हो तो ‘‘

चंपा के चेहरे पर बहुत ही नैसर्गिक चिंता आ गई ,कोई देखकर कह ही नही सकता था की ये झूट बोल रही है या सच …

‘‘तब क्या करेंगे ‘‘चंपा ने मासूमियत से कहा

‘‘मेरे पास एक तरकीब है शायद यही अच्छा रहे ‘‘

सुमित उसे देखने लगा लेकिन उसके चेहरे का कोई भी भाव नही पढ़ पाया ..

‘‘बोलिये ‘‘

‘‘मैं तुम्हे एक गुप्त कोड बताऊंगा ,जिसे बस तुम्हे ही पता हो ,इसे तुम किसी और को मत बताना ,जब जब हम मिलेंगे तो तुम उस कोड को मुझे बता देना ,मुझे पता चल जाएगा की ये तुम हो वो नही ‘‘

चंपा मानो खुशी से उछाल गई

‘‘हा यही सही रहेगा ‘‘

‘‘तो तुम्हारा गुप्त कोड है 7745 ‘‘

चंपा कुछ देर तक उसे बार बार बोलकर उसे याद कर लेती है

‘‘चलो बहुत रात हो गई अब घर चलते है ‘‘सुमित की बात से चंपा का मुह छोटा हो गया

‘‘अभी तो आये है और कुछ किया भी तो नही है ‘‘

सुमित के चेहरे में मुस्कुराहट आ गई थी ..

करना तो वो भी बहुत कुछ चाहता था लेकिन दोनो के पहचान के कन्फ्यूसन में उसकी सारी उत्तेजना और प्यार जाता रहा ...वो फुलवा के साथ कुछ भी नही करना चाहता था और अभी उसे बस यही पता करना था की आखिर कौन फुलवा है और कौन चंपा ,7745 से उसे ये तो पता चल ही जाएगा की ये वो लड़की है जिसके साथ उसने जिस्मानी रिश्ते बनाये थे,...

सुमित ने उसके सर पर छोटा से चुम्मन दिया…

‘‘अभी मैं थक चुका हु ,फिर कभी ‘‘

चंपा मायूस तो थी लेकिन फिर भी उसने सुमित को पहले अपने बांहो में भर लीया और फिर उसके होठो में हल्का से चुम्मन दिया .....

"मैं तो हमेशा के लिए आपकी हो चुकी हु कब चाहे जो चाहे कर लेना ..."

सुमित उसे प्यार से देखता है और अपने घर की ओर निकल जाता है

सुमित के दिल में जोरदार हलचल चल रही थी ,एक तरफ भोली भाली चंपा थी जिससे वो दिलोजान से मोहोब्बत करता था तो दुसर्री तरफ थी खतरनाक और चालक फुलवा....

दोनो के बाद उसे सरकार और ठाकुर का भी प्रेशर था की वो जल्द से जल्द ही फुलवा को पकड़ने की दिशा में काम करे,दिन भर वो उसी उधेड़ बन में लगा रहा था ..

रात में वो त्रिवेदी के साथ बैठा हुआ शराब पी रहा था …

“सर जी कोई मुखबिर कोई भी सूचना नही दे रहा है और एस. पी. साहब और ठाकुर रोज ही फोन करके पूछते है की आखिर क्या क्या काम कर लीया फुलवा को पकड़ने के लिए ,क्या करे सर जी ऐसे हाथ पर हाथ तो धरे बैठे नही रह सकते कुछ तो करना ही होगा …”

त्रिवेदी की बात से सुमित के माथे पर चिंता की सिलवटे पड़ गई

“हम्म्म्म…… त्रिवेदी जी समझ तो मुझे भी कुछ नही आ रहा है ,लेकिन अगर हमे फुलवा को पकड़ना है तो उसकी कहानी शुरू से जाननी होगी की आखिर फुलवा…. डकैत फुलवा कैसे बनी …”

सुमित की बात सुनकर त्रिवेदी के होठो में मुस्कान आ गई और उसने पूरा ग्लास एक ही बार में हलक के अंदर धकेल दिया ..

“अब की ना सर अपने सही बात ,मैं इसी इलाके में पैदा हुआ हु और मैंने फुलवा के बचपन को भी देखा है ,और उसके इस रूप को भी ,जमीदार साहब के फुलवा के परिवार पर किये हुए जुल्म को भी ,और फिर फुलवा के विद्रोह को भी… लेकिन आज तक किसी ने इसपर कोई भी दिलचस्पी नही दिखाई बस फुलवा को पकड़ने के अंधी दौड़ में लग गए,ऐसे भी यंहा उसे कोई पकड़ने में दिलचस्पी नही रखता सभी बस उसे मार कर ठाकुर से मुँहमाँगा इनाम पाना चाहते है …”

“लेकिन मुझे सब कुछ जानना है और पूरे डिटेल से जानना है ,फुलवा में मुझे खासी दिलचस्पी जाग गई है “

सुमित की बात सुनकर त्रिवेदी फिर से मुस्कुराया ..

“फुलवा पे या चंपा पे “

सुमित बुरी तरह से झेंप गया और त्रिवेदी खिलखिलाकर हँस पड़ा ..

“इसमें आपका कुसूर नही है साहब,कुसूर तो आपकी उम्र और चंपा की जवानी का है ,इस उम्र में अगर ऐसी जवान मदमस्त लड़की सामने हो तो कोई भी फिसल जाए या प्यार में पड़ जाए “

त्रिवेदी अब भी हल्के हल्के मुस्कुराते हुए मजे ले रहा था …

“वो सब छोड़िए त्रिवेदी जी आप मुझे वो बतलाइए जो की जरूरी है ,आखिर फुलवा डकैत कैसे बनी ..”

त्रिवेदी का चेहरा गंभीर होने लगा …. साहब अब गौर से सुनिए…में आपको सारी कहानी विस्तृत में बतलाता हूं…

त्रिवेदी सुमित को फुलवा का इतिहास बताने लगता है…

“बात तब की है जब मैं नया नया पोलिस में लगा था और पास ही के गांव में मेरी पोस्टिंग थी ,देखने को तो यंहा पर सभी कुछ ठीक था लेकिन असल में ऐसा नही था जमीदार का यंहा पर एकछत्र राज हुआ करता थेयंहा के निवासी भी इस बात को स्वीकार कर चुके थे की न्याय और कानून से ऊपर ठाकुर है और उसकी बात है.आसपास के 20-25 गांव का कानून था ,सभी कुछ अच्छा था जब तक बड़े ठाकुर यानी अमरीश सिंह के पिता का देहात ना हो गया. अमरीश सिंह के हाथो में ताकत आते ही उसने इसका गलत उपयोग करना शुरू कर दिया ,उसे बस दो ही नशे थे एक तो शराब का और दूसरा लड़की का ,और इसका शिकार गांव की कई औरते हुई ………….”

अमरीश सिंह का आतंक इतना था की लडकिया घर से निकलना ही छोड़ चुकी थी ,ना जाने किस मनहूस घड़ी में ठाकुर की नजर उसपर पड़ जाए और वो उसे उठा कर ले जाए ,किसी के पास इतनी हिम्मत भी तो नही थी की उसके खिलाफ कुछ कह सके …

अमरीश सिंह आतंक का दूसरा पर्याय बन चुका था ,जो भी उसके खिलाफ बोलता या कोशिश भी करता तो उसकी एक ही सजा होती थी उसकी और उसके घर वालो की मौत………..

आखिर कुछ गांव के सरपंच मिलकर पुलिस के पास जाने की सोचते है …

सुमित के आंखो के सामने से त्रिवेदी बाते ऐसे गुजरने लगती है जैसी कोई फिल्म चल रही हो….

पुलिस स्टेशन मे

“साहब, ठाकुर के लोग जब चाहे किसी के भी घर घुसकर लड़कियों को उठा लेते है ,हमारे घर की बहु बेटियों का जीना मुहाल कर रखा है ,गांव छोड़कर जाना चाहते है तो भी नही जा सकते ठाकुर के लोग फिर से गांव में लाकर पटक देतो है ,इनकी ही मजदूरी करते है और इनके ही गुलाम बन गए है ,साहब हमारी भी कुछ इज्जत है ,लकड़ियों को तालाब में ही नग्न कर देतो है ,वही पर ……”

एक बुजुर्ग बोलते बोलते ही फफक कर रो पड़ा …

टेबल में इंस्पेक्टर बैठा था वही सभी सरपंच हाथ जोड़े जमीन में बैठे थे ,पास ही त्रिवेदी खड़ा था जिसके माथे पर ये सब सुनकर पसीना आ चुका था ,इंस्पेक्टर अभी पान खाने के बाद अपने दांतो को लकड़ी से साफ कर रहा था ,

“हा.... तो इसमें क्या हो गया कोई नई बात थोड़ी है ,और तुम्हारी बहु बेटियों को कभी ना कभी तो ठूकवाना ही है ,लडकिया है तो कोई ना कोई तो ठोकेग.फिर ठाकुर साहब या उसके किसी आदमी ने ठोक लीया तो क्या फर्क पड़ गया …”

इंस्पेक्टर के इस बयान से वो सभी बस एक दूसरे के चेहरे को देखने लगे ….

तभी बाहर कार आने की आवज आई ,एक साथ ही कई कार आकर रुकते गए ..

इंस्पेक्टर हड़बड़ाया और तुरत ही अपने को सीधा किया और खड़ा हो गया ,इधर अमरीश ठाकुर रौब से आ रहा था ,उसे देखकर सभी खड़े हो गए और हाथ जोड़ लिए वही सभी के चेहरे पर पसीना भी था …

“क्यो बे मादरठोकों तुमलोग यंहा क्या कर रहे हो,इस मादरठोक से मेरी शिकायत करने आये हो ..”

उसने इंस्पेक्टर की तरफ उंगली की ,इंस्पेक्टर ने गाली सुनकर भी अपने दांत दिखाए ..

लेकिन अमरीश सिंह भड़का

“तुम सालो की बेटियां ,बहुये,हमारी रखैल है ये बात समझ लो जिसे जब चाहे तब उठाकर लाएंगे और रोक सको तो रोक लेना “

वो बुजुर्ग जो उस समय इंस्पेक्टर से बात कर रहा था वो फिर से ठाकुर की बात सुनकर फफक कर रो पड़ा ..

“ठाकुर साहब रहम ,हम आपकी बात पर सहमत है लेकिन हमारी लड़कियों के साथ यू मारपीट ना किया जाए ,जो आपको पसंद है वो आपके हवेली भेज देंगे इस तरह घर को उजाड़ा ना जाए बस यही विनती है …”

एक दूसरा सरपंच हाथ जोड़े बोला ..

ठाकुर कुछ देर सोचता रहा

“ह्म्म्म ठीक है लेकिन तुम्हारे गांव की हर लड़की को एक बार सबसे पहले मुझसे फिर मेरे सभी आदमियों से ठूकना होगाफिर अगर ठिक लगे तो उसे रखेंगे या भेज देंगे ,लेकिन हमारे बिना कोई लड़की जवान नही होगी ना ही कोई बहु यंहा हमारे हवेली में आये बिना अपने पति के घर जाएगी ...बोलो मंजूर ………”

मजबूरी की हद हो चुकी थी लेकिन फिर भी उसे सहने के अलावा उनके पास कोई चारा भी तो नही था ...सरपंचों ने एक साथ हा में सर हिलाया …

अमरीश सिंह के होठो में एक शैतानी हँसी नाच गई ….

इधर गांव में सरपंचों की बात आग की तरह फैल गई,पुरुष जमीदार के घर के नॉकर थे और महिलाये उनकी रखैल, ये ही उनकी नियति बन गई थी,

लेकिन इसे सभी तो स्वीकार नही कर सकते थे,बुराई जब अपने चरम में होती है तभी न्याय के लिए भी आवाज उठाई जाती है,विद्रोह के स्वर बुलंद होने लगे थे जिसमें सबसे ऊपर नाम था हरिया का…

सभी सरपंच जब सर गड़ाए बैठे थे तब हरिया दहाड़ रहा थे

"शर्म आती है मुझे तुम जैसे नपुंसको को अपना बुजुर्ग कहते हुए,उससे अच्छा अपनी बेटियों को मार ही डालो और साथ मे तुम लोग भी मर जाओ,यू नपुंसको की तरह जीने से तो कही अच्छा होगा कि तुम सभी मर जाओ,मुझे तुम्हारा फैसला स्वीकार नही है,तुम लोगो के हाथो में चूड़ियां होंगी लेकिन मैंने अपनी माँ का दूध पिया है और उसी दूध की कसम है मुझे किसी भी लड़की की ओर अगर ठाकुर या उसके आदमीयो ने छुआ भी तो उनके हाथ उखाड़ देंगे ,हम उनके खेतो में मजदूरी करते है उनके लिए फसल उगाते है,हमारी मेहनत से वो अमीर है और उसी पैसे के जोर पर हमारी ही इज्जत से खेल रहे है,कौन कौन मेरे साथ है हाथ उठाओ या नपुंसको की तरह अपनी जिंदगी चलाओ ,मेरे साथ आने पर तुम्हे अपना खून बहना पड़ेगा लेकिन मौत भी तुम्हारी शानदार होगी,"

हरिया के काले चेहरे पर पसीने की बरसात हो रही थी,पूरा तन भीग चुका था. उसके एक एक शब्द मानो शोलो की तरह धधक रहे थे,गांव के कुछ नवजवान अपना हाथ उठाते है और उठकर हरिया के साथ हो जाते है,वँहा बैठे हुए बुजुर्ग बस देखते ही रहते है कि कैसे उनके बच्चे अपने हाथों में टंगिया भाले पकड़ कर ठाकुर के पिस्तौल का सामना करने निकल पड़े है,

महिलाएं जिन्होंने इन्हें दूध पिलाया था वो अपने बच्चों की बहादुरी पर अपना सीना फुलाये बैठे उन्हें दुवा दे रही थी लेकिन दिल के किसी कोने में वो डरी हुई भी थी,लगभग पूरे 3-4 गांव के कुछ जवान लड़के आगे आये ,

"उनके हाथो में बंदूक है और तुम्हारे हाथो में कुल्हाड़ी "

वही बुजुर्ग जो पुलिस स्टेशन में रोया था आंखों में पानी लाकर हरिया को देख रहा था

“बापू अब नही.... बहुत डर लिए हम लोग अब और नही ,उस ठाकुर ने तो हैवानियत पर उतर आया है,मैं मर जाना पसंद करूंगा लेकिन अपनी बहन और बीवी को उसके सामने नही परोसूंगा….”

हरिया की आंखे लाल थी लेकिन उसकी बात से घर के अंदर से झांकती उसकी बहन और बीवी की आंखों में भी पानी आ गया और दिल में हरिया के लिए सम्मान और भी बढ़ गया …

सभी युवक जो भी हथियार मिला उसे इकठ्ठा कर अपने अपने घरों में चले गए थे,लगभग सभी नवजवान हरिया के बात से सहमत था लेकिन वँहा कितने ही बचे थे ,सभी तो ठाकुर के पास बंधुआ मजदूर थे ,कुछ थोड़े से युवक गांव में थे …

रात की शांति में घोड़ो की आवाज ने सभी के कान खड़े कर दिए ,ठाकुर के हवस मिटाने के लिए उसके आदमी लड़की लेने आ चुके थे,आते ही उन्होंने दो तीन गोली आसमान में चला दी ,वो अभी सरपंच के ही घर के सामने थे जो की हरिया का पिता था ,

“अबे सरपंच निकल बाहर ,ठाकुर के पास कोई भी लड़की अभी तक क्यों नही पहुची …”

गरजती हुई आवाज से पूरा गांव ही गूंज गया ,नवजवानों ने पहले ही घात लगा लीया था ,वो बस इसी इंतजार में थे की कब वो लोग आये और उनपर हमला किया जाए ,20 युवक अपने हथियार के साथ कोई 10 बन्दूकधारी गुंडों का मुकाबला करने को तैयार थे ,हरिया ने एक पेड़ के ऊपर से अपने साथी को संकेत किया और उसके साथी जहर में अपने तीर को डूबा कर सीधे उस हट्टे कट्टे गुंडे के ऊपर निशाना साधा लेकिन चलाया नही ,तब तक बाकी के तीरंदाज भी अपने अपने जगह पर तीर कमान संभाले खड़े हो चुके थे ,हरिया के एक इशारे पर वँहा तीरों की बारिश हो गई.चीखे गूंजने ही लगी थी की कुछ युवक कुल्हाड़ी और लोहे के सलीया लेकर गुंडों के ऊपर टूट पड़े.सभी इतने गुस्से में थे की उनके धड़ो से सर अलग कर भाले की नोक मे लगा दिया गया था ,उत्साह उन्माद में बदल गया था और अपनी पहली जीत पर उन्माद हो हरिया खून को अपने चेहरे पर मल रहा था ,,

सालो की दासता का अंत और आजादी की शुरुवात का जश्न मनाया जा रहा था ,घोड़े और बंदुखों को अपने पास रख लीया गया और एक घोड़े पर उसी गुंडे के सर को बांधकर ठाकुर के हवेली की ओर भेज दिया गया ……

पूरे गांव में मानो खुशी की लहर दौड़ गई थी ,लेकिन एक बूढ़ी आंख अभी भी चिंतित थी ,वो हरिया के पिता और गांव के सरपंच थे और हरिया के इस विद्रोह से उठने वाली कत्लेआम को सोच कर सिहर जा रहे थे.

हरिया की एक हरकत ने आग की ज्वाला भड़का दी थी ,रातों रात ये चर्चा आम हो चुकी थी कि किसी गांव के नवजवानों ने ठाकुर के लोगो को मार डाला ,और ना सिर्फ मारा बल्कि एक गला काट कर ठाकुर को भी भेज दिया.

इस हरकत से बाकी के सभी गांव के उन युवकों में जो की अभी ठाकुर की मजदूरी करते थे अब वो भी अपनी कायरता का अहसास करने लगे थे.

उन्हें भी लगने लगा था की वो अपने घर की औरतो की इज्जत को बचांने के लिए अपनी जान भी दे देंगे. ठाकुर के बंधवा मजदूरों ने रातों रात ही विद्रोह कर दिया.ठाकुर के कई लोग मारे गए वही ठाकुर ने भी अपना जोर लगाना शुरू कर दिया था.उसने पुलिस की मदद ली.पुलिस ने आकर मजदूरों पर गोलीयां चला दी.जिससे कुल्हाड़ी और तीर कमान रखे कई लोग मारे गए .खूनी खेल को वही दबा दिया गया और सरकारी तंत्र को पैसा और ख़ौफ़ के बल में ठाकुर ने खरीद लीया. इस जित से ठाकुर भी अहंकारी हो गया था.अब वो पुलिस की सहायता से हरिया और गांव वालो को सबक सिखाना चाहता था …….

“हरिया हमारी देखा देखी ठाकुर के पास रह रहे मजदूरों भाइयों ने भी ठाकुर के लोगो पर हमला कर दिया लेकिन सभी मारे गए ,ठाकुर के 20 लोगो को मार दिया था लेकिन ठाकुर ने पुलिस बुला दी और हमारे भाइयों को गोलियो से छल्ली कर दिया गया ,लगभग 50 मजदूर मारे गए ......कई घायल भी है ,एक ही रात में सब हो गया ,और आज इंस्पेक्टर और ठाकुर के लोग हमारे ऊपर टूटने वाले है ,हमारे एक फैसले से तबाही ही तबाही मचने वाली है ......”

हरिया अपने साथी की बात से गंभीर हो गया था ,अभी 3 घंटे ही हुए थे उसे ठाकुर के लोगो को मारे हुए रात अभी भी बाकी थी और उनके पास सिर्फ 10 बन्दूखे थी ,वही ठाकुर के पास पूरी फ़ौज थी ,अब कत्लेआम होना स्वाभाविक था ,साथ ही उसे अपने परिवार का भी डर था ,गांव की और भी लड़कियों को भी डर था ,लेकिन वो अपने फैसले से मुकर भी तो नही सकता था ,ना ही डरने का समय था ,अब तो उसे मासूम जिंदगियों को लूटने से बचाना था ....

वो उठा

“इससे पहले की वो हमपर हमला करे हमे उनपर कर देना चाहिए ,उन्हें मौका ही नही देना है संभालने का ...”

हरिया ने अपने दोस्तो को तुरंत ही इकठ्ठा किया जिनकी संख्या अब और भी बढ़ गई थी ,वो 20 से 50 हो चुके थे आसपास के गांव के लोग भी उनके साथ हो चुके थे ,वो कुछ को गांव में छोड़कर अपने बाकी साथियों के साथ निकल गया ,उसका अगला मुकाम था पुलिस स्टेशन ...

इंस्पेक्टर ने पहले ही पास की बटालियान से सिपाही बुला लीया थे ...

“हरिया आज तो खून की होली खेलने वाले है ये लोग,देखो पुलिस के कितने लोग है.सभी तैयारी कर रहे है साथ ही ठाकुर के भी आदमी है ,सभी हमारे गाँव की ओर जाने वाले है ...”

हरिया के साथी की बात से सभी थोड़े डर गए थे ,लेकिन हरिया के चेहरे में शिकन तक नही थी ,उन जैसे पुलिस के लोगो में से एक को पहचान कर अपने दोस्तो से कहा ,

“ये तो त्रिवेदी भैया है ना ...पास के गांव वाले ,इन्हें कैसे भी करके मेरे पास लाओ “

“हरिया वो भी अब पुलिस वाला है “

“तो क्या हुआ ! है तो हमारे ही बीच के.हमारी बात को समझ पाएंगे ,आखिर इनकी भी तो बहु बेटी,मा होगी जिनकी इन्हें फिक्र हो “

थोड़े देर में ही एक कंकड़ से त्रिवेदी का ध्यान आकर्षित किया गया और जैसे ही त्रिवेदी ने गांव के लोगो को देखा वो किसी बहाने से झड़ियो के पास आ गया.

‘‘भइया गांव वालो की जिंदगी आपके हाथो में है ‘‘

त्रिवेदी हरिया को बेहद ही गुस्से से घूर रहा था

‘‘ये सब कुछ तुम्हारे कारण हो रहा है और मैं क्या कर सकता हु मैं एक छोटा सा सिपाही हु ‘‘

‘‘आप ही सोचो की अगर आपके बहन पर ये बात आती तो आप क्या करते ,भैया साथ दीजिये आप बहुत कुछ कर सकते हो ‘‘

त्रिवेदी सोच में पड़ गया था

‘‘मुझे बस इंस्पेक्टर तक पहुचाइए,ये इंस्पेक्टर ही है जो की ठाकुर का कुत्ता है अगर वो ही खत्म हो जाए तो पुलिस भले ही हमे ढूंढेगी लेकिन यंहा तुरंत ही बड़े अधिकारी जरूर आ जाएंगे और ठाकुर कुछ भी नही कर पायेगा ,’’

त्रिवेदी जैसे आग बबूला हो गया

‘‘सालो तुम अपने को समझते क्या हो ,बड़े अधिकारी को क्या ठाकुर नही खरीद सकता गांव के गांव तुम्हारे कारण खत्म कर दिए जाएंगे ‘‘

‘‘हा लेकिन अगर उन्हें पता हो की मैं कहा हु तो वो मुझे ढूंढेंगे ना की गांव वालो को परेशान करेंगे ,और अगर साथ में अखबार वाले भी हो जाए तो सब कुछ ठिक हो जाएगा ‘‘

त्रिवेदी सोच में पड़ गया था

‘‘अगर आज रात तक इन्हें गांव में जाने से रोक लीया जाए तो एक आदमी है जो की हमारी मदद कर सकता है ..’’

त्रिवेदी को जैसे कुछ याद आ गया था

‘‘एक सनकी लेकिन काम का आदमी हे !मैं उसे शहर में मिला था वो तुम्हरी मदद जरूर कर सकता है ,वो अगर आ जाए हमारे साथ तो पुलिस गांव में जाकर तबाही नही करेगी लेकिन हा तुम्हे जरूर यंहा से कही दूर भागना पड़ेगा ‘‘

सभी मिलकर एक प्लान बनाते है

“हजूर इतनी रात को ठाकुर का काम हद हो गई …”त्रिवेदी इंस्पेक्टर के पास आकर कहता है

“क्या करे इस साली नॉकरी को भी तो बचाना है ,पैसा तो यही देता है…चलो गांव में धावा बोलने की तैयारी करो आज तो मजा आ जाएगा ,गांव की हर औरत को नग्न करूंगा वो भी अपने हाथो से “

इंस्पेक्टर की हैवानियत भरी हँसी सुनकर त्रिवेदी को ऐसा लगा की अभी उसे जान से मार दे लेकिन फिर भी उसने खुद को काबू में कर लीया था……..

“हजूर ...वो सब तो ठिक है लेकिन गांव के लोग भड़क गए तो हमारी खैर नही”

त्रिवेदी की बात सुनकर इंस्पेक्टर को जोरो से हँसी आयी

“वो साले गवार हमारा क्या कर लेंगे ,हमारे पास ताकत है और ठाकुर के आदमी भी तो हमारे साथ है “

त्रिवेदी जबरदस्ती हंसा

“वो तो है ,क्यो ना जाने से पहले थोड़ा सा जश्न मना लीया जाय ,साले गांव वाले रातों रात गांव छोड़कर जाने के फिराक में थे हमने पकड़ लीया ,एक मस्त लौंडिया हाथ आ गई है “

त्रिवेदी की बात सुनकर इंस्पेक्टर की आंखों में चमक आ गई

“कहा है “

“खास हुजूर के लिए छिपा के थाने के पीछे झड़ियो में रखी है ,अगर इन लोगो के हाथो में आ गई तो सोच लो क्या हाल होगा “

इंस्पेक्टर ने त्रिवेदी की तारीफ की और एक शराब की बोलत से दो घुट पीकर सीधे ही झड़ियो की तरफ सब से नजर बचा कर चल दिया ,...

“उह उह “इंस्पेक्टर कुछ बोलना चाहता था लेकिन उसके मुह से कुछ भी नही निकल पा रहा था ,हरिया ने उसके मुह को जोरो से दबोच लीया था ..

‘खचाक ‘

चाकू की नोक इंस्पेक्टर के पेट में घुसी और पूरी अंतड़ियों के साथ बाहर आ गई ,साथ ही एक जोर का वार उसके गले में किया गया और लहू की धार का एक फुहारा सा फुट गया …

इंस्पेक्टर तड़फता हुआ जमीन में गिर पड़ा …….

घोड़ो के आवाज से सबका ध्यान उस ओर गया ..

"वो देखो साले भाग रहे है"

त्रिवेदी ने जोरो की आवाज लगा दी ,ठाकुर के आदमी के साथ साथ पुलिस वाले भी उस ओर देखने लगे ,

"ये साले है कौन और यंहा क्या कर रहे है …"

एक हाफते हुए पुलिस वाले ने पूछा ..

त्रिवेदी अपने चेहरे की मुस्कान को बड़ी ही मुश्किल से रोक पाया था ..

"क्या पता ऐसे इंस्पेक्टर साहब कहा है …"त्रिवेदी ने जोरो से कहा.सभी लोग इंस्पेक्टर को ढूंढ़ने लगे कुछ ही देर में उसकी लाश भी मिल गई ,त्रिवेदी ने जल्दी से हेडक्वार्टर को फोन लगा दिया ,इससे पहले कोई कुछ समझ पता त्रिवेदी फिर से चिल्लाया

"सालो तुम लोग कर क्या रहे हो पीछा करो उसका "

हरिया अपने घोड़े में बहुत दूर निकल चुका था.घने जंगल ठाकुर के आदमि हरिया के पिछा कर रहे थे.अब बस पुलिस वाले पीछे बच गए थे .इंस्पेक्टर की इस तरह से मौत की खबर से थाने में हड़कंप मचा दिया था और एस. पी. खुद हाल जानने के लिए निकल पड़ा था ,ठाकुर भी ये सुनकर चिंतित हो गया था क्योकि उसे गाँव को तबाह करना था और उसके सारे आदमी किसी अनजान व्यक्ति के पीछे भाग रहे थे ……

घने जंगलों में ठाकुर के आदमी हरिया का पीछा करते हुए खो से गए थे. दूर दूर तक कही भी उसका कोई निशान नही दिख रहा था .बस घोड़ो की आवाज आ रही थी.बड़े बड़े पेड़ और अंधेरे में वो जैसे रास्ता ही भटक गए हो .अब घोड़े कि गती धीरे हो चुकी थी और आदमी वापस जाने की सोच रहे थे. लेकिन उन्हें नही पता था की वो एक जाल में फंस चुके है जिसे हरिया और त्रिवेदी ने मिलकर बनाया है …

अचानक एक रस्सी से लटकता हुआ पत्थर का गोला आया और सीधे एक घुड़सवार के सर को चकनाचूर कर दिया …

वो चीख भी नही पाया था की उसका शरीर धड़ाम से गिर गया …

सभी लोग पलटे और उसकी ये दशा देख कर ठाकुर के आदमी अंधाधुन गोलीयां चलाने लगे …कुछ देर में ही वँहा शांति थी …

“मुझे तो लगता है की कोई हमे फंसा रहा है “

एक आदमी धीरे से दूसरे से बोला कि अचानक ही कई तीर आकर सीधे लोगो के सरो के आरपार होने लगे ,बस तीरों की आवाजे आ रही थी जो की बेहद वेग से और पास से चलाई जा रही थी ,घने जंगल के सन्नाटे को चीख जैसे चिर रहे थे ……

फिर से गोलीयां चलाई गई लेकिन सब बेकार ……

बचे हुए लोग अपने घोड़े से उतर कर जमीन में आ गए थे ख़ौफ़ से उनका जिस्म और मन कांप रहा था ,

“कौन है कौन है …”

एक हट्टा कट्टा आदमी जो कभी ठाकुर के संरक्षण में गरजता था आज किसी चूहे की तरह बोल रहा था ,

हरिया गरजा

“तेरा और ठाकुर का काल हु मैं मादरठोक …”

‘धाय ‘उसने पहली बार गोली चलाई और सीधे उसका सर उड़ा दिया फिर से तीर चलने लगे और बाकी के लोग भी कीड़े मकोड़े की तरह उस जाल में मर गए …………

सभी बन्दूखे और घोड़े उठा ली गई ,अब हरिया के पास अच्छे खासे हथियार थे और घोड़े भी ,लेकिन उसका सबसे बड़ा हथियार था जो की आज ही उसे पता चला था वो था ये जंगल …

जंगली होने का जो फायदा उसे आज मिला था उसे वो अच्छे से समझता था जंगल के अंदर उसे हराना किसी के लिए भी बहुत मुश्किल होने वाला था क्योकि वो सभी इस जंगल में ही बड़े हुए थे ,अब वक्त था ठाकुर की सत्ता को गिरने का लेकिन उससे पहले हरिया को अपने परिवार को भी बचाना था

भाग

त्रिवेदी की बात सुनकर सुमित जैसे नींद से जागा …वो अभी शराब के नशे में था लेकिन इतना भी नही की उसे कुछ समझ ना आ रहा हो वही त्रिवेदी नशे में कुछ ऐसा कह गया था जो उसे नही कहना चाहिए था …

“तो त्रिवेदी जी अापने हरिया की मदद की जो बाद में सब के सर का दर्द बना था.... ,हरिया डकैत ......फुलवा का गुरु हरिया ????”

त्रिवेदी को अपनी गलती का अहसास तो हुआ लेकिन फिर भी बोले हुए शब्द तो वापस नही लिए जाते …

“हा साहेब लेकिन आप ही सोचो की उस समय मैं कर भी क्या सकता था. वो इंस्पेक्टर भी कमीना था और ठाकुर तो है ही कमीना. अगर हरिया ने हथियार नही उठा लीया होता तो वो गांव की सभी औरतो को धंधे वाली बना देता …”

त्रिवेदी की बात से सुमित के दिल में ठाकुर के लिए एक बहुत ही तेज नफरत का भाव जागा लेकिन उसे पता था की उसकी ड्यूटी क्या है और अब उसे ये भी पता चल गया था की डाकुओं को पुलिस की तरफ से मदद करने वाला कौन है …

“हम्म तो त्रिवेदी जी अापने जो किया सही ही किया. शायद आपकी जगह मैं होता तो मैं भी यही करता ….”

सुमित ने एक घुट अंदर किया ..वो त्रिवेदी से सच उगलवाना चाहता था और सच तभी बाहर आता जब त्रिवेदी को लगता की उसकी बात का सुमित पर सही असर हो रहा है …

“तो त्रिवेदी जी वो शख्स कौन था जिसने गांववालो की पुलिस से बचने में मदद की और क्या इसके बाद भी ठाकुर ने गांव में दहशत फैलाने की कोशिश की ?“

त्रिवेदी एक गहरी सांस लेता है और पास रखे बोतल से एक जाम बना कर अपने हलक के अंदर करता है …

“ह्म्म्म साहब वो शख्स तो उसी दिन आ गया ,एस. पी. साहब और ठाकुर भी पधारे. ठाकुर ने अपना वेश्या रोना रोया और कुछ पैसे एस. पी. की झोली में डाल दिए ,लेकिन डॉक्टर बॅनर्जी जी तब तक पधार चुके थे …”

“डॉक्टर बॅनर्जी ?????? वो जो की आजकल प्रेस खोलकर बैठे है ”

सुमित की आंखे बड़ी हो गई थी …

“हा वही पहले तो युवा दल के नेता हुआ करते थे ,मेडिकल की पढ़ाई हो चुकी थी लेकिन फिर भी छात्र संघ में बड़ा दबदबा था ,मैं उन्हें पहले ही मिल चुका था ,उन्हें एक फोन करने की देरी थी की वो खुद भी पधार गए और साथ ही अखबार के लोगो को भी ले आये.

एस. पी. चाहते हुए भी कुछ नही कर पाए लेकिन फिर भी कई गांव वालो से पूछताछ की गई और जो सामने आया वो सब अखबारों की हेडलाइन बन गई.ठाकुर के सारे कारनामो का भांडा फुट गया.ठाकुर जैसे गांव के लोगो को भूल ही गया था. क्योकि केंद्र से भी उसके ऊपर प्रेशर आने लगा था.वो खुद को बचाने में ही लगा रहा.लेकिन फिर भी उसकी दहशत कम नही हो रही थी. आखिर पुलिस भी तो उसकी ही थी ,लेकिन फिर भी वो चुप ही थे”

सुमित त्रिवेदी की बातो को ध्यान से सुन रहा था ,की दिन की पहली किरण ने खिड़की से दस्तक दी …….

दोनो के सर भारी हो रहे थे और आंखे बंद होने लगी थी……

दोपहर जब सुमित उठा तो त्रिवेदी जी जा चुका था.सुमित के मन में रात की सब बाते गूंज गई थी …

आखिर हरिया और फुलवा का संबंध क्या है ???

वो इसी सोच में डूबा हुआ तैयार हुआ और पुलिस स्टेशन चला गया .त्रिवेदी थाने में नजर नही आ रहा था... …

“त्रिवेदी जी कहा है ..??”

सुमित ने एक दूसरे कांस्टेबल से पूछा

“क्या पता सर ....कह के गए है की,'अगर सर आये तो उन्हें बोल देना की चंपा ने याद किया है !घर आयी थी लेकिन सोए थे …”

जैसे सुमित के लिए इस थाने में दो ही केस थे एक ही चंपा और दूसरी फुलवा ,,लेकिन वो बेचारा तो अब खुल कर प्यार भी नही कर सकता था क्योकि उसे ये भी नही पता था की आखिर चंपा कौन है और फुलवा कौन है ……….

वो वही झरने के किनारे पहुचा ,दोपहर का समय था और बहुत ही गहरी शांति वँहा फैली हुई थी ..

वँहा उस समय कोई भी नही था. वो जाने को पलटा ही था की उसे चिरपरिचित झम झम की आवाज आनी शुरू हो गई.उसके चेहरे में एक मुस्कान खिल गई ,वही जंगल के लिवास में आयी हुई वो परी उसके सामने थी.सुमित के मन की हर शंका जाने कहा भाग चुकी थी.वो जो भी हो लेकिन सुमित उससे बस प्यार करना चाहता था.उसके नशीले आंखों की मस्तियो में खो जाना चाहता था.उसके उन्नत वक्षो को चखना चाहता था.उसके भरे हुए होठो के मदमस्त प्यालों से झलकती हुई शराब को पीना चाहता था .उसके रेशमी लहराते हुए केशुओ में उलझना चाहता था .उसके कमर के नीचे और जांघो के बीच की छोटी सी सुराही को........ यह सब सोच कर सुमित के तन मन में एक आग दौड़ गई.वो मन ही मन सोचने लगा

‘भाड मे गया केस..... वो कोई भी हो ?मुझे क्या ....दोनो ही तो मुझे कितना प्यार देती है. और दोनो का ही प्यार तो मुझे सच्चा लगता है क्यो ना मैं दोनो के साथ हो लू ,और साथ रहकर ही जानने की कोशिश करू की वो कौन है …’

सुमित की वासना उसपर हावी थी ??? नही सिर्फ वासना नही बल्कि वो प्यार जो उसे इन लड़कियों से मिला था.जो उसे जमाने में कही नही मिल पाया था.वो सिर्फ जिस्म का सुख

नही था जिस्म के ऊपर भी मन के ऊपर भी वो रूह तक की संतुष्टि उसे मिली थी वो इसे यू ही नही खोना चाहता था सिर्फ इसलिए की उसे नही पता की वो कौन थी …

वो उसे प्यार भरी निगाहों से आते हुए देखता रहा ..

वो मचलते हुए उसके पास आ रही थी उसके कमर की हर लचक में सुमित का दिल भी मचल जाता था.वो पास आई इतना की दोनो की सांसे ही टकराने लगी और

चटाक …....

एक जोरदार तमाचा सुमित के गालो में पड़ा ,चंपा के आंखों में आंसू थे ..

सुमित चंपा के इस कारनामे से हड़बड़ा ही गया था …

“क्या क्या हुआ तुम्हे “

“क्या हुआ पूछते हो शर्म नही आती तुम्हे मेरी बहन के साथ ...छि ..वो भी उस नागिन के साथ जिसे पकड़ने तुम आये हो... मैने रात में ही तुम्हे उसके साथ देखा था ,तुम और वो छि …”

सुमित का दिल जोरो से धड़कने लगा ..

वो झल्ला गया था

“क्या कह रही हो ..... मैने जानबुझकर कुछ नहीं किया ! और वैसे भी मुझे कैसे पता चलेगा की कौन फुलवा है और कौन चंपा ....? तुम दोनो ही तो एक जैसी दिखती हो.... क्या इसमें भी मेरा दोष है ..”

सुमित जोरो से बोला था जिससे चंपा दहाड़ मार कर रोने लगी ..

“वो कुतिया कभी नही चाहती की हमारा मिलन हो इसलिए उसने कल गोली चलवाई थी मुझे तो पहले ही शक था लेकिन तुम्हे उसके साथ देखकर ….”

“अरे पगली तो तुमने उसी समय क्यो नही बतलाया “

“कैसे बताती तुम्हे उसके साथ देखकर मेरा तो खून ही जल गया था ,”

चंपा ने इतनी मासूमियत से कहा की सुमित का दिल उसके लिए पिघल गया और वो उसे अपने आगोश में खिंच लीया

“कुछ कहने की जरूरत ही नही तुम्हे ...मे सोच रहा हु की तुम्हे एक ऐसी चीज दे दु जो सिर्फ तुम्हारे पास रहे “

सुमित की बात से चंपा के चेहरे में शर्म के भाव गहरा गए ,और वो दबी हुई हँसी में हँसने लगी

“ऐसे क्यो शर्मा रही हो “

सुमित को भी थोड़ा आश्चर्य हुआ की आखिर उसने ऐसा क्या कह दिया था ,

“क्यो ना शरमाऊं तुम बात ही ऐसा कर रहे हो ,”सुमित फिर से चकरा गया

“और अभी मैं मां नही बनूंगी वो सब शादी के बाद “

ओह तो ये पगली ये चीज सोच कर बैठ गई थी ,सुमित को चंपा की बात और सोच पर हँसी आयी लेकिन साथ ही साथ बहुत सारा प्यार भी आया ,उसने चंपा को और भी जोरो से जकड़ लीया

“अरे पगली मैं बच्चे की बात नही कर रहा कोई ऐसी चीज जो तुम मुझे बोलो तो मुझे पता लग जाए की वो तुम हो कोई और नही “

चंपा का चेहरा जैसे मुरझा गया जिसे सुमित समझ भी गया

“तो मेरी रानी को बच्चा चाहिए “

चंपा ने हाथों से उसे मारा

“हर लड़की चाहती है की वो मां बने खासकर जिसे मा बाप का प्यार नसीब नही हुआ हो ,...”उसकी आंखों में आंसू आ गए थे

“ओह मेरी जान ...मैं तुम्हे दुनिया की हर खुशी दूंगा बस पहले वो तुम्हारी बहन मेरे हाथ लग जाए ,बहुत सर दर्द कर रखा है उसने “

“हा जब उसे चूम रहे थे तब तो सर दर्द नही दे रहा था तुम्हारा “

चंपा का मुह फिर से फूल गया था ,सुमित को उसपर हँसी आ गई और उसने उसके होठो पर अपने होठो को रख दिया जिसे धीरे धीरे करके ही सही लेकिन चंपा भी चूमने लगी थी …

“जान 4577 “

“ये क्या है ..”

“जब तुम ये बोलोगी तो मैं समझ जाऊंगा की ये तुम ही हो फुलवा नही “

चंपा के चेहरे में मुस्कान आ गई और उसने सुमित के सर को जोरो से पकड़ कर उसे अपनी ओर खिंच लीया.दोनो के होठो मिल गए थे जो की बहुत देर तक मिले ही रहे.चंपा के जिस्म के एक मात्रा कपड़े को सुमित उतारने लगा था.देखते ही देखते दोनो के जिस्म नंगे हो चुके थे और दोपहर के समय भी दोनो नंगे जिस्म दुनिया की परवाह किये बिना ही झील में उतर गए थे……….

सांसे तेज हो रही थी और जिस्म की तड़फन बढ़ने लगी थी …

सुमित ने चंपा के गले में चुम लीया.चंपा के शरीर में जैसे कोई करेंट दौड़ गया था ,वो सुमित को और भी जोरो से जकड़ने लगी थी ….

चंपा के कमर के नीचे की गोल गोल नितंबो में हाथ फेरते हुए उसके कोमलता के अहसास से सुमित की आंखे बंद हो रही थी.वही हाल चंपा का भी था.

वो भी मदहोश सी हो रही थी,आंखे तो दोनों की ही बंद थी और सांसे तेज .धडकनों की शहनाईयां भी तेजी से बज रही थी.चंपा को भी सुमित के औजार का अहसास हो रहा था जो उसके उन्नत कुलहो पर हलके हलके चोट कर रहा था.इस घिसाई का मजा लेते हुए दोनों ही भूल गए थे की वो झील में गले तक चले आये है .दोनों ही जिस्म नंगे थे और पानी के ठंडक में भी गर्म हो रहे थे .दोनों के ही पाँव गहराई की और जा रहे थे.पानी उन्हें सर तक डुबो गया था लेकिन हाय रे उस मोहोब्बत का नशा की किसी को होश भी नही था.दोनों के होठ एक दूजे से मिल चुके थे और एक दूजे की जीभ को लपेटते हुए वो मुह की गहराई में जा रहे थे.सांसे बंद होने लगी तो वो एक दूजे के मुह से साँस लेने लगे थे.चंपा पलती और सुमित के सीने में दबती चली गई.एक दुसरे को उन्होंने मजबूती से जकड़ रखा था .पानी के अंदर होने से साँस लेने में दिक्कत आने लगी थी लेकिन कोई भी दुसरे को छोड़ने को तैयार नही था .और सुमित ने अपने औजार को चंपा के योनी में धसाना शुरू किया और चंपा का मुह खुल गया झील का ताजा पानी उसके मुह में भर चूका था जिसे उसने अगले ही पल सुमित के मुह में धकेल दिया था.

दोनों ही थोड़े बहार आये ताकि साँस ले सके.जिस्म एक दुसरे में गड़े जा रहे थे .कमर हलके हलके ही चल रही थी लेकिन स्वर्ग का सुख दे रही थी .औजार और योनी का घर्षण अभी भी पानी के अंदर ही हो रहा था.सुमित ने चंपा के कुलहो को दबोच रखा था वही चंपा भी अपने हाथो से सुमित के कुलहो को अपनी ओर और भी ज्यादा सटा रही थी.

जब कमर ने रफ़्तार पकड़ी तो सुमित चंपा को गोद में उठा कर किनारे में ले आया और रेत में लिटा कर उसके उपर छा गया…

“आह…. बाबू…..ओह….. ओह “

चंपा के मुह से सिस्कारिया निकलने लगी थी.सुमित भी उसके गालो को अपने दांतों से खा रहा था उसके वक्षो को अपने मुह में भरे जा रहा था और अपने कमर की गति को तेज और तेज किये जा रहा था.दोनों के जिस्म भीगे हुए थे लेकिन फिर भी जिस्म की घर्षण से उत्पन्न पसीने से भी भीगे जा रहे थे …

होठो से लार बह कर एक दुसरे के जिस्म को और भी चिपचिपा कर रहे थे.सांसे जैसे अटकने को थी और दिल की धड़कने मानो रुकने को हो गई थी.

दोनों ही अपने चरम पर आ चुके थे और बस थकणे वाले थे.

“मुझे भीगा दो.... मेरे बाबू..... ..!अन्दर तक भीगा दो.... मे आपकी गुलाम बन कर जीना चाहती हु”

चंपा अपने चरम में पहुच कर सुमित से आग्रह करने लगी जिससे सुमित के जिस्म ने भी अपना बांध तोड़ दिया और तेज धारा के साथ चंपा की योनी में बहता चला गया

…………….

सुमित और चंपा किसी मनोहर सपने में खोए से झरने के किनारे गीले रेत में लेटे हुए थे.एक दूसरे के जिस्म को सहला रहे थे मानो दुनिया में बस यही एक चीज है जो उनके लिये हो..

दोपहर का समय था और धूप की तेजी अब बदन को जलाने लगी थी.सुमित चंपा को उठाकर एक पेड़ के नीचे ले आया.सुमित चंपा की गोद में लेटा हुआ था और चंपा उसके बालो को सहला रही थी ….दोनो ही किसी दुनिया में खोए हुए थे की सुमित बोल पड़ा ..

"चंपा आखिर ऐसा क्या हुआ था फुलवा एक डकैत बन गई और तुम यंहा आ गई "

उसकी बात सुनकर चंपा थोड़े देर के लिए चुप हो गई …

और सुमित के बालो में उंगलीयां फसाये सहलाती रही.सुमित के गालो में उसके आंखों का पानी आ टपका .सुमित उठ खड़ा हुआ और चंपा के गालो को दोनो हाथो से पकड़ लीया और उसके गालो में अपने होठ लगा कर उसके आंखों से झरते हुए खारे पानी को अपने होठो से अंदर कर लीया …

"मेरी जान अगर तुम्हे इस बारे में बात नही करना है तो मैं तुमसे कुछ भी नही पूछूंगा "

सुमित ने गंभीरता से कहा जिससे चंपा के होठो में भी एक मुस्कान आ गई और वो उससे लिपट गई ..

"क्या बताऊँ यही तो समझ नही आता.ठाकुर की ज्यादतियों के बारे में बतलाऊ या फिर फुलवा के जिस्म की भूख के बारे में.या मेरे पिता के बदले के बारे में या मेरी माँ की फूटी हुई किस्मत के बारे में...... क्या क्या बतलाऊ तुम्हे कुछ समझ नही आता ……"

इतना कह कर चंपा तो चुप हो गई लेकिन सुमित को जैसे एक बहुत ही बड़ा शॉक लग गया...ये चंपा क्या कह रही थी ..

वो चंपा की आंखों में झांकने लगा

"मुझे सब कुछ ही जानना है ….."

इस बार चंपा सुमित के गोद में लेट गई और सुमित उसके बालो को सहलाने लगा ..

चंपा ने बोलना शुरू किया...

चंपा की जुबान बोलणे लगी....

ठाकुर के आतंक की सीमा बढ़ने लगी थी वो हमारे गांव और आसपास के गांव की बहु बेटियों को अपने हवस का शिकार बनाने पर तुला हुआ था ,पुलिस भी उसके साथ थी वो ज्यादती पर उतर आया था तभी मेरे पिता ने ठाकुर के खिलाफ हथियार उठा लीया ..

मेरे पिता गांव के सरपंच के बेटे थे और बहुत ही बहादुर और गुस्सेल थे. उनका नाम था हरिया जो की बाद में हरिया डकैत के नाम से प्रसिद्ध हुए …

वो जब गांव छोड़कर जंगलों में गए तब उनकी नई नई शादी हुई थी.मेरी माँ देखने में बहुत ही सुंदर थी. पिता जी उससे बहुत प्यार करते थे .लेकिन ठाकुर से विरोध करने पर उन्हें गांव छोड़कर जंगल में जाकर रहना पड़ा था.वो वही से ठाकुर के खिलाफ साजिश रचा करते थे.उन्होंने ठाकुर को फंसा दिया था उनका साथ कांस्टेबल त्रिवेदी और डॉक्टर बॅनर्जी दे रहे थे……

चंपा को भूतकाल की घटनाएं याद आने लगती है....

हरिया के विद्रोह से ठाकुर की मानो रीढ़ ही टूट गई थी.जो लोग उसके वफादार थे हरिया उन्हें ढूंढ ढूंढ कर मारता था.ठाकुर बौखला गया था और हरिया के परिवार पर हमला करना चाहता था लेकिन हरिया को मानो पहले से पता था की वो उसके परिवार को निशाना बनाएगा इसलिए उसने अपने परिवार को अपने पास बुला लीया था. जंगल की भागादौड़ी और भयानक माहौल में वो अपने परिवार को नही रख सकता था.खासकर उसकी फूल सी पत्नी और बहन को... दोनो जवान लडकिया...जिसे हरिया सबसे ज्यादा प्यार करता था. लेकिन ये ही उसकी सबसे बड़ी कमजोरी भी थे.इनके इज्जत की रक्षा करना उसके लिए सबसे बड़ी चुनौती भी थी.वो उन्हें एक आदिवासी काबिले के सरदार के पास रख कर अपना काम किया करता था.........

ठाकुर ने कई नए लोगो को अपने साथ शामिल करना शुरू कर दिया ताकि वो हरिया का मुकाबला कर सके और उसमे सबसे खास था संग्राम ..

संग्राम बहुत ही सुलझा हुआ व्यक्ति था जो की ताकत में किसी से कम नही था ,वो ठाकुर के एक दोस्त के पास काम किया करता था वो शादीशुदा था और उसका एक बेटा भी था जिसका नाम बलवीर था (जो बाद में फुलवा के गिरोह में जा मिला) संग्राम के पास ताकत के साथ साथ दिमाग भी तेज था इसलिए ठाकुर उसे पसंद करने लगा था ,संग्राम की सूझ

बुझ ने ठाकुर को कारोबार में बहुत फायदा पहुचाया था लेकिन उसकी असली परेशानी थी हरिया ……

“ठाकुर साहब मेरी बात मानो तो हरिया के बारे में सोचना छोड़कर आप उसके बीवी और बहन को ढूंढो “

संग्राम ठाकुर के लिए जाम बना रहा था ,

“लेकिन कैसे….? साले ने…. ना जाने कहा उन्हें छिपा कर रखा है मिलती ही नही “

“तो कोई मुखबिर हरिया के गिरोह में क्यो नही भेज देतो आप ऐसे लोगो की कमी तो नही जो पैसे के लिए अपने गांव से दगा करेंगे “

ठाकुर ने एक नजर संग्राम की ओर देखा

“तुम्हे क्या लगता है की मैं गांव वालो को तकलीफ देता हु “

संग्राम जोरो से हँस पड़ा

“मैं स्वामिभक्त हु ठाकुर साहब जो बोलोगे करूंगा चाहे वो सही हो या गलत .लेकिन मुझे पता है की हरिया क्यो डकैत बना है.आप किसी डकैत से नही लड़ रहे हो आप अपने अहंकार से पैदा हुए हैवान के कारण मिले श्राप से लड़ रहे हो …”

संग्राम की बात सुनकर ठाकुर कुछ देर के लिये बस उसे देखता रहा. लेकिन कुछ भी ना कह सका क्योकि वो जानता था की संग्राम सही कह रहा है.और साथ ही ये भी जानता था की उससे ज्यादा खुलकर कहने वाला और सही सलाह देने वाला साहसी आदमी उसे नही मिलेगा ….

संग्राम की सलाह मानकर ठाकुर ने एक आदमी ढूंढ ही लीया और हरिया के गिरोह में उसे शामिल भी करवा दिया ..

और वही हुआ जो की ठाकुर चाहता था हरिया की कमजोरी का पता ठाकुर को चल गया था ………..

अमरीश सिंह की हवेली का दृश्य....

“हम कहा है तुम लोग कौन हो ,और हमारे कपड़े ...ये किसने बदले ”

डरे हुए आवाज में लतिमा(हरिया की बहन) कह रही थी..

पास ही बैठी झाबु (हरिया की बीवी) भी डरी हुई थी लेकिन उसे सब कुछ समझ आ रहा था की आखिर उनके साथ क्या हुआ है ,वो एक बड़े से कमरे में थे जंहा बीचों बीच फूलों से भरा हुआ बड़ा सा बिस्तर थेपास ही सेविका के रूप में खड़ी हुए कुछ 5 लडकिया थी ,

लतिमा और झाबु दोनो के ही आदिवासी महिलाओं के कपड़े निकाल दिए गए थे.उन्हें नई महंगी और रेशमि पारदर्शी साड़ी पहनाई गई थी. लेकिन वो भी बस साड़ी ही थी उसके अलावा और कुछ भी नही ..

उस साड़ी में भी उनका यौवन पूरे का पूरा दिख रहा था.वो दोनो ही काम की देवियां लग रही थी लेकिन डरी हुई ,भविष्य के खतरे का आभास उन्हें हो गया था. वो सहमी हुई थी लेकिन उन सेविकाओं को देख कर उन्हें लगा की ये भी उनकी ही तरह जबरदस्ती यंहा लायी गई होंगी …

“आप ठाकुर साहब की हवेली में है.कल रात ही आप लोगो को यंहा लाया गया था.ठाकुर साहब ने कहा है की अाप दोनो हमारी मेहमान है और दोनो की खूब जतन की जाए ..”

एक बहुत ही सुंदर सी लड़की ने बड़े ही प्यारे शब्दो में कहा.उसकी नजर नीची थी मानो वो उनकी ही दासी हो.ठाकुर उनके साथ ऐसा व्यवहार करेगा ये तो दोनो ने ही नही सोचा था.उन्हें तो लगा था की अगर ठाकुर के हाथो में आ गए तो फिर जिस्म को नोच कर खा दिया जाएगा…

लेकिन ठाकुर जिस्म को नोचने ही वाला था. भले ही इस तरह ही क्यो ना हो ….

“आप लोग कुछ लेंगे “

फिर से उसी लड़की ने कहा

“हमे अपने घर जाना है “

लतिमा बोल उठी ,सभी के सर पहले से ज्यादा झुक गए.लेकिन किसी ने कुछ भी नही कहा ..

झाबु ने लतिमा को समझाया की वो मुसीबत में फंस चुके है और अभी उन्हें सम्हल कर कदम उठाना पड़ेगा ताकि यंहा से निकल जाए. और अब तक ये बात हरिया को पता चल गई होगी वो हमे बचा लेगा ……

दोनो को ही हरिया की उम्मीद थी लेकिन ना जाने आगे क्या होने वाला था …..

“मालकिन आप दोनो नहा लीजिए ठाकुर जी आते ही होंगे”

उस लड़की की बात सुन कर दोनो ही दंग रह गए.

“हम तुम्हारी मालकिन नही है “झाबु ने जोरो से कहा

“हमे आपको मालकिन कहने और गुलाम की तरह रहने का ही हुक्म मिला है ,आप कृपया नहा ले वरना ठाकुर साहब हमारे ऊपर गुस्सा होगें”

ठाकुर ये क्या कर रहा था ,क्या करना चाह रहा था ?झाबु समझने की कोशिश कर रही थी. लेकिन गरीबी में रही लतिमा को ये वैभव बहुत ही भा रहा था .उसकी ललचाई नजर झाबु से बच नही सकी .

“ये तुम्हारे भाई के बैरी का घर है .ये सभी सुख हमारे लिए मिट्टी जैसे है “

झाबु ने लतिमा को झटकते हुए कहा ,वो भी हड़बड़ाई.

“लेकिन भाभी सुख तो है ना …”लतिमा के सपाट बोल से झाबु भी असमंजस में पड़ गई .ना ही पिता ने ना ही पति ने सुख के नाम पर दिया ही क्या था उसे .जीवन एक काटे की तरह ही बिता था ..ऐसा नही था की झाबु हरिया से प्रेम नही करती थी.लेकिन फिर भी ना ही वो उसके साथ ज्यादा वक्त बिता पाई थी ना ही.सांसारिक जरूरतों को ही वो पूरा कर पाया था.लेकिन वो हरिया का बेहद सम्मान करती थी. उसकी ही इज्जत की रक्षा के लिए हरिया ने हथियार उठाया अपने परिवार और जान की भी नही सोची …

“तेरे भइया ने हमारी इज्जत की रक्षा के लिए अपने जान की भी नही सोची …”झाबु के मन में चल रही बात उसने कह ही डाली …

“लेकिन ठाकुर तो अब भी हमारी इज्जत उतरेगा ना ...भाभी मैं नही कहती की भइया गलत है. लेकिन सोचो क्या सचमे वो हमे बचा पाएंगे?और क्या ठाकुर हमे ऐसे ही जाने देगा.तो क्यो ना हम इन सुखों का ही मजा ले ले जब तक हम यंहा है ...क्योकि फिर तो जीवन में हमे ये कभी देखने भी नही मिलेगा “

लतिमा की बात से झाबु के आंखों में आंसू छलक गए थे .लतिमा का गला भी बैठ गया था लेकिन वो खुद को संभालते हुए बोली.

‘‘भाभी मैं अपना बलात्कार करवाना नही चाहती.हा अगर कुछ होगा तो मैं भी उसका मजा लुंगी ‘‘

इतना ही कहकर लतिमा स्नानगहृ की ओर चली गई और झाबु अब भी अपने आंखों में आंसू लिए हुए अपनी ननद की बातो को सोचती रही .सच में उनकी किस्मत ही थी की ठाकुर उनसे ऐसे पेश आ रहा था. वरना वो उन्हें किसी वेश्या से ज्यादा अहमियत नही देता .वो भी बस जिस्म की भूख मिटाने के लिए ……

हरिया अपने माता पिता के लाश के सामने घुटने के बल बैठा था ,

‘‘हरिया सोमनाथ का कही भी पता नही लगा ‘‘

एक आदमी हफते के उसतक पहुचा

‘‘सरदार वो अपने ईमान का सौदा करके भाग गया है ,उसके घर में भी बीवी और बहन है .उन्हें उठा कर लाता हु साले से उसके करनी का बदला लेंगे ‘‘एक दूसरा आदमी गरजा

‘‘मैं किसी का सरदार नही हु. मैं हरिया हु तुम्हारा हरिया ,और सोमनाथ की बहन मेरी भी बहन है.वो मेरे गांव की बेटी है .उसकी बीवी मेरे गांव की बहु है और मेरी भी बहु है .किसी ने उनको छूने की कोशिश भी की तो मैं उसके हाथो को काट दूंगा

हरिया गरजा और सभी चुप हो गए

‘‘सोमनाथ ने जो किया है उसकी सजा उसे मिलेगी ,और ठाकुर ने जो किया है उसकी भी उसे सजा जरूर मिलेगी …’’

‘‘लेकिन हरिया पहले हमे भाभी और लतिमा को बचाने की सोचना चाहिए.न जाने वो उनके साथ कैसा सलूक करेगा ‘‘

हरिया ने एक गहरी सांस ली ,और कुछ सोचने लगा ,

‘‘आज ही धावा बोलेंगे उसके हवेली में ‘‘हरिया बोल उठा

‘‘लेकिन हरिया वँहा जाना अपने हाथो से अपनी जान को दाव पर लगाना है.तुम तो जानते हो ठाकुर की हवेली.. हवेली नही किला है .कोई नही बच पायेगा ‘‘

हरिया फिर से सोच में पड़ गया क्योकि बात तो सही ही थी

‘‘तो सिर्फ मैं जाऊंगा …’’

‘‘तुम पागल हो गए हो क्या वँहा तुम अकेले ...तुम्हारी जान हम सबके लिए बहुत ही जरूरी है.हरिया सिर्फ तुम्हरी बहन और बीवी नही इतने लोगो के घर की बहु बेटियां आज तुम्हारे ही कारण सलामत है …’’

‘‘अगर मैं ना रहा तो तुम इस गिरोह को संभालोगे, ये गिरोह टूटना नही चाहिए बिस्वास ,‘‘

उसने बिस्वास के कंधे पर हाथ रख.बिस्वास रो ही पड़ा था ,हरिया अपने जिद पर अडिग था और ये बात सभी को पता थी ……

‘गब्बर मैं तेरा खून पी जाऊंगा ‘

“वाह मेरे धमर्द्रें ,भाभी मस्त फ़िल्म है ना सोले…धमर्द्रें देखो ना क्या दिखता है ”

लतिमा टीवी स्क्रीन को देखकर तालीया बजा रही थी.झाबु को उसकी ये हरकते बिल्कुल भी पसंद नही आ रही थी ,लेकिन क्या करे वो भी बार बार फ़िल्म की ओर आकर्षित हो जाती थी.लेकिन फिर नजर बचा कर धर्मराज ठाकुर(अमरीश ठाकुर का छोटा भाई) की ओर देखती और डर जाती ,जो सोफे में बैठे हुए लतिमा की हरकतों का मजा ले रहा था .धर्मराज लगातार लतिमा को ही घूरे जा रहा था जैसे झाबु का कोई अस्तित्व ही नही हो .वो दोनो किसी रानियों की तरह सजाई गई थी और एक बड़े से कमरे में बड़े से सोफे पर बैठी थी.जंहा सामने एक साफ पर्दा लगा हुआ था जिसमे अभी सोले चल रही थी ये धर्मराज का ही कमरा था .धर्मराज ने जब लतिमा को पहली बार देखा तब ही उसका लतिमा पर दिल आ गया था.धर्मराज अमरीश से थोड़ा अलग था.जंहा अमरीश को फूलों को निचोड़ने में मजा आता था वही धर्मराज को फूलों की धीमी सुगंध में .वो भी लतिमा का धीरे धीरे मजा लेना चाहता था.झाबु को अमरीश ने पसंद किया था लेकिन धर्मराज के कहने पर ही अमरीश उससे अभी तक दूर था .क्योकि वो भी धर्मराज की तरह पहले उसे अपने बस में करना चाहता था लेकिन अमरीश को कहा आती थी प्यार की भाषा .लेकिन वो अपने भाई की जिद और झाबु के मादक यौवन के कारण रुक गया था.वो इस फूल की निचोड़ना नही चाहता था .बल्कि इसका इत्र बना कर हमेशा के लिए अपने पास रखने की चाह में था …

धर्मराज ने ही लतिमा को लुभाने के लिए उसे हर सुविधा दिलाई जिसके बारे में वो सपने में नही सोच सकती थी. और इसका असर भी उसके ऊपर हो रहा था.लतिमा को सभी चीजों से मोह हो गया था .जैसे वो अपने भाई और उसकी कुर्बानी को भूल ही गई थी …

“हमारे छोटे ठाकुर भी धमर्द्रें से कम है क्या ..”

धर्मराज के पैरो के पास बैठा मुंसी जो उसका पैर दबा रहा था बोल पड़ा और अचानक ही लतिमा का ध्यान उसे घूर रहे धर्मराज की ओर गया.मानो लतिमा को कई वाल्ट का झटका लगा हो .सच में नवजवान और गठीले बदन के मालिक धर्मराज को देखकर वो शर्म से ढेर हो गई और उठकर जाने को हुई धर्मराज आगे बढ़कर उसका हाथ पकड़कर उसे अपनी गोद में बिठा लीया …

धर्मराज उसके गालो को हल्के हाथो से सहलाने गया.लतिमा के जिस्म में एक करेंट दौड़ गया …

“अरे रानी तुम्हारे लिए ही तो ये सारे जतन किये है और तुम ...तुम हो की हमसे दूर जा रही हो”

लतिमा का गला सुख चुका था. वो लाज के मारे सर गड़ाए जा रही थी आज पहली बार किसी मर्द ने उसे इस तरह से छुवा था.अभी अभी तो वो जवान हुई थी धर्मराज के शरीर से गुलाब की हल्की हल्की लेकिन मोहक खुश्बू आ रही थी जो की गांव के मर्दों के शरीर से नही आया करती मेहनतकस लोगो के शरीर से पसीने की खुश्बू आती है जो की लतिमा को बदबू लगती थी.

धर्मराज उसकी साड़ी के ऊपर से ही उसके लतिमा के जिस्म को हल्के हाथो से मसल रहा था लतिमा उसके आगोश में मचल रही थी थोड़ी ना नुकुर करती लेकिन फिर भी मानो वो पिघल रही हो.झाबु बस दोनो को देखे जा रही थी. फिर अपना ध्यान टीवी में लगा देती लेकिन जो उसके सामने चल रहा था वो ज्यादा आकर्षण पैदा करने वाला था ने मुंसी को वँहा से भगा दिया.लेकिन झाबु को वही बैठे रहने का हुक्म दिया झाबु के मन में भी ना चाहते हुए भी एक अजीब सा भाव उमड़ कर आ रहा था .लतिमा की तो आंखे ही बंद हो गई थी.

कोई अगर देखता तो कहता की दो प्रेमी एक दूसरे के आऔजारन में है .ना की किसी दुश्मन की बहन से बदले वाली बात है लतिमा और झाबु दोनो ही भुल गए थे की वो अपने दुश्मन के घर उसकी बांहो का मजा ले रही है ...

धर्मराज बड़े ही धीरे धीरे आगे बढ़ रहा था.लतिमा का थोड़ा मोड़ा विरोध भी कम हो चुका था.झाबु ना चाहते हुए भी बार बार तिरछी आंखे से उन्हें देख ही लेती.लतिमा के चेहरे का भाव बता रहा था की वो कितने आनंद में है और यही झाबु की पीड़ा थी.अगर धर्मराज लतिमा का बलात्कार करता तो शायद वो कभी इतनी उत्तेजित नही होती लेकिन धर्मराज ने जो किया था वो उसे और भी ज्यादा तोड़ रहा था शरीर से भी और मन से भी.वो हरिया को जान से ज्यादा चाहती थी लेकिन आज जीवन में पहली बार उसके मन में हरिया के अलावा किसी दूसरे की मूरत घर कर रही थी.वो धर्मराज के गठीले जिस्म से मोहित हो रही थी.वो अपने को रोकती कभी कभी खुद को धिक्कारती लेकिन फिर भी लतिमा की हल्की सिसकियां जो अभी बिना कुछ किये भी फुट पड़ती थी.झाबु के मन में इस सुख के भोग की लालच को जगा रहा था ..

झाबु इतने मानसिक उधेड़बुन से गुजर रही थी की उसकी आंखे भर गई थी. वो वँहा से उठकर जाने को हुई लेकिन धर्मराज ने उसका दौड़कर उसका हाथ पकड़ लीया.वो खड़ी हुई थी और धर्मराज उसे अपने से सटा लीया

झाबु की जैसे सांसे ही रुक गई .आंखों में अब भी पानी था लेकिन आंखे बंद हो चुकी थी.धर्मराज ने अपने ऊपर के कपड़े को निकाल फेका था.उसका गठीला जवान बदन और

उसके बदन की खुश्बू दोनो ने झाबु को उत्तेजित कर रहे थे.झाबु की पीठ धर्मराज के बालो से भरी छाती में जा सटी.

‘‘आह ह ह ‘‘

झाबु के मुह से निकल गया.धर्मराज पुराना खिलाड़ी था.झाबु की आह से उसके होठो में एक अजीब सी मुस्कान खिल गई .इन दोनो बालाओं का बलात्कार करके भी वो ये सुख नही पा सकता था जो अब उसे उनके साथ खेलकर मिल रहा था.हरिया से असली बदला लीया जा रहा था लेकिन अलग रूप से ....

धर्मराज ने झाबु को अपने पास बिठा लिया.अब झाबु और लतिमा दोनो उसके दोनो ओर बैठे थे.वो जानता था की लतिमा तो उसके गिरफ्त में पहले से है लेकिन झाबु को और तोडना होगा .वो अपना ध्यान अब झाबु पर लगाने लगा.उसके साड़ी के पल्लू को गिरा दिया और अपने जीभ को उसके गर्दन पर लगा दिया..

‘‘आह... न न न ही ही’’

झाबु की आंखे बंद थी और वो बड़ी मुश्किल से बोल पाई.उसके फुले हुए उरोज का ऊपरी भाग उसके कसे ब्लाउज से बाहर झकने लगा था .धर्मराज ने ललचाई निगाह से उसकी गोरी चमकदार चमड़ी को देखा.झाबु और लतिमा दोनो ही गांव की रसदार और भरी हुई लडकिया थी.धर्मराज ने अपनी जीभ से झाबु के खुले हुए उरोज को चाट लीया.

‘‘नही ...ओह नही आह ‘‘वो मछली जैसे छटपटाई और जल्दी से उठकर बाहर की ओर भागने लगी.उसकी इस हरकत से धर्मराज जोरो से हंसा लेकिन उस रोकने की कोशिश नही की ....

झाबु के जाते ही लतिमा धर्मराज के छाती को खुद ही चूमने लगी.धर्मराज हँसता हुआ सोफे में इत्मीनान से लेट गया

‘‘तेरी भाभी पर अभी प्यार का भूत चढ़ा है. फिक्र मत कर एक दिन वो भी तेरी तरह अपने जिस्म को मेरे सामने रख देगी ...और तुम दोनो को हम दोनो भाई अपनी कुतिया बना कर रखेंगे ...हा हा हा ‘‘

धर्मराज की बात से लतिमा थोड़ी रुकी लेकिन धर्मराज ने उसके सर को पकड़ कर अपने सीने से लगा लिया.

‘‘चाट मेरी रानी ‘‘लतिमा फिर से उसके सीने के बालो पर अपने जीभ फेरने लगी जैसे धर्मराज की बात का उसपर कोई प्रभाव ही नही पड़ा हो ....

हरिया अपने बीवी और बहन की फिक्र में किसी भी खतरे से लड़ जाने को तैयार था .वो अकेला हि उन्हें ठाकुर के किले से छुड़ाने को निकल पड़ा…….

हरिया दूर से ही उस हवेली को ध्यान से देख रहा था और साथ ही अंदर जाने की तरकीब ढूंढ रहा था .पूरी हवेली मानो कोई किला हो.चारो तरफ पहरेदार ही पहरेदार थे.बंदूक धारियों से पूरी हवेली ही घिरी हुई थी.हरिया हवेली के पिछले भाग में गया.वँहा सुरक्षा कम थी लेकिन फिर भी बड़े से दीवाल के पर पहुच पाना भी मुश्किल था.हरिया ने अपने साथ एक रस्सी लाई थी.वो गुना भाग कर एक नतीजे में पहुचा की वो रस्सी से दीवाल को पर करेगा फिर हवेली के बगीचे से छिपता हुआ मुख्य घर तक जाएगा.वो रस्सी को सही जगह डालने में सफल रहा और उसके सहारे ऊपर चढ़ नीचे कूद गया.उसका दिल जोरो से धड़क रहा था लेकिन अभी डरने का समय भी तो नही था.

वो फिर से रस्सी को उस बड़े से बगीचे में एक जगह छुपा दिया.और मुख्य हवेली की ओर बढ़ने लगा.लोग रात के सन्नाटे में एक दूसरे से बात करते हुए या ऊंघते हुए पहरा दे रहे थे.उसने ध्यान दिया की नॉकर आ जा रहे है और पहरेदार थोड़ा भी ध्यान उनपर नही दे रहे है.उसने जोखीम लेने की सोची और अपने बंदूक को वही रख चाकू को अपने कपड़े में छिपा कर अपने को थोड़ा संवारा ताकि वो गांव का ही आम आदमी लगे ,और जल्दी से जाकर एक आलू के बोरे को उठा लीया ,वो दूसरे दरवाजे से अंदर जाना चाहता था

‘‘ये क्या ले जा रहा है’’

एक कड़कदार आवाज उसके कानो में पड़ी ,उसे लगा जैसे उसका दिल ही बाहर आ जाएगा …

‘‘वो आलू है ,रसोई में पहुचा रहा था ‘‘

वो अपने को संभालते हुए बोला

‘‘अबे मादरठोक अभी तुम्हे ये सब काम सूझ रहा है दिन भर क्या कर रहे थे,चल जा ‘‘

एक पहरेदार तम्बाखू मलते हुए बोल.हरिया पीछे के दरवाजे से रसोई तक चला गया.बड़ी सी रसोई थी लेकिन ठाकुर के परिवार के रहने का कमरा ऊपर था.ये नौकरो की जगह थी.हरिया ने रात का फायदा उठाया और आहिस्ते से एक पाइप के सहारे ऊपर पहली

मंजिल तक आ गया.बड़े बड़े दरवाजो और खिड़कियों से सुशोभित आसियान था. हरिया को समझ ही नही आ रहा था की इतने कमरों में आखिर रहता कौन होगा और जंहा उसे जाना है वो कमरा कौन सा होगा.या ठाकुर ने उन्हें हवेली के अलावा कही और रखा है.पहली मंजिल से नीचे का नजारा साफ साफ दिख रहा था.जंहा कई पहलवान हाथो में बड़ी बड़ी बंदूक लिए टहल रहे थे.सामने से जाना अब भी खतरनाक था.वो फिर से पीछे का रुख किया.उसने पीछे की ओर से खिड़कियों में झकने की सोची लेकिन नीचे गिरने का और किसी के देख लेने का डर उसे सता रहा था.वो बेहद परेशान था की उसे किसी के पायलों की आवाज सुनाई दी.देखा तो एक सजी सवारी लड़की माथे में लाल सिंदूर लगाए और लगभग पूरे दुहलन के लिबास में झम झम करती उसी ओर आ रही थी.वो छुपने को भागा इतने बड़े घर में उसे समझ ही नही आ रहा था की जाए तो कहा जाए.उसे सीढ़िया दिखाई दी और वो उसी में चढ़ता गया.वो हवेली के छत पर था तीन मंजिलों की हवेली बाहर और अंदर से विशालकाय थी और पूरे ओर से दूर दूर तक खेतो से घिरी हुई थी.थोड़ी दूर उसे जंगल भी दिखाई दे रहा था.छत पूरी तरह से शांत थी ,वो वँहा से नीचे देख पा रहा था.साथ ही उस हवेली की सही संरचना भी उसे तभी समझ आयी.

असलं में वो हवेली वर्गाकार थी.जंहा वो खड़ा था वो एक छोर था .वर्ग की चारो भुजाओं की तरह कमरे बने हुए थे और बीच में बड़ा सा बरामदा था जो की बाहर से नही दिखता था.वो एक छोर में खड़े हुए दूसरे छोर के कमरों को देख पा रहा था ,जो कमरे खुले हुए वो अपने वैभव की कहानी खुद ही कह रहे थे

‘साला इतने बड़े घर में रहते कितने लोग होंगे,’उसके दिमाग में अनायास ही आ गया ,तभी उसे फिर से झम झम की आवाज सुनाई दी जिस आवाज से भागकर वो यंहा आया था.फिर से उसे सुनकर वो डर गया लेकिन फिर उसे याद आया की वो एक अकेली औरत है और हरिया के पास उसे डराने को एक चाकू भी तो है.वो सतर्क होकर अंधेरे में एक कोने में जा छिपा ..

वो लड़की आयी और छत की एक छोर में जाकर बैठ गई,वो सामने कुछ देख रही थी फिर उसने अपने हाथो से कुछ निकाला और अपने मुह में लगा लीया.हरिया ने पहली बार किसी औरत कोई सिगरेट पीते हुए देखा था.उसने ठाकुर को ही ऐसा करते हुए देखा था बाकी गांव के लोग तो बस बीड़ी में ही खुश थे .वो गहरे कस लगाए जा रही थी जैसे किसी गंभीर से ख़यालो में हो ...थोड़ी ही देर हुए थे की उसकी नजर अंधेरे में छिपे हुए हरिया पर पड़ गई ……

‘‘कौन है कौन है वँहा ‘‘

हरिया को लगा की जैसे बचने का कोई भी चारा नही है

‘‘मालकीन हम.... हम रामू है’’

‘‘कौन रामू और यंहा क्या कर रहे हो पता है ना की यंहा नौकरो को आने की अनुमति नही है ‘‘

‘‘माफ कीजिए मालकिन ‘‘

‘‘चलो जाओ यंहा से ‘‘

हरिया चुप चाप उठा और वँहा से जाने लगा लेकिन किस्मत को तो कुछ और ही मंजूर था ,छत में बिछे पानी के एक पाइप में हरिया का पैर फंसा और वो गिर गया साथ ही उसके कपड़े में रखा चाकू उसके कपड़े से निकल कर सीधे उस लड़की के पैरो में गिर गया.लड़की उस चाकू को तो कभी हरिया को देखती.इतना बड़ा चाकू देख उसे किसी अनहोनी की आशंका जागी वो चिल्लाने को ही हुई थी की हरिया ने फुर्ती दिखाई और जाकर उसे दबोच लीया.उसके मुह को जोरो से बंद कर दिया और पैरो से ही चाकू को उठाकर उसकी गर्दन पर टिका दिया..अब फंस चुका था तो डरना कैसा …

‘‘थोड़ी भी आवाज की तो सीधे गला रेत दूंगा ‘‘

हरिया ने कड़क आवाज में उसके कानो में कहा.लड़की सिहर गई और शांत हो गई.हरिया ने धीरे से उसके मुह से हाथ हटाया ..

‘‘कौन हो तुम और क्या चाहते हो ‘‘

लड़की ने डरे हुए आवाज में पूछा

‘‘मै...क्या करोगी जानकर ..चलो पूछ ही लीया है तो बता दु मेरा नाम हरिया है…’’

लड़की जितना पहले डर रही थी हरिया का नाम सुनकर मानो उसका डर ही खत्म हो गया ..

“हरिय...वही हरिया जिसने इतने सालो बाद ठाकुर को उसकी औकात दिखाई.और जिससे बदला लेने के लिए वो उसकी बहन और बीवी को उठा लाया है.वही गरीबो का मसीहा “

लड़की उसके गिरफ्त से छूट गई थी लेकिन फिर भी हरिया से दूर नही भाग रही थी ना ही उससे डर रही थी बल्कि उसकी बातो में अपने लिए तारीफ सुन हरिया भी हैरान रह गया ..

“तुम तुम कौन हो …”

लड़की ने एक फीकी सी हँसी हँसी ..

“एक अभागन और ठाकुर के जुल्म का एक शिकार ...लेकिन अब लोग मुझे इस हवेली की ठकुराइन बुलाते है...मैं अमरीश ठाकुर की नई पत्नी हु …”

हरिया को याद आया अमरीश ने कुछ महीने पहले ही अपनी पहली बीवी के मरने के बाद अपने से आधी उम्र की लड़की से शादी की थी.

“तुम तो इस हवेली की ठकुराइन हो फिर तुम्हे कैसा दुख “

हरिया ने व्यंग मारा ,लड़की का मुह दुख से भर गया

“ठाकुर ने मेरे पिता के गले में तलवार रखकर मेरा बलात्कार किया था.उसे मैं ज्यादा पसंद आ गई तो वो मुझे हवेली ले आया और अपनी बीवी के मरने के बाद मुझे अपनी बीवी बना लीया.उसके लिए मैं बस हवस मिटाने का एक खिलौना ही हु उससे ज्यादा कुछ भी नही ..दुनिया को शायद लगता होगा की मैं इतने बड़े घर की मालकिन हु .जमीदार की बीवी लेकिन असलियात तो मैं ही जानती ह.मेरी पिता जी ने मुझे फूलों की तरह पाला थेअच्छे संस्कार दिए थे ,पढ़ाया लिखाय.कालेज तक की पढ़ाई कर मैं नॉकरी कर रही थी ,लेकिन अमरीश की नजर मुझपर पड़ गई ,मैं पड़ी लिखी हु शहर की रहने वाली हु शायद इसलिए इसने मुझे अपनी पत्नी का दर्जा दे दिया वरना शायद मैं भी उसकी रखैल बन कर रह जाती …”

लड़की के आंखों से आंसू की बूंदे टपकने लगी ,हरिया कहता भी तो क्या कहता उसे अपने परिवार के दो सदस्यों की चिंता और भी जोरो से सताने लगी …

“मेरी बीवी और बहन कहा है “

लड़की के होठो में एक मुस्कान आ गई

“हर लड़की उनकी तरह खुशकिस्मत नही होती ,मैं तो सुख छोड़ कर इस नरक में आयी थी लेकिन तुम्हारी बहन को तो इसी नरक में मजा आने लगा है ,वो भी बेचारी क्या करे उसने इतने बुरे दिन देखे है ,गरीबी देखी है शायद इन सब सुखों के सामने जिस्म का सौदा उसे छोटा ही लग रहा होगा …”

हरिया उसकी बातो से चौक गया था ,उसके चेहरे का भाव देखकर लड़की ने उसका हाथ पकड़ लीया ,चलो तुम्हे दिखती हु,वो उसे अपने साथ नीचे ले जाने लगती है और एक खिड़की के सामने अंधेरे में खड़ी हो जाती है ,हरिया उसके पीछे से अंदर का नजारा देख कर ही दंग हो जाता है,बड़े से पर्दे पर फ़िल्म चल रही थी …

लतिमा तालीया बजा रही थी और झाबु उसके साथ बैठी हुई थी,दोनो लडकिया किसी रानी की तरह सजाई गई थी जैसे इस वक्त मौजूद अमरीश ठाकुर की पत्नी थी ,लतिमा तो चेहरे से ही बहुत खुश दिख रही थी वही झाबु के चेहरे में अलग अलग भाव आ जा रहा था ,हरिया के रगों में खून जोरो से दौड़ाने लग.उसे समझ ही नही आ रहा था की वो क्या प्रतिक्रिया करे ,वो बस खिड़की से अंदर झांक रहा था……

हरिया देख रहा था की उसकी बहन किसी जिस्म बेचने वाली सस्ती वेश्या जैसे हरकत कर रही है,उसके आंखों में आंसू आ गए ,वो भले ही एक डकैत बन गया हो लेकिन था तो वो गांव का एक सीधा साधा इंसान ही जो अपने परिवार से बेपनाह मोहोबत करता था.उसकी आंखों में आया हुआ आंसू झलक कर उसकी आंखों को छोड़कर नीचे गिरा कुछ बून्द जाकर ठकुराइन जिसका नाम कुसुम था के कंधे में गिर गया.कुसुम उसके सामने ही खड़ी थी ,वो अपना चेहरा उठाकर हरिया को देखने लगी वो समझ सकती थी की आखिर हरिया के अंदर क्या चल रहा होगाजिस परिवार को हरिया ने खत्म करने की सौगंध खाई थी ,उसी परिवार के सदस्य के सामने उसकी ही सगी बहन ऐसे व्यवहार कर रही है ,हवेली में मिल रहे सुख ने उसे झोपड़ी में सीखी हुई मर्यादाओं को भुला दिया था.कुसुम अपना हाथ आगे बड़ा कर हरिया के गालो पर रख दी ,ना जाने को हरिया उसे बेहद ही आकर्षित कर रहा था

,कमरे के अंदर हरिया के परिवार की इज्जत लतिमा धर्मराज के प्रति आकर्षित हो रही थी तो वही बाहर अंधेरे में खिड़की के पास खड़े धर्मराज के परिवार की इज्जत कुसुम ...हरिया के प्रति आकर्षित हो रही थी...जंहा लतिमा को धर्मराज के शरीर से उठाने वाला इत्र का गंध मदहोश कर रहा था वही कुसुम को हरिया के शरीर से उठाने वाली पसीने की खुश्बू मदहोश किये जा रही थी.

वो जानबूझकर हरिया से और भी सट गई,अमरीश से शादी के बाद कभी भी उसे प्यार तो मिला नही लेकिन साथ ही उसे शरीर का सुख भी अमरीश नही दे पाया.जिस्म को नोंचना और शारीरिक सुख दो अलग चीजे होती है,अमरीश के शरीर में अब इतना दम था भी नही की वो किसी नई नई जवान हुई लड़की के जिस्म की भूख को मिटा सके .कुसुम के लिए वो भूख कोई मायने नही रखती थी लेकिन फिर भी हरिया के मर्दानगी की खबरे वो कई दिनों से सुनती आ रही थी.उसे मन ही मन हरिया से एक अजीब सा प्रेम भी हो गया था जिसके बारे में वो खुद भी नही जानती थी.असल में उसे हरिया में वो शख्स दिख रहा था जो उसके ऊपर हुए अत्याचार का बदला अमरीश से ले सकता था.और अवचेतन में छिपा यही आदर या प्रेम या कहे की आकर्षण आज बाहर आ रहा था..

हरिया को भी अब ये महसूस हो रहा था की कुसुम कुछ ज्यादा ही उससे सट रही है.लेकिन हरिया के मन में कोई भी गलत विचार उसके लिए नही उठ रहे थे..

लेकिन जब झाबु को धर्मराज ने खिंचा और अपने से सटा लीया और जब झाबु की भी आंखे मजे में बंद हो गई हरिया टूट गया और वँहा से जाने को हुआ .कुसुम ने तुरंत ही उसका हाथ पकड़ कर अपने पास खिंच लीया और अपने से सटा लीया…

कुसुम का सर हरिया के छाती में लग गया था और कुसुम की भारी उरोज हरिया के विशाल चौड़े सीने से.पूरी तरह से काला हरिया और दूध सी गोरी कुसुम एक दूसरे से चिपके हुए अमावस और पूर्णिमा की रात का मिलन लग रहे थे.कुसुम की सांसे तेज हो रही थी वही हरिया उसकी इस हरकत से घबरा गया था.

‘‘जब वो तुम्हारे घर की इज्जत से खेल रहे है तो तुम क्यो पीछे हो ,तुम उनकी इज्जत की धज्जियां उड़ा दो ‘‘

कुसुम ने अपने हाथो को हरिया के सीने के बालो पर फेरा .हरिया का दिमाग शून्य में चला गया था उसे कुछ भी समझ आना बंद हो चुका था. उसने फिर से अंदर देखा.धर्मराज उसकी बीवी को उत्तेजित करने में कामयाब हो गया था .हरिया को जोरो का गुस्सा आया और वो कुसुम को जोरो से अपने बांहो में दबोच लीया ..

''आह ''

कुसुम को लगा जैसे वो किसी असली मर्द की बांहो में आ गई हो.ऐसी गिरफ्त और वो पसीने से भीगा हरिया का बदन और उसकी मजबूत मांसपेशियां कुसुम के योनि से रिसाव करने को काफी थी.कुसुम की कमर हरिया के कमर पर रगड़ खाने लगी ये कैसे हो रहा था ये तो कुसुम को भी समझ नही आ रहा था लेकिन वो अपने कमर को जैसे हरिया के कमर से जितना हो सके उतना चिपकाना चाहती थी.हरिया भी उनके पिछवाड़े में उठे हुए पर्वत जैसे नितंबो को पकड़कर अपने कमर से और भी जोरो से दबा देता है…

कुसुम की दबी ही सिसकी निकली.हरिया की आंखे लाल थी वो गुस्से से बौखलाया था झाबु अभी भी धर्मराज की बांहो में मदहोश सी पड़ी थी.

हरिया ने कुसुम की साड़ी को उठा लीया.कुसुम की साड़ी कमर तक उठ चुकी थी हरिया ने अपने पंजे से कुसुम के दोनो जांघो के बीच को दबोच लिया.

''आह नही ''

कुसुम उत्तेजना के मारे जैसे मर रही थी वो अपना सर हरिया के कंधे पर गड़ा गई,वो जोरो से सिसकियां ले रही थी.हरिया ने अपने धोती से अपने औजार को निकाला और सीधे ही कुसुम के जांघो के बीच दे मारा.लेकिन वो भूल गया था की शहर की लडकिया नीचे कुछ कपड़ा भी पहनती है.उसका औजार कुसुम की पेंटी के ऊपर से ही कुसुम के योनि में प्रहार कर गया.कुसुम तो पूरी तरह से टूट गई वो जोरो से चिल्लाना चाहती थी.उसे लगा जैसे किसी ने लोहे का सलिया उसके योनि में मार दिया हो.अपनी आवाज को दबाने के लिए उसने अपना खुला हुआ मुह हरिया के कंधे में गड़ा दिया और दांतो को उसके मांस पर गड़ा दिया.हरिया कोई जब समझ आया की एक और कपड़ा कुसुम के योनि में है वो हाथो को ले जाकर उसे थोडा साइड हटा कर फिर से अपने लोहे के सरिए जैसे औजार को उसकी योनि में टिकाया जो अभी पूरी तरह के गीली हो चुकी थी और उसे एक ही झटके में कुसुम के अंदर उतार दिया.हरिया का झटका इतना तेज था की दर्द और आश्चर्य के मारे उसके मुह से आवाज तक ना निकली ...हरिया ने तुरंत ही उसके मुह को अपने हाथो से दबा दिया ताकि उसकी चीख उसके हाथो में ही घुट जाए.कुसुम की आंखों में आंसू थे.और कमरे के

अंदर झाबु ने अपने को धर्मराज से छुड़ा लिया था और अपने आंसुओ को पोछती हुई भागी थी .

ये दोनो ही आंसू हरिया के लिये उसकी गलती का अहसास दिलाने वाले साबित हुए. वो तुरंत ही कुसुम से अलग हो गया.कुसुम ने अंदर देखा और समझ गई की हरिया उससे अलग क्यो हो गया.लेकिन उसके होठो में मुस्कान थी उसने अपना कपड़ा थोड़ा ठीक कीया और हरियाके कानो के पास अपने होठो को लाकर कहा...

"सच में तुम असली मर्द हो ,कितना बड़ा और कठोर है तुम्हारा औजार....,तुम्हारे साथ मजा आएगा "

कुसुम की बात से जंहा हरिया बुरी तरह से झेंपा वही कुसुम उसे झेंपता हुआ देखकर हल्के से हँस पड़ी ……..

"झाबु कहा है "

हरिया ने कहा और कुसुम मुस्कुरा दी

"इतनी जल्दी क्या है.अभी तो धर्मराज तुम्हारी बहन के साथ मस्त है अभी वो तुम्हारी बीवी को नही सताएगा.ऐसे भी झाबु धर्मराज के लिए बल्कि अमरीश ठाकुर के लिए लाई गई है,.."

कुसुम ने हरिया को चिढ़ाया और हरिया ने गुस्से में कुसुम का मुह दबा लीया.

"वो मेरी है और मेरी ही रहेगी"

हरिया के आंखों में शोले दधक रहे थे,और पूरा शरीर ही गुस्से से जल रहा था.लेकिन कुसुम उससे थोड़ी भी नही डरी ,बल्कि उसके आंखों में थोड़े आंसू जरूर आ गए.

"बहुत प्यार करते हो तुम अपनी झाबु से ...लेकिन हरिया तुम धर्मराज को नही जानते वो उसे बदल देगा.तुमने देखा नहीं वो आज ही बहकने लगी थी.कुछ दिनों में वो धर्मराज के रंग में रंग जाएगी फिर धर्मराज उसे अमरीश के सुपुर्द कर देग.शायद वो अमरीश की दूसरी बीवी बना दी जाए…"

कुसुम के आंखों में दर्द का आंसू था और हरिया के दिमाग में एक अजीब सी शांति.तूफान से पहले और बाद एक गहरी शांति छा जाती है वही शायद इस समय हरिया के दिमाग में थी.

“मुझे क्या करना चाहिए”

कुसुम के चेहरे में फिर से एक मुस्कान आई,

हरिया उससे पूछ रहा था की उसे क्या करना चाहिए इसका मतलब साफ था की हरिया कुसुम पर भरोसा करने लगा था.

“तुम मुझपर भरोसा कर पाओगे ??”

कुसुम ने व्यंग्यात्मक रूप से हरिया से पूछा.

“इसलिए पूछ रहा हु .शायद इस समय मैं सिर्फ तुमपर ही भरोसा कर सकता हु”

हरिया की बात सुनकर कुसुम थोड़ी आश्चर्य में पड़ गई.शायद उसने सोचा ही नही था की हरिया भी इतना जहीन और समझदार होगा…

“ऐसा क्या है मुझपर जो तुम सिर्फ मुझपर भरोसा दिखाने की बात कर रहे हो..”

हरिया के होठो में हल्की सी मुस्कान आई

“तुम्हारे आंसू झूठे नही थे ,ना ही अभी है ...मैं ज्यादा पड़ा लिखा तो नही हु लेकिन इतनी तो समझ है मुझे “

हरिया की बात सुनकर कुसुम भी मुस्कुरा उठी .

“अच्छा तो पहले ये करो की यंहा से जाओ ,लेकिन पहले अपनी प्यारी झाबु से मिलना ना भूलना ,उससे मिलने का बंदोबस्त मैं कर दूंगी.लेकिन संभाल कर यंहा तक तो शांति है.लेकिन उन दोनो के पहरे में बहुत से लोग लगा रखे है ठाकुरों ने…”

झाबु से मिलने का नाम सुनकर ही हरिया झूम उठा ..

“ज्यादा खुश होने की जरूरत नही है.अभी तो तुम बस उसे देख पाओगे.वो वँहा अकेली नही होगी. नाही मुझे ही उसके पास जाने की इजाजत है तो बस देख पाओगे बस.बात करवाने का मैं बाद में इंतजाम करूंगी “

हरिया का चेहरा फिर से मुरझा गया.लेकिन फिर भी वो इतने में ही खुश था की उसे ये पता लग जाए की उसकी बहन और बीवी को आखिर किस कमरे में रखा गया है और कैसे रखा गया है.वो बाद में और आदमियों के साथ जाकर उन्हें वँहा से निकालने का प्रयास कर सकता था ….

झाबु के जाने से धर्मराज के चेहरे में एक मुस्कान आ गई थी.वो अपने खेल में सफल हो रहा था.वही लतिमा उसके सीने को जमकर चाट रही थी ,धर्मराज को तो अभी भी यकीन नही हो रहा था की हरिया की बहन इस किस्म की निकल जाएगी.उसके लिए उसे कोई भी महेनत नही करनी पड़ी…

वो लतिमा के सर को पकड़ कर उसे नीचे ले जाने लग.लतिमा धर्मराज के शरीर को चाट रही थी.और धर्मराज एक एक कर अपने कपड़े खोल रहा था.उसे लतिमा की जीभ से अपनी मसाज होने में बहुत ही मजा आ रहा था.

लतिमा नीचे जाती गई और अपने हाथो से ही धर्मराज को नग्न करने लगी.वो धर्मराज की कमर के पास थी ,पेंट खोलने के साथ ही साथ धर्मराज का मोटा ताजा जवान औजार फुंकार मारता हुआ लतिमा के चेहरे से टकराया.

धर्मराज की हँसी छूट गई वही लतिमा उसे एकटक देखती रही.

“कभी देखा नही है क्या “

“देखा है लेकिन पहली बार इतने पास से देख रही हू…”

धर्मराज की भौ चढ़ गई

“किसका देख ली तू.... वेश्या”

लतिमा शर्मा गई और थोड़ी घबरा भी गई उसे लगा की जोश में गलत बात मुह से निकल गई

“अरे बोल ना अब भी शर्मा रही है “

“वो वो भइया का जब वो भाभी के साथ …”

लतिमा का चेहरा पूरी तरह से लाल हो गया था शायद उस दिन की बातो को सोचकर.वही धर्मराज के दिमाग में एक चित्र घुमा.गोरी चिट्टी झाबु के ऊपर काला कलूटा हरिया ...एक सिहरन सी उसके शरीर में दौड़ गई. मानो वो घबरा गया हो.

“कैसा है तेरे भइया का ..”वो रूखे हुए स्वर में बोला ,लेकिन लतिमा जैसे सपने में खो गई थी ,वो जागी ..

“बहुत बडा. काला और बिल्कुल लोहे जैसा दिखता है ..”लतिमा का मुह खुल गया था जिसे देखकर धर्मराज को ना जाने क्यो लेकिन बहुत ही जलन हुई ,वो लतिमा का सर पकड़ कर उसके खुले हुए मुह में अपने अकड़े हुए औजार को भर दिया ,

“मादरठोक इससे भी बड़ा है क्या …”

लतिमा गु गु कर रही थी ,धर्मराज ने पहली बार इस तरह के लतिमा पर जोर जबरदस्ती की थी ,थोड़ी ही देर में उसे जैसे होशं आया की वो क्या कर रहा है ,वो लतिमा के सर को छोड़ा वो खुद के व्यवहार से ही आश्चर्य में था लेकिन ये तो वो भी समझ रहा था की एक बेहद ही जलन भरा अहसास उसे हुआ था जो शायद उसे जीवन में पहली बार हुआ था ,उसने हमेशा ही अपने को हर चीज में आगे पाया था.यंहा तक की अमरीश से भी आगे वो खुद को मानता था और जंहा बात यौन संबंध की हो उसे आजतक यही लगता था की उसका औजार ही सबसे मजबूत और बड़ा और वो किसी भी लड़की को अपने जाल में फंसा सकता है...लेकिन

लेकिन पहले झाबु ने उसका ये भरम तोड़ दिया.उसे कुछ खास दुख नही हुआ क्योकि वो जानता था की वो झाबु को कभी भी पा सकता है. लेकिन अब लतिमा की बात ने उसे सच में जला दिया था.उसे लगा की शायद इसी लिए झाबु उसके पास नही आयी क्योकि उसका पति उससे ज्यादा मजबूत है …

लतिमा भी आश्चर्य से उसे देख रही थी जो की बहुत ही तेजी से हांफ रहा था ..

“हा दूर से तो ऐसा ही लगता था की भइया का वो तुमसे बहुत बड़ा है ,भाभी तो उसे दो हाथो में भी नही समा पाती थी ,”लतिमा के चेहरे में उसे जलाने वाली मुस्कान आयी

धर्मराज को लगा जैसे किसी ने बिजली का झटका दे दिया हो, उसने एक चाटा लतिमा के गालो में लगा दिया.उसका उठा हुआ औजार ना जाने कैसे मुरझा गया था. वो लाल हो चुका था और अपने अंदर उठ रहे शैलाब से बुरी तरह से परेशान भी..

उसे खुद का व्यवहार ही समझ नही आ रहा था और इसलिए वो और भी बौखला गया था.वो तुरंत ही उठकर तेजी से कमरे के बाहर निकल गयी.

लतिमा के होठो में उसकी स्थिति को देखकर एक बड़ी ही रहस्यमय मुस्कान आ गई.जैसे उसे धर्मराज की कमजोरी का पता चल गया हो………..

हरिया एक कमरे में बड़े ही बेताबी के साथ घूम रहा था ,थोड़ी देर बाद ही कुसुम वँहा आयी,

“कहा है झाबु …”

हरिया की बेचैनी उसके आवाज से ही पता चल रही थी

“अच्छी है तुम्हारी झाबु फिक्र मत करो”कुसुम हल्के से हँसी

“तुम्हारी बेचैनी सही है हरिया लेकिन अभी तुम्हे थोड़ा तो धैर्य धरना होगा ,ये कमरा सभी के नजर के बाहर ही है और तुम यंहा खिड़की से आ जा सकोगे,बाहर ताला पड़ा होता है इसलिए यंहा कोई आता भी नही मैं तुम्हारी झाबु को यंहा तक लाने का प्रयास करूंगी.लेकिन अभी नही अभी वो ही बहुत पहरे में है,,,”

कुसुम की बात तो हरिया को सही लगी लेकिन उसके दिल में अभी एक डर था जो उसने कुसुम के सामने रख दिया

“लेकिन इतने दिनों में अगर उसे कुछ हो गया तो..”

कुसुम हरिया को ध्यान से देखती है.उसे भी पता था की ठाकुरों का कोई भरोसा नही है की कब उनका हवस जाग जाए ..

“तुम्हरी झाबु को कोई चोट तो यंहा नही लगने दी जाएगी लेकिन हो सकता है की उसके जिस्म से खेला जाए.जो माहौल अभी है मुझे नही लगता की झाबु के मर्जी के बिना अमरीश या धर्मराज उसे छूने वाले है “

“वो कभी नही मानेगी “

हरिया गरजा ...लेकिन कुसुम के होठो में मुस्कान आ गई

“वो तो तुम्हे आज ही दिख गया था …..हरिया जिस्म का कोई भरोषा नही की वो कब मचल जाए ,और झाबु की आज की हरकतों से तो मुझे लगता है की वो भी जल्दी ही बहक जाएगी और बस एक बार की देर है फिर इस रास्ते से वापस नही आया जा सकता ..”

हरिया गहरे सोच में पड़ गया था

“तब तो मुझे जल्द ही कुछ करना होगा.”

“क्या करोगे ,यंहा से उसे ले जाओगे ,ले जा सकते हो ?तुम्हारा आना मुमकिन हो सकता है लेकिन उसको यंहा से ले जाना ......दोनो मारे जाओगे

हरिया जानता था की झाबु को ले जाना उसके लिए मुसीबत बनने वाला था …...

“लेकिन मैं उससे अभी मिल तो सकता हु ना “

कुसुम थोड़ी देर सोचते रही .

“तुमने एक चीज गौर की हरिया.तुम इतने देर से बस झाबु की ही बात कर रहे हो ,लतिमा के बारे में तुमने कुछ पूछा ही नही ..”

हरिया का चेहरा मायूस हो गया था

“उसे यंहा की खुशिया ही भा गई है तो पूछने का सवाल ही पैदा नही होता.शायद मेरी परवरिश में ही खराबी थी जो उसे झोपड़ा नही महल को चुन लिया.एक भाई की नजर से देखु तो लगता है की अगर वो यंहा रहे तो ही सही है ,कम से कम खुश तो रहेगी जो उसे बचपन से चाहिए था वो सब उसे यंहा मिल जाएग.बचपन में वो बोला करती थी उसे महल में रहना है .नॉकर चाहिए,दौलत की भूख तो उसे हमेशा से थी. लेकिन गरीबी ने सब कुछ मार दिया था शायद इसलिए वो अपने को समर्पित कर गई ….”

हरिया के आंखों में आंसू थे ,कुसुम उसके पास गई और उसके कंधे पर अपना हाथ रख.

“कोई बात नही शायद उसे ये चकाचौंध पसंद आ रहा होगा लेकिन कब तक ,और मैं तुमसे ये पूछना चाहती थी की अगर झाबु को भी ये सब पसंद आ रहा हो तो ,या आने लगा तो ...तो क्या तुम उसे भी अपने साथ नही ले जाओगे “

हरिया बुरी तरह से चौक गया ,ये सच भी हो सकता था …

“क्या तुम देखना चाहोगे की अखिर क्या झाबु को ये सब पसंद आ रहा है या नही …”

हरिया अवाक था .,,

“मैं चाहती हु की तुम अभी उससे मत मिलो अगर तुम चाहो तो उसे देख जरूर लो ,क्या पता उसे भी इस शानोशौकत की आदत लग जाए और तुम जिस पत्नी को बचाने के लिए अपनी जान की परवाह नही कर रहे हो वो पहले वाली औरत ही ना रह जाए ...ये भी हो सकता है की वो तुम्हारे साथ जाने से ही मना कर दे.या अगर पत्नी धर्म निभाते हुए अगर तुम्हारे साथ चले भी जाए तो भी हमेशा अपने फैसले पर दुखी रहे …”

हरिया बुरी तरह से मचल गया था.वो बेचैनी से कुसुम की बात को सोचने लग.उसका दिल कहता था की झाबु ऐसा नही करेगी लेकिन क्यो नही ???

अगर उसे ऐसा शानो शौकत मिलता तो क्या वो छोड़ देता.अपने परिवार के लिए क्या वो ये सब छोड़ देता...???

हरिया इसी सोच में था ,परिवार के लिए ये शब्द उसके दिमाग में घुम रहे थे.

‘कौन है परिवार..... झाबु का.... सिर्फ मैं ही तो ऐसा बच गया हु जिसे वो परिवार कह सकती है …या शायद मैं भी नही ,....

रहता ही कितने दिन हु उसके साथ ,दिया ही क्या है आज तक उसे ,सिर्फ दर दर की ठोकरों के सिवा.क्या वो फिर से सारी जिंदगी ऐसे ही जीने के लिए मेरे साथ चली आएगी,जबकि यंहा उसे सारे सुख मिलेंगे,जिस्मानी सुख भी …’

जिस्मानी सुख की सोच कर हरिया के रग रग में खून का प्रवाह तेज हो गया ,चेहरा तमतमा गया ,वो किसी और के बांहो में झाबु की कल्पना भी कैसे कर सकता था वो भी तब जब झाबु खुद ही अपना जिस्म किसी को सौप दे …

लेकिन ये होने ही वाला था अगर झाबु यंहा रहती है तो आज नही तो कल ये होकर ही रहेगा ,...ये भी हो सकता है की झाबु मेरी ही राह देख रही हो ,और अगर मैं उसके सामने ना आऊ तो फिर उसके सामने फिर और क्या रास्ता बचेगा सिवाय इसके की वो मर जाए या फिर अमरीश की रखैल बन कर रहे …

''नही नही मुझे उसके सामने जाना ही होगा वो भी मेरी ही प्रतीक्षा कर रही होगी ''

हरिया जोरो से बोल गया ,कुसुम उसे देखती रही..

''ठीक है अगर तुम यही चाहते हो ठीक है ,लेकिन मेरी बात पर भी गौर करना ''

''मैं सब कुछ सोच कर ही बोल रहा हु ,अगर उसे यंहा का सुख पसंद हो तो मैं उसे यही छोड़ कर चला जाऊंगा. लेकिन अगर वो मेरे साथ आना चाहे तो दुनिया की कोई भी ताकत मुझे नही रोक पाएगी .लेकिन पहले मुझे उसे भी ये बताना होगा की मैं उसे लेने आ चुका हु और आज नही तो कल उसे लेकर ही जाऊंगा …''

हरिया के चेहरे पर आये दृढ़ निश्चय के भाव को देखकर कुसुम भी कुछ नही कह पाई ,और बस उससे बिदा लेकर एक दरवाजे से बाहर चली गई ……...

हरिया कुसुम के साथ हो लिया,कुसुम के दिमाग में बस यही चल रहा था की आखिर कैसे हरिया को झाबु से मिलवाया जाए .वो हरिया को एक दासी की साड़ी देकर उसे पहनने को बोलती है ,हरिया ने अपनी धोती के ऊपर पेटीकोट डालकर और बनियाइन के ऊपर ब्लाउज डालकर वो साड़ी पहन लेता है,लेकिन उन बड़ी हुई दाढ़ी और मूंछो का क्या करे ,कुसुम की हँसी उसे देखकर ही नही रुक रही थी.वो मर्दाना शरीर का मालिक था और कुछ भी करने पर भी वो किसी औरत की भांति नही दिख पा रहा था.कुसुम ने दिमाग दौड़ाया और घूंघट डालने को कहा ,घूंघट डालने के बाद भी उसके शरीर का क्या किया जाए कुसुम को समझ ही नही आ रहा था.फिर भी उसने जोखीम लेने की सोची और उसे अपने साथ साथ झाबु और लतिमा के कमरे की ओर ले गई,,..

वो पहले ही जाकर अपनी विश्वस्त दासी को उस कमरे में रखवा चुकी थी ताकि समय पड़ने पर वो काम आये क्योकि कुसुम का भी उस कमरे में जाना सम्भव नही था केवल चुनी हुई दासिया ही उस कमरे के लिए निर्धारित की गई थी जिसमे से एक कुसुम की खास थी.

कुसुम ने उस दासी के साथ ही हरिया को भी उस कमरे की ओर भेज दिया.उसे किसी दाई का नाम दे दिया जो वैसे ही मर्दाना ढंग की थी और औरतो की मालिश किया करती थी.साथ ही हमेशा घूंघट में ही रहती थी.दासी को समझा दिया गया था की कह दे की इसका मौन चल रहा है और उपवास है.बाकी अमरीश अगर पूछे तो कह दे की धर्मराज ने मालिश के लिए भेजा है और धर्मराज अगर पूछे तो कह दे की अमरीश ने भेजा है.क्योकि वो दोनो ही ऐसी छोटी छोटी बातो पर कोई ध्यान ही देते थे.

हरिया कमरे में आ चुका था .वो दासी बाकियों से बात में उलझी हुई थी.

‘‘आओ दाई इस कमरे में आओ ‘‘हरिया दूसरी दासी के पीछे हो लिया ,हरिया ने जितना देखा था वो समझ गया था की आखिर क्यो लतिमा यंहा की दीवानी हुई जा रही थी,अभी वो उनके बाथरूम में थे जंहा बड़ा सा टब था जिसमे दो तीन आदमी आराम से आ सकते थे,हल्के कुनकुने पानी में गुलाब के फूल तैर रहे थे जिससे झाबु का शरीर ढंका हुआ था .शायद उसने कोई भी कपड़े नही पहने हुए थे.

जितना बड़ा वो बाथरूम था उतना बड़ा तो हरिया का पूरा घर भी नही था .आलीशान तब और बड़ा सा रोशनदान जंहा से धूप छनकर आ रही थी.इत्र की खुश्बू से हरिया का नाक ही भर गया था .लगा की जैसे वो स्वर्ग में है.

हरिया ने झाबु को देखा,वो आंखे बंद की हुई आराम से लेटी हुई थी जैसे उसे दुनिया की कोई भी खबर या फिक्र ना हो.उसके सर के पास बैठी हुई एक दासी उसके कंधों को हल्के हल्के से मालिश कर रही थी.उसे देखकर ही हरिया का मनोबल थोड़ा टूट गया.

‘सच में वो कितने सुख में है ‘उसने अपने मन में कहा

तभी कमरे का दरवाजा खुला और लतिमा वँहा आयी,उसे अपने जालीदार घूंघट से देखकर ही हरिया के होशं उड़ गए ,

‘क्या भगवान अब यही दिन देखना बच गया था ‘वो फिर से मन ही मन रो पड़ा ..

लतिमा पूरी तरह से नग्न थी और हल्के हल्के से हंसती हुई आकर झाबु के साथ उस टब में लेट गई …

‘‘क्या भाभी मजा आ रहा है..’’लतिमा खिलखिलाई

तभी वँहा कुसुम की चहेती दासी भी आ गई और सर झुकाकर एक ओर खड़ी हो गई ,लतिमा उसे देखने लगी दोनो की नजर मिली और दोनो ने हल्के से मुस्कान आपस में बिखेर दी..

लतिमा की बात सुनकर हरिया को और भी पीड़ा पहुची थी,उसकी भी बहन उसकी ही बीवी से ऐसी बात कर रही थी..

झाबु ने आंखे खोली उसकी आंखे लाल थी ,और चेहरा शांत ..

“चाहे कितनी भी सुख दुविधा मिल जाए लेकिन …...तेरे भइया के साथ झरने में नहाने का मजा थोड़ी ही आएगा ..”

वो दुखी थी जो उसकी आवाज से ही पता चल पा रहा था लेकिन वो रो नही रही थी ,शायद बहुत रो चुकी थी ,

“ओह तो भइया का काला औजार याद आ रहा है मेरी भाभी को ..”

लतिमा फिर से जोरो से हँस पड़ी

झाबु बुरी तरह से शर्मा गई साथ ही हरिया भी …

लतिमा ने झाबु की मालिश कर रही दासी को वँहा से भेज दिया.अब कमरे में बस कुसुम की दासी ,लतिमा झाबु और हरिया थे..

“ऐसे भइया की तरह ही तगड़ा औजार हमारे धर्मराज बाबू का भी है,देखा ना कैसे पकड़े हुए थे आपको ..”

हरिया तो बुरी तरह ही हिल गया ये उसकी बहन थी जिसे उसने गोद में खिलाया था.वही आज अपनी भाभी को बेवफाई के लिए उकसा रही है...हरिया गुस्से से भर गया लेकिन कुछ भी नही कह पाया ..

“चुपकर कुछ भी बोलती है और तुझे कैसे पता की तेरे भइया का वो …”झाबु शर्मा गई जिसे देखकर हरिया और भी गुस्से में भर गया ,साली दोनो एक सी है ,उसने मन में ही कहा

“जब आप और भइया करते थे तो मैं भी छुपकर देखा करती थी ..

“छि बदमाश कैसी लड़की है तू “झाबु पहली बार खिलखिला कर हँसी वही हरिया को तो अपने कानो पर विस्वास ही नही हो रहा था. जीसे वो अपनी सीधी साधी बहन समझता है. जिसे दुनिया के कोई टेढ़े चाल नही पता वो तो एक …

हरिया आगे की बात नही सोचना चाहता था ..

“तेरे भइया कहा है लतिमा ? क्या वो हमे भूल गए है ? क्या वो यंहा नही आएंगे …”

हरिया को लगा की वो तुरंत ही अपना घूंघट निकाल दे ,वो ऐसा करने ही वाला था की एक हाथ ने उसे रोक लीया वो हाथ उस दासी का था जिसे कुसुम ने हरिया के साथ भेजा था..

“उन्हें अब भूल भी जाओ भाभी ,धर्मराज तुम्हारा दीवाना है तुम्हे रानी बना कर रखेगा.उस कंगाल के पास तुम्हे क्या मिलेगा.तुम धर्मराज के साथ हो जाओ और बस ऐश करो ,वैसे भी उसका औजार भी तुम्हारे भैया के बराबर का ही है ..”

लतिमा और हंसती इससे पहले ही एक जोरदार झापड़ उसके गाल पर पड़ गया. ये झापड़ झाबु का ही था.वो गुस्से में लाल थी लेकिन लतिमा को जैसे कोई भी प्रभाव नही पड़ा. वो अभी भी मुस्कुरा रही थी.

“भाभी ऐसे भी भइया यंहा आने से रहे और धर्मराज के पास बहुत पैसा है हम दोनो ही ऐश करेंगे …”

लतिमा की आंखों में भी पानी था लेकिन फिर भी उसकी बातो में शरारत थी.

झाबु उसके चेहरे को देखती ही रह गयी.पता नही क्या था उस चेहरे में जो वो खामोश हो गई .तभी वो दासी बोल उठी

“अरे मालकिन कहा धर्मराज साहेब इनको छू पाएंगे ,ये तो अमरीश साहब की रखैल बनाने लायी गई है “

हरिया से अब रहा नही गया वो अपना घूंघट खोलकर सबके सामने आ गया ,जिसे देखकर झाबु कुछ कहने ही वाली थी लेकिन लतिमा ने उसका मुह दबा दिया.झाबु की आंखों में बस पानी था वो हरिया को और हरिया उसे देखे जा रहे थे ..

हरिया कुछ कह पाता इससे पहले ही झाबु ने उसे चुप रहने का इशारा किया.पता नही ये क्या हो रहा था लेकिन हरिया ने कुछ भी नही कहा .वो अपनी बीवी और बहन की आंखों में पानी और प्यार को देख सकता था.लेकिन उसे बड़ा आश्चर्य भी हो रहा था की ये वही लतिमा है जो आंखों में उसके लिए इतना प्यार लिए हुए भी ये सब बोल पा रही थी …

“अरे धर्मराज साहब को तुम नही जानती ,उन्हें जो पसंद आ गया उसे वो ले कर रहेंगे.और ऐसे भी उन्हें भी तो ये साबित करना है की उनका औजार हमारे हरिया भइया से मजबूत है और वो तो भाभी के योनी में जाने से ही पता चलेगा की कौन सा औजार ज्यादा मजबूत है ..”

लतिमा ने दासी की बात का जवाब दिया. लेकिन ये सब बोलते हुए उसने अपना सर नीचे कर लीया था.वो हरिया से नजर नही मिला पा रही थी.हरिया को समझ आ चुका था की ये सब किसी ना किसी खेल का ही कोई हिस्सा है.जिसे लतिमा और वो दासी मिलकर खेल रहे है और साथ ही उन्होंने झाबु को भी मिला लीया है.झाबु बस हरिया को देख रही थी उसके आंखों से निर्झर आंसू बह रहे थे लेकिन मुह से कोई भी आवाज नही आ रही थी ..

“लेकिन अमरीश साहब कैसे मानेगे…”उस दासी की आंखों में भी ये सब देखकर आंसू आ चुके थे.

“वो तो धर्मराज ही जाने “

लतिमा ने हल्के से आवाज में कहा

“मैं दोनो की नही हो सकती किसी एक की होंगी अगर उन्होंने जबर्दस्ती करने की कोशिश की तो मैं अपनी जान दे दूंगी ..ऐसे भी उस बुड्ढे अमरीश में रखा ही क्या है ,मुझे भी धर्मराज पसंद आया लेकिन ...इतनी जल्दी हा भी कैसे कहु “

झाबु इतना ही बोल पाई साथ ही जब वो धर्मराज पसंद आया बोली तो अपना सर हरिया को देखकर ना में हिला रही थी.हरिया को उसपर बड़ा ही प्यार आया.वो उसकी ओर बढ़ने ही वाला था की रोशनदान से एक साया सा दिखने लगा.हरिया को समझते देर नही लगी की हो ना हो रोशनदान के पीछे कोई है.वो झट से अपना घूंघट लगा लेता है और झाबु के पास जाकर बैठ जाता है .और उसके हाथो को पकड़ कर मालिश करने लगता है .झाबु के साथ साथ उस दासी और लतिमा के चेहरे में भी एक मुस्कान खिल गई …

“लेकिन दोनो में से एक की होगी कैसे ???”वो दासी फिर से बोली

“मुझे क्या पता ..दाई चलो मेरे पूरे शरीर की अच्छे से मालिश करो मुझे बड़ा थका थका लग रहा है ,मुझे क्या करना है जो मुझे जीतेगा मैं तो उसकी हो जाऊंगी ..”

झाबु का चेहरा अब खिल गया था और वो ये बोलते हुए थोड़ी हँसी थी ,

हरिया ने थोड़ा जोर लगाकर उसके कंधे को मसाला

“आह ..थोड़ा धीरे करो दाई “झाबु की आह में बहुत ही प्यार भरा हुआ था.वो मचल गई थी ..हरिया का हाथ फिसलकर उसके उरोजो तक जा पहुचा ,वो हल्के हल्के उसे मसलने लगा .झाबु ने उसे झूठे गुस्से से देखा और हल्के हाथो की चपत हरिया के कंधे पर मार दी ..

लतिमा और दासी इसे देखकर मुस्कुरा उठे…

“लगता है भाभी तुम खून खराबा करवाओगी …”लतिमा हँस पड़ी साथ ही झाबु और दासी भी..

“चलो तुम दोनो जाओ यंहा से मुझे दाई से अच्छे से मालिश करवानी है.अब धर्मराज ही जाने की उसे मुझे कैसे पाना है.मैं भी देखती हु की इतनी बड़ी बड़ी बात करने वाले ठाकुर के सीने और औजार में आखिर कितनी ताकत है.देखती हु अपने भाई के सामने खड़ा भी रह पायेगा या फुस्सी फटाके की तरह फुस हो जाएगा …”

झाबु की बात पर बाकी दोनो लडकिया भी खिलखिला गई ,

‘‘ठिक है भाभी ...दाई इनका अच्छे से मालिश करना हम दोनो बाहर जा रहे है ‘‘लतिमा इतना बोलकर रोशनदान का पर्दा खिंच देती है और कमरे में थोड़ा अंधेरा हो जाता है.दोनो ही खिलखिलाकर बाहर निकल जाती है और साथ ही रोशनदान से वो छाया भी खिसक जाता है ………..

हरिया वापस जा चुका था. हरिया के चेहरे में एक खुशी थी जो उसके सबसे अच्छे साथी होशियार सिंग को समझ ही नही आ रही थी …

देसी दारू की बोलत लीया हुआ हरिया अपने में ही हँस रहा थे

“अबे तुझे क्या हो गया ,लतिमा और भाभी ठाकुर के गिरफ्त में है ,तेरे मां बाप को ठाकुर ने मार दिया और तू यंहा देसी पी कर मुस्कुरा रहा है ..”

हरिया ने हल्के से हंसते हुए उसे अपने पास बैठा लिया और पूरी कहानी बता दी.होशियार हरिया के बचपन का दोस्त था. दोनो साथ ही बड़े हुए थे.ऐसे उसे इन सब को सुनकर खुश होना था लेकिन उसका चेहरा तमतमा गया था. जीसे देखकर हरिया चुप हो गया …

“क्या हुआ तू यू गुस्से से क्यो भर गया”

“तू नामर्द है ...अपनी बीवी और बहन को वेश्या बनाना चाहता है.क्या विस्वास की वो जो सोच रहे है कर ही पायेगें अगर नही कर पाए तो ..और भाभी तो बच ही जाए लेकिन लतिमा .वो इतना गिर सकती है मैंने सोचा ही नही था…”

उसके आंखों में आंसू थे ,जो हरिया के समझ के परे थे

“होशियार मेरे दोस्त तू ही बता की हम क्या कर सकते है ..”

हरिया ने होशियार के कंधे पर हाथ रखा …

“मैं लतिमा को ये सब नही करने दूंगा ,त्रिवेदी भइया से बात करता हु…”

होशियार के लतिमा की इतनी फिक्र करता देख हरिया कुछ सोच में पड़ गया.आज उसे समझ आया था की होशियार राखी के दिन उसके घर क्यो नही जाता था.वो उसकी मा को अपनी मा की तरह मानता था और पिता को अपना पिता ,उसने हमेशा ही झाबु को मा जैसा दर्जा दिया लेकिन फिर भी वो कभी लतिमा को बहन नही कह सका...हरिया के होठो में एक मुस्कुराहट तो आयी लेकिन उसमे दर्द ही दर्द था.वो समझ चुका था की होशियार लतिमा से महोब्बत करता है….

“ये एक जाल है ,वरना हवेली में घुसना इतना आसान तो नही हो सकता “डॉक्टर बॅनर्जी गंभीर थे,

“वही तो मैं भी इसे समझा रहा हु “होशियार बोल पड़ा

दोपहर का वक्त था और झील के किनारे जंहा जंगल की देवी की छोटा सा मंदिर था एक गुप्त सभा हो रही थी जिसमे त्रिवेदी और डॉक्टर बॅनर्जी भी शामिल थे …

“लेकिन मुझे तो कोई भी ऐसी बात नही लगी जिसमे खतरा हो..”

“यही तो समझ के परे है की ठाकुर इतना बेफिक्र कैसे हो सकता है जब की उसके पास संग्राम जैसा वजीर हो “

डॉक्टर का तर्क हरिया के भेजे में घुस गया ..

“तो अब..”

हरिया के साथ साथ बाकी के सभी सदस्य डॉक्टर की ओर देखने लगे

“हम्म्म्म तो अब….अगर उसने तुम्हारी जासूसी की होगी तो यकीन मानो की उसे सब कुछ पता होगा की तुम किससे किससे मिले क्या क्या किया .लेकिन फिर भी उसने तुम्हे सही सलामत जाने दिया इसका मतलब है की वो तुम्हारे जरिये हवेली में छुपे अपने सभी दुश्मनों ढूंढना चाहता है.वरना और तो कोई कारण नही दिखत.अब वो अपनी बीवी पर भी नजर रखे होगा.मेरे ख्याल से अगर अभी अमरीश से सबसे ज्यादा खतरा किसी के है तो वो है कुसुम को होगा …

तो हमे पहले उसके जाल का फायदा उठाना चाहिए और अपना जाल उसके जाल से बदल देना चाहिए …”

डॉक्टर की बात सुनकर सभी भौचक्के थे ..

“उसका जाल यानी वो तुम्हे हवेली में उस खास रास्ते से आने जाने से नही रोकेगा…मतलब की कोई ऐसा होगा जिसे तुम्हारे आने का पता होगा.फिर तुम हवेली में जंहा जाओगे वहां भी तुम पर नजर रखने को कोई होगाठाकुर को हवेली के गद्दार चाहिए मतलब की वो ये सब काम अपने कुछ खास लोगो से ही करवा रहा है ,सभी को इसके बारे में नही पत.तो अगर तुम उसके उन खास लोगो को पहचान लो जो की तुमपर नजर रखने के लिए नियुक्त किये गए है तो …….”

“तो…..”

हरिया समझने की कोशिश कर रहा था

“तो तुम लतिमा और झाबु को आराम से बाहर ला सकते हो.क्योकि ठाकुर ने उस एक जगह पर ही पहरा हटाया है ताकि तुम्हारे आने का पता सिर्फ उसके खास लोगो को ही पता चल पाए...तो अगर वो खास लोग ही ना रहे हो फिर नजर कौन रखेगाा.तुम्हारा रास्ता साफ होगा.क्योकि ठाकुर ने खुद ही उस जगह से पहरा हटाया है ……”

हरिया तो झूम गया लेकिन डॉक्टर ने उसे रोका

“ये काम एक दिन में नही हो सकता की तुम उन लोगो को पहचान पाओ तो तुम्हे बहुत ही धैर्य रखना होगा. साथ ही इस बात की भनक की हमे ठाकुर के इरादे का पता है किसी को नही होना चाहिए. तुम वैसे ही जाओगे जैसे कल गए थे ,बिल्कुल ही छुपकर ,और बाहर से तुम्हारा कोई आदमी इस बात की नजर रखेगा की तुम्हारे जाने से वँहा क्या क्या परिवर्तन होता है .ताकि उसके लोगो का पता चल सके की वो कहा छुपे हुए है,और हा ये कुछ दिन तक रोज करना होगा क्योकि तभी साफ पता चल पायेगा की कितने लोगो को ठाकुर ने इस खास काम के लिए नियुक्त किया हुआ है…..”

डॉक्टर की बात पर सभी ने सर हिला दिया ..

“लेकिन उसका क्या जो कुसुम और लतिमा सोच रही थी की भाई से भाई को लड़ा दिया जाय ..”हरिया को अभी भी ये लगता था की वो प्लान भी सही है..

डॉक्टर उसकी बात सुनकर मुस्कुरा दिया

“ठाकुर अमरीश सिंह इतना बड़ा बेवकूफ नही है की एक लड़की के लिये अपने भाई को मार दे...लेकिन हा अगर धर्मराज लड़की के चक्कर में आकर अमरीश को मारने की कोशिश करे तो ये जरूर होगा की धर्मराज नही बचेगा ...तो उनके चक्कर को छोड़ो,तुम झाबु ,लतिमा और कुसुम तीनो को बाहर ले आओ…”

हरिया ने हा में सर हिलाया

वर्तमान में

फोन के घनघनाने की आवाज से सुमित का ध्यान टूटा और साथ ही चंपा का भी ..

सुमित ने अपने फोन को अजीब निगाह से देखा

“साला यंहा तो टॉवर ही नही मिलता और आज जब इतनी इंटरेस्टिंग कहानी सुन रहा हु तो पता नही कहा से फोन आ गया “

सुमित ने फोन काट कर फिर से चंपा की ओर देखा

“तुम्हे ये सब कहानी लग रही है ,जाओ मैं कुछ नही बताती “

“अरे मेरी जान मेरा मतलब वो नही था ,मैं जानता हु की ये सब सच में हुआ था ..”

तभी फोन फिर से बजा ,सुमित ने उसे उठा लीया

“ जी सर “वो अब खड़ा हो चुका था

“जी जी जी सॉरी सर जी सर…”

उसने फोन काटा

“इसकी मा की “

“क्या हुआ ??”चंपा के चेहरे में एक डर आ गया

“कुछ नही बस साली फुलवा ने फिर से एक कांड कर दिया ..”

“क्या हुआ …???”

“एस. पी. साहब का फोन था.धर्मराज की बीवी को मार दिया गया है जो की शहर में रह रही थी ,”

“नही बुआ …”चंपा खड़ी हो गई उसके आंखों से आंसुओ की धार टपकने लगी

“बुआ ????? धर्मराज ठाकुर की पत्नी यानी लतिमा “

चंपा ने हा में सर हिलाया

“कैसे “

“अभी कुछ नही बता सकती आप जल्दी जाओ ..और ये काम फुलवा का नही हो सकता वो बुआ से बहुत ही प्यार करती थी ,ये काम जरूर ठाकुर ने किया होगा “

वो सुबक रही थी

‘‘फुलवा ठाकुर को कभी नही छोड़ेगी ‘‘

चंपा ने सुबकते हुए ही कहा ,कुछ देर के लिए सुमित बस उसे देखता ही रह गया ……

शहर का थाना प्रभारी जांच में जुटा हुआ था ,सुमित के जाते ही पहले उसने उसे पकड़ लिया.

“अबे यंहा इतना बड़ा कांड हो गया तू अभी आ रहा है ..”

“अरे सर मुझे जैसे ही पता चला मैं दौड़ा चला आया.लेकिन ये तो आपके एरिये का केस है मुझे क्यो बुलाया “

“क्योकि वो डकैत तो तेरे एरिये की है ,और जमीदार साहब ने इस्पेसल तुझे बुलवाया है … जल्दी जा साहब भड़के हुए है “

सुमित को पहले तो सभी ने अजीब निगाह से देखा लेकिन जब ठाकुर ने उसे अपने पास बुलाया और उसके कन्धे पर हाथ रखा सभी की आंखे और भी फैल गई ..

“उसे पकड़ने की कितने करीब पहुचे ??”

ठाकुर का पहला प्रश्न था

“समझ लीजिये साथ ही सोता हु “

ठाकुर ने सुमित को अजीब निगाहों से देखा

“जब हरिया को आप अपने घर में ही नही पकड़ पाए... तो थोड़ा धैर्य रखिये.अभी अभी तो आया हु.थोड़ा समझने तो दीजिये.इतने सालो में क्या हुआ लतिमा आखिर धर्मराज की बीवी कैसे बन गई ???”

अमरीश के होठो में मुसकान आ गई

“लगता है तुम ये काम कर ही लोगे जिसके लिए तुम्हे बुलाया गया है,आज तक किसी को ये बात पता नही चल पाई थी की हरिया मेरे घर आता था.तुमने तो बहुत कुछ पता कर लीया “

सुमित थोड़ा हंसा “सब इसका कमाल है “

उसने नजर नीचे करके अपने पेंट की तरफ इशारा किया.अमरीश भी हँस पड़ा लेकिन फिर उसे ख्याल आया की वो कहा है.अमरीश सुमित को ले कर थोडा दूर हट गया ..

“इसी के चक्कर में मेरे भाई ने उस वेश्या से शादी कर ली,साला मुझे मारना चाहता था आज देखो ,खुद की बीवी मरी पड़ी है और लड़कियों के जैसे रो रहा है…”

सुमित ने उस ओर देखा एक अधेड़ आदमी सिसक रहा था साथ ही एक और लड़की थी जो उम्र चंपा जितनी ही लग रही थी वो भी उससे लिपटे हुए रो रही थी,

“ये धर्मराज और उसकी बेटी है…”

“तो लतिमा को अापने मरवाया है ..”

सुमित ने मुस्कुराते हुए अमरीश की ओर देखा

अमरीश के चेहरे में भी मुस्कुराहट आ गई

“बहुत खूब तुम आदमी तेज हो ,साली बहुत तकलीफ दे रही थी.हवेली और जायजाद तो पहले ही छोड़ दिया था इन्होंने.भाई की खातिर इन्हें जिंदा भी रखा और यंहा घर भी दिया.इनकी बेटी को भी कम्प्यूटर साइंस से इंजीनियरिंग करवाया.लेकिन पता चला की इसने फुलवा को शरण दिया था और वो यंहा रह कर मुझे मारने की प्लानिंग कर रही थी.साला अब मेरे बेटे से नही रहा गया ,ठोक दिया साली को “

सुमित ने फिर से उस लड़की की तरफ देखा ,बड़ी ही मासूम थी लेकिन आंखे लाल ..शायद रो रो कर या फिर गुस्से में ???

वो सुमित को ही घूर रही थी ,जैसे उसे खा जाएगी ..

सुमित ने तुरंत ही आंखे मोड़ ली ..

“मुझे इस लड़की के तेवर कुछ सही नही लग रहे “

सुमित तुरंत ही अमरीश से कह गया

“जानता हु.गुस्सा तो उसके खून में है,धर्मराज की बेटी जो है ..और जब उसकी मा का कातिल उसके सामने खड़ा हो तो गुस्सा तो उसे आएगा ही “

सुमित चौका ..

“मतलब उसे पता है “

“इन दोनो के सामने ही तो मारा था.लेकिन फिक्र मत करो कोई कुछ नही कहेगा.धर्मराज का एक छोटा बेटा भी है जो की होस्टल में रहता है और हमारी निगरानी में है ,बाकी तो तुम समझ ही गए होंगे “

सुमित मन ही मन ठाकुर को गालीयां देता है.लेकिन चेहरे में बस एक मुस्कान ले आता है.और फिर से उस लड़की को देखता है ,उसे देखकर ही उसे आभस हो गया की लतिमा कितनी सुंदर रही होगी.पतली दुबली सी लंबी लड़की बड़ी बड़ी आंखों वाली.दूध सी गोरी

लेकिन अभी चेहरा लाल था ,उसके तेवर से ही लग रहा था की वो कितनी गुस्सेल है,लेकिन फिर भी सुमित को बहुत ही प्यारी लगी,उसकी साली जो थी …

अमरीश सुमित को देखता रहा

“क्या हुआ लड़की भा गई क्या “

सुमित बुरी तरह से झेंपा

“फिक्र मत कर अगर मेरा काम कर दिया तो दोनो तेरे “

“दोनो ???”

“हा तेरी चंपा और ये साली वेश्या की औलाद गीता ,रखैल बना कर रख लेना दोनो को ..”

‘गीता ‘सुमित ने मन में ही दोहराया.लेकिन उसे अमरीश पर गुस्सा भी आया ,क्योकि गीता रिश्ते में उसकी बेटी जैसे थी …

ठाकुर और बाकी के पुलिस वालो के जाने के बाद सुमित फिर से लतिमा के घर में गया…

‘‘क्यो आये हो यंहा ‘‘

गीता चिल्लाई

‘‘थोड़ी तहकीकात करनी है ‘‘

सुमित ने अपनी पुलिसिया अकड़ में कहा

‘‘देखो अभी हम बहुत दुखी है.अभी हम कुछ भी कहने की स्तिथि में नही है ‘‘

धर्मराज जो की कभी बहुत ही गुस्सेल हुआ करता था अब बहुत ही शांत दिख रहा था...उसने ही गीता को आगे बढ़ने से रोक लीया था …

‘‘लेकिन पुछताज तो करनी ही पड़ेगी ‘‘सुमित का अंदाज अब भी वही था..

‘‘कितने कमीने हो तुम ‘‘गीता फिर से चिल्लाई ,

‘‘ये जानते हुए भी भी की मा को किसने मारा है तुम यंहा पुछताज करने आ गए...दीदी तुम्हारे बारे में गलत थी तुम तो ठाकुर से मिले हुए हो.दीदी तुम दोनो को नही छोड़ेगी ‘‘

सुमित सोच में पड़ गया की क्या फुलवा ने उसे सब बता दिया था ..

‘‘अच्छा तो दीदी से तुम्हारी अच्छी बनती है,’’सुमित थोड़ा रुका

‘‘तब तो तुम मेरी साली हुई ‘‘

सुमित के मजाक से किसी को हँसी तो नही आयी लेकिन दोनो ही उसे घूरने लगे ..

‘‘क्यो फुलवा ने सब कुछ नही बताया क्या ??’’

दोनो ही एक दूसरे का चेहरा देखने लगे

‘‘तुम गद्दार हो.इधर दीदी के साथ प्यार की बाते करते हो और उधर ठाकुर के साथ वफादारी दिखा रहे हो ‘‘

गीता की आवाज इस बार थोड़ी ठंडी थी ..

‘‘समझा करो मुझे ठाकुर से दोस्ती करके रखनी पड़ती है .वरना मेरे स्थान पर कोई दूसरा आ जाएगा.और मैं तुम्हारी दूसरी दीदी के बारे में बात कर रह हु ,चंपा की.ना की फुलवा की ‘‘

उसकी बात सुनकर दोनो ने फ्रिर से एक दूसरे को देखा ,धर्मराज खड़ा होकर उसके पास पहुचा ..

“तुम आग से खेलने की कोशिश कर रहे हो,चंपा को भूल जाओ क्योकि फुलवा तुमसे बेहद प्यार करती है.फुलवा तुम्हे पाने के लिए कही चंपा को ही ना मार दे.लतिमा उसे समझा के थक गई लेकिन …..वो किसी की बात सुनती ही कहा है …”

“तब तो मेरे लिए और ही आसान हो जाएगा ,फुलवा को खत्म करना और ठाकुर को भी ..”

सुमित इतना ही बोलकर वँहा से निकलने ही वाला था की उसकी नजर एक पुस्तक में पड़ी.सुमित कुछ देर उसे ध्यान से देखकर उसके पास पहुचा और पुस्तक में फंसे हुए एक चमकीले कागज को खिंच लीया.वो एक तस्वीर थी जिसमे फुलवा हाथो में बड़ी सी पिस्तौल लिए दिख रही थी ..लेकिन सुमित उसे और देख पाता उससे पहले ही गीता दौड़ी आयी और उसके हाथो से वो फ़ोटो खिंच लिया …...सुमित उसकी इस अदा पर हल्का सा मुस्कुराया और घर से निकल गया …...

रात अंधियारे में छोटे से दिए की लालिमा में फुलवा का नग्न शरीर चमक रहा था.बाल बिखरे हुए थे,और बलवीर का नग्न देह उसके शरीर के बाजू में पड़ा था.अभी बलवीर का मुह फुलवा के उरोज से दूध पी रहा था,और फुलवा उसके बालो को सहलाते हुए किसी ख्वाब में खोई हुई थी..

“उसने मेरी बुआ को मार डाला बलबीर ,और मैं कुछ भी नही कर सकी,उसने बुआ को मेरे कारण मारा ..”

बलवीर चेहरा उठा कर उसकी ओर देखता है,फुलवा के आंखों में आंसू नही थे लेकिन आंखे कही खोई हुई जरूर थी ,

“मैं सुमित के बांहो में थी और उसने …”

“मैंने पहले ही कहा था की इस इंस्पेक्टर के चक्कर में मत पड़ो लेकिन तुम तो मेरी बात सुनती ही नही.क्या मैं तुम्हे प्यार नही करता.क्या बाकी के गिरोह के लोग तुम्हे प्यार नही करते...और अगर जिस्म में भूख है तो बोलो ये बलवीर तुम्हारे जिस्म को निचोड़ कर रख देगा.तुम्हारी हर प्यास को बुझा देगा “

बलवीर बोलते हुए उत्तेजित हो गया था.उसकी आवाज कांप रही थी.गुस्सा उसके चेहरे पर साफ साफ झलक रहा था. लेकीन फुलवा के होठो में उसके बात को सुनकर बस मुस्कान आयी ,और उसने बलवीर के कड़े औजार को अपने नरम हाथो में ले लीया जो की किसी हल्के गर्म लोहे की सलिया की तरह मजबूत और गर्म था.

फुलवा ने बलवीर के कमर को हल्के से धक्का दिया बलवीर ने इशारा समझा और अपने कमर को फुलवा के कमर के ऊपर ले आया.फुलवा ने उसके उस सलिया की तरह तने हुए औजार को अपने हाथो से पकड़ कर अपनी योनि में रगड़ा जो की अभी पूरी तरह से गीली तो नही थी लेकिन औजार के आभस से थोड़ी गीली हो गई थी.इशारा समझ बलवीर ने भी हल्के से अपनी कमर को फुलवा के कमर पर टिकाया और औजार उसकी योनि की गहराई मे धसता चला गया…

फुलवा की आंखे बंद हो चुकी थी और उसके हाथ बलवीर के बालो को जकड़ चुके थे ,बलवीर हल्के हल्के ही सही लेकिन ताकतवर धक्के दे रहा थे

“आह आह मैं ठाकुर को नही छोडूंगी बलवीर .....नही छोडूंगी ..आह आह ,तुम मेरे साथ हो ना मेरे बच्चे ..”

“हा.... हा ...हा.... मरते दम तक तुम्हारे साथ हु ...आह.... “

बलवीर की कमर तेज होने लगी थी.और फुलवा के आंखों से आंसू की बूंदे टपकने लगी.बलवीर किसी जानवर की तरह पूरी ताकत लगा कर फुलवा के योनि पर प्रहार किये जा रहा था. उसका विशाल शरीर फुलवा को मसल रहा था. और फुलवा के पूरे शरीर के अपने अंदर समाया हुआ था.

“आह उस मादरठोक सुमित को भी जान से मार दूंगा तुम्हे छूने की हिम्मत कैसे की उसने आह आह “बलवीर अब उत्तेजना के शिखर पर पहुच चुका थे

फुलवा के आंखों में तो आंसू थे लेकिन होठो में बलवीर की बात सुनकर मुस्कुराहट आ गई.उसने बलवीर के बालो को जोरो से खिंचा और और उसके मुह को अपने ऊरोजो से लगा ली.बलवीर पूरी शिद्दत से उसके वक्षो को अपने मुह में भरकर अपने दांतो को गाड़ने लगा …

दर्द और मजे में फुलवा चीखे जा रही थी और उत्तेजना के शैलाब में बलवीर और फुलवा एक साथ ही ढेर हो गए.बलवीर का गाढ़ा गाढ़ा वीर्य अब फुलवा के योनि से बह कर बाहर निकल रहा .बलवीर मुर्दों की तरह फुलवा के ऊपर लेट गया था. ,और फुलवा भी लाश सी अपनी सांसों को संभाल रही थी……...

फुलवा की नजर अब भी छत को देख रही थी.बलवीर उसके बाजू में नींद की आगोश में जा चुका था. लेकीन फुलवा की आंखों में नींद ही नही था.वो अपने अतीत की यादों में खोई थी.जब फुलवा और बलवीर एक साथ ही खेला करते थे.बलवीर उससे बचपन से प्यार करता था. अपने पिता के लाख मना करने के बाद भी उससे मिलता ,आखिरकार संग्राम ने उसे टोकना भी छोड़ दिया.लेकिन वो जानता था की वो हरिया की बेटी है.उस हवेली में उसे कोई भी पसंद नही करता था. और फुलवा का सबसे बड़ा दुश्मन था...ठाकुर युवराज सिंह…

युवराज अमरीश का इकलौता बेटा था और लगभग बलवीर की उम्र का था.अमरीश और संग्राम दोनो ही चाहते थे की बलवीर रणवीर का वफ़ादार बने जैसा की संग्राम अमरीश का वफादार था लेकिन वक़्त को कुछ और ही मंजूर था. बलवीर अपने से पंधरा साल छोटी फुलवा के साथ खेला करता था. बलवीर को हमेशा ही फुलवा की ही फिक्र रहती थी.ताकत तो बलवीर में भी संग्राम जैसी ही थी.लेकिन वो ताकत फुलवा की रक्षा के लिए ही खर्च होती थी.लोगो को लगता था की बलवीर फुलवा को अपनी बहन समझता है.शायद हा भी और ना भी क्योकि वक़्त के साथ साथ जब फुलवा जवान हुई तो सब कुछ बदलने लगा.रणवीर और बलवीर दोनो ही फुलवा की जवानी के पीछे दीवाने होने लगे थे.फुलवा थी ही इतनी आकर्षक .कम उम्र में ही उसके जिस्म में भराव आने लगा था. बलवीर तो उसे

दिल से चाहता था लेकिन रणवीर की निगाहे उसके जिस्म में रहती थी.वो भी उससे 15 साल बड़ा था और ना जाने कितनी लड़कियो की इज्जत उसने अपने हाथो से उतारी थी.लेकिन फुलवा कभी उसके हाथ नही आती थी.उसके बीच का सबसे बड़ा रोड़ा था फुलवा की मा और बलवीर…....

फुलवा पलट कर बलवीर के तरफ देखती है जो की उसके बाजू में सोया हुआ था.सही मायने में मर्द था बलवीर.चौड़ी छाती ,गठी हुई भुजाएं ,ताकत का जीता जाता नमूना. लेकिन मन से बिल्कुल ही बच्चा.खासकर फुलवा के लिए तो वो बच्चा ही था. फुलवा के मन में उसे देखकर बेहद प्यार उमड़ गया उसने थोड़ा आगे बढ़कर बलवीर के गालो को चूम लीया ..

अभी उसके शरीर से पसीना बह रहा था और कमरे में जल रहे छोटे से दिए की लालिमा में बलवीर का पूरा नग्न शरीर चमक रहा था. फुलवा उसके चेहरे को ही निहारे जा रही थी,क्या क्या नही किया बलवीर ने उसके लिए .उसे तब सहारा दिया जब कोई अपना उसके साथ नही थे. अगर वो नही होता तो ….तो शायद वो भी नही होती …

फुलवा को अब सुमित की याद आयी.ये बलवीर था जो फुलवा से प्यार करता था और वो सुमित है जिससे फुलवा प्यार करती है …

फुलवा की आंखों में फिर से पानी आ गया.उसे याद आया की कैसे वो दिन भर सुमित की बांहो में चंपा बनकर पड़ी रही और ठाकुर ने उसकी बुआ को मरवा दिया.बुआ ने ठिक ही कहा था की सुमित को चंपा की ही रहने दे.शायद एक डकैत के नसीब में एक पुलिस वाले का प्यार नही था.होता भी कैसे सुमित तो चंपा से प्यार करता हैं ना ही फुलवा से …

फुलवा से तो बलवीर प्यार करता है वो भी बिना किसी शर्त के ,बिना कुछ मांग के.....

बलवीर ने तो आज तक कभी फुलवा से उसका जिस्म भी नही मांगा लेकिन फुलवा ही थी जो उसके प्यार को देखकर ही उसे अपना सब कुछ देने को तैयार हो गई थी.और आज भी वो यही सोच रही थी की बलवीर के लिए ये जिस्म क्या ये जान भी दे दु तो कम होगा.....

जिस्म का भोग बलवीर को लगा कर वो बलवीर के अंदर के जानवर को थोड़ा शांत रख पाती थी.लेकिन बलवीर खुद से कभी आगे बढ़ने की कोशिश नही करता और करता तो भी फुलवा के एक बार रोकने पर ही रुक जाता.फुलवा उसे प्यार से देखती जैसे एक मां अपने भूखे बेटे को देखती है,और उसे अपने जिस्म का भोग वैसे ही करवाती जैसे एक मा अपने बेटे को खाना खिलाती है.बलवीर किसी भूखे कुत्ते सा फुलवा के ऊपर टूट पड़ता था. लेकीन वो फुलवा ही थी जो बलवीर के ताकत को ना सिर्फ सह पाती थी बल्कि अपनी जिस्मानी और मानसिक जरूरतों के हिसाब से उसे नियंत्रित भी कर सकती थी …

फुलवा का ध्यान अपने योनि के ऊपर गया जिससे अब भी बलवीर का गढ़ा वीर्य समाया हुआ था.उसने पास ही पड़े एक कपड़े से उसे पोछना चाहा लेकिन फिर ना जाने क्यो रुक गई,वो बलवीर से सटी और उसके गालो पर प्यार से हाथ फेरा..

उसे कुछ आहट सी सुनाई दी ,जब फुलवा ने उस ओर देखा.लेकिन फिर बेफिक्री से बलवीर के सीने में एक चुम्मन किया ,

बलवीर थोड़ा मचला ,और फुलवा ने उसे अपने पास और भी जोरो से खिंच लीया ..बलवीर की आंखे खुल गई..

फुलवा ने फिर से बलवीर के औजार को पकड़ा जो की सोया हुआ होने के बावजूद भी इतना बड़ा लग रहा था की किसी लड़की की गहराई में पहुच जाए...

फुलवा के हल्के हाथो से सहलाने से उसका औजार फिर से फुंकार मारने लग.फुलवा अपने होठो को बलवीर के कानो के पास ले गई,

‘‘और घुसना है क्या ‘‘

बलवीर की नजर वैसे ही ललचाई थी जैसे किसी बच्चे की चाकलेट को देखकर ललचाती है…

फुलवा को उसकी उस नजर को देखकर ही हँसी आ गई ,और उसके औजार के पकड़ कर अपने सिर को नीचे किय.

जैसे बलवीर जन्नत में पहुच गया हो ,फुलवा के होठो की गर्मी से उसका औजार फिर से फुंकार मारने लगा था .फुलवा ने अब फिर से औजार को उसी योनि में डाल लीया जिसमे अब भी बलवीर का वीर्य भरा हुआ था.बलवीर को अपने ही वीर्य का ठंडा अहसास हुआ और ये सोचकर ही उसके औजार में अधिकतम अकड़ आ गई की अभी तक फुलवा ने उसके वीर्य को साफ नही किया था…

दोनो की कमर फिर से मिल गई और दोनो फिर से एक अलग दुनिया की सैर में निकल पड़े ……..

फुलवा अभी बलवीर की आगोश में थी वही सुमित अपने ही ख़यालो में खोया हुआ था.रात का सन्नाटा उसे सोने नही दे रहा था.वो बेचैन था. हर एक कड़ी को जोड़ने की नाकाम कोशिश करता हुआ वो और भी बेचैन हो जाता था ...

आखिरकार कुछ पेग पी लेने के बाद वो अचानक ही अपने कुर्सी से उठ खड़ा हुआ और ना जाने क्या सोचकर कही निकल गया.जंगलों के बीच उसकी साइकिल चल रही थी ,उस सुनसान जंगल के उबड़खाबड़ रास्ते के लिए ही उसने ये छोटी सी स्पोर्ट साइकिल ली थी.जुगनुओं की झिंगुरिओ की आवज से माहौल और भी डरावना हो रहा था. लेकिन सुमित के दिमाग में कोई भी डर नही था.वो बेख़ौफ़ था. लेकीन अधीर भी ,उसके दिमाग में बार बार वही तस्वीर आ रही थी जिसे उसने आज धर्मराज के घर में देखा था.वो फुलवा की तस्वीर जिसमे वो एक बड़ा सा पिस्तौल लिए खड़े थी ,और पीछे का वो मंदिर ....

पहाड़ की चोटी में बना हुआ वो मंदिर ऐसे तो तस्वीर में बहुत ही छोटा सा दिखाई दे रहा था.लेकिन फिर भी वो सुमित के दिमाग में बस चुका था. और वो फुलवा की उस मंदिर से दूरी का अंदाजा लगा रहा था. तस्वीर पहाड़ी के नीचे से नही बल्कि सीधी ऊँचाई से खिंची गई थी.मतलब था की किसी दूसरी पहाड़ी से.क्योकि तस्वीर में वो मंदिर फुलवा के नीचे दिख रहा था. मतलब की आसपास की कोई पहाड़ी जो की उस मंदिर वाली पहाड़ी से ऊंचा होगा.सुमित इतने देर से यही सोच रहा था की आखिर वो कौन सी पहाड़ी होगी. जंहा फुलवा अपने पूरे गैंग के साथ छुपी होगी ..

ऐसे तो उसे सुबह तक का इंतजार करना था. लेकिन ये उत्तेजना ही उसे सोने नही दे रही थी और वो अपनी साइकिल लेकर निकल पड़ा था...

दो घंटे की मशक्कत के बाद वो उस मंदिर वाली पहाड़ी के नीचे खड़ा था. और ध्यान से बाकी सभी पहाड़ी को देख रहा था.उसने अपना नक्षा निकाला और आसपास की ऊची पहाड़ी खोजने लगा. टॉर्च की रोशनी से आसपास के कीड़ो ने उसे जरूर परेशान किया लेकिन आखिर उसे समझ में आ ही गया की क्यो फुलवा ने उस जगह को चुना होगा...

अपनी साइकिल झड़ियो में छिपा कर वो पहाड़ में चढ़ना शुरू कर दिया.बड़े छोटे पत्थरो का सहारा लेकर वो आगे बढ़ता गया.चांद की रोशनी ही उसकी मददगार थी.

पत्थर के ऊपर सोए हुए बंदुखधरि को देखकर उसे ये निश्चित हो गया की फुलवा यही कही होगी.....परिस्थिति तो ऐसी थी की उसे डरना चाहिए था.लेकिन फिर भी उसके दिल दिमाग में ऐसा जूनून था की उसे डर लेशमात्र भी नही हो रहा था.वो खुद भी अपने किये पर अचंभित हो रहा था. वो मंजिल की ओर ऐसे बढ़ रहा था जैसे कोई शक्ति ही उसे उस ओर खिंच रही हो ...

वो पहाड़ी के बीच तक आ चुका था. कुछ घोड़े और समतल जगह भी उसे दिखाई दे गई.एक छोटे से गुफा नुमा जगह से कुछ रोशनी छन कर आ रही थी जैसे अंदर दिया जलाया गया हो.और बाहर बस लकड़ियों से बनाया गया एक दरवाजा था जिससे अंदर देख पाना बहुत ही आसान था ...वो हल्के कदम से और बहुत ही आहिस्ते आहिस्ते उस ओर बड़ा.अंदर का नजारा देखकर वो दंग ही रह गया.क्योकि अंदर उसकी सपनो की रानी पूरी नग्न किसी और लंबे चौड़े मर्द के साथ लेटी हुई दिखाई दी…

वो वही लड़की थी जिसके आगोश में उसने पूरी सुबह से दोपहर बिताई थी.या वो इसकी जुड़वा बहन थी.सुमित दोनो में बिल्कुल भी फर्क नही कर पा रहा था. अभी फुलवा छत को देख रही थी जैसे किसी ख्याल में खोई हो …

पुलिस रिकार्ड को याद करके सुमित को याद आया की फुलवा के बाजू में सोया हुआ शख्स कोई और नही बल्कि फुलवा का वफादार और संग्राम का बेटा बलवीर है..

फुलवा उसके ओर पलटी और बलवीर को प्यार भरी निगाहों से देखने लगी,

सुमित को पता नही क्यो लेकिन इतनी जलन सी महसूस हुई की वो वँहा से जाने को हुआ और इसी में एक गलती उससे हो गई वो दरवाजे से टकरा गया.अचानक ही फुलवा पलटी और जैसे दोनो की नजर मिल गई,..

सुमित तो जैसे किसी मूर्ति सा स्थिर हो गया था. फुलवा ने थोड़ी देर ही उसे घूरा जैसे उस अंधेरे में देख रही हो की वो कौन था और अनायास ही उसके होठो में मुस्कुराहट सी आ गई ..वो बलवीर की ओर हुई और उसकी छाती को चूमने लगी …

सुमित ये समझ नही पा रहा था की फुलवा ने उसे देखा की नही.कमरे में पर्याप्त रोशनी थी की सुमित फुलवा को देख पा रहा था. वही बाहर चांद ने इतनी चांदणी बिखेर दी थी कोई शख्स किसी को देखकर पहचान जाए.लेकिन इतनी भी नही की उस लकड़ी के दरवाजे के बाहर से झाकता हुआ शख्स अंदर से दिखाई दे जाए …

लेकिन अगर फुलवा ने सुमित को नही देखा तो वो मुस्कुराई क्यो ???

ऐसा सुमित को क्यो लगा की फुलवा उसकी आंखों में ही देख रही थी ..

सुमित बस इसी सोच में था की बलवीर भी उठ गया था और दोनो की प्रेम लीला चालू हो गई थी.फुलवा ने बलवीर के औजार को अपने मुह में ले लीया था और उसकी आंखे बार बार उस आंखों से मिल जाती थी जो की बाहर से उन्हें झांक रहा था ….

सुमित के दिल में तेज दर्द सा होने लगा था. एक अजीब सी जलन उसके अंदर होनी लगी.मन किया की अभी पिस्तौल निकाल कर दोनो को उड़ा दु .लेकिन ...वो फिर से

घबराया.वो जल्दबाजी में पिस्तौल ही भूल आया.था. जब जब फुलवा और सुमित की आंखे मिलती थी फुलवा मुस्कुरा देती.सुमित को अब यकीन हो गया था की फुलवा ने उसे यंहा देख लीया और शायद पहचान भी लीया है ……..

सुमित को ये दर्द क्यो हो रहा था. शायद इसलिए क्योकि उसे अभी फुलवा में चंपा का अश्क दिख रहा था. और अपनी चंपा को किसी दूसरे मर्द की बांहों में देखकर उसका खून जल रहा था.वो खुद को बार बार समझा रहा था की ये चंपा नही बल्कि फुलवा है. उसकी चंपा ऐसा नही कर सकती…

और अगर फुलवा ने उसे देख लीया था तो वो उसपर हमला क्यो नही कर रही थी...... बल्कि उसे जलाए जा रही है ..

क्योकि शायद वो सुमित से प्यार करती है.लेकिन प्यार करने का ये कौन सा तरीका था की खुद के जिस्म को दूसरे के सामने सौपते हुए दिखाना..

सुमित को याद आया जो धर्मराज ने उससे कहा था की फुलवा उससे बेहद प्यार करती है ...लेकिन यंहा तो ये देख कर नही लग रहा था की फुलवा उससे प्यार करती होगी …

‘‘साली वेश्या ‘‘सुमित ने मन में ही कहा और वँहा से निकल गया …

मन में कई टन जितना बोझ लेकर ,आज फुलवा इतने पास होते हुये भी वो कुछ नही कर पाया लेकिन अब वो पुलिस के साथ आएगा और साथ ही फुलवा की ईट से ईट बजा देगा ….

वो जल्दी से नीचे उतारना चाहता था .वो भागता हुआ उतरने लगा…

तेजी ने उसकी पोल खोल दी और एक डकैत चिल्ला पड़ा

‘‘कौन है वँहा ‘‘

सुमित हड़बड़ाया और पैर के फिसल जाने से गिरता हुआ एक पेड़ से जा टकराया…..

माथे से खून बहने लगा था और उसका सर घूमने लगा.धीरे धीरे उसकी आंखे बंद हो गई …….

“अरे मेरी जान को चोट तो नही आयी “

सुमित चौक गया क्योकि ये चंपा की आवाज थी ,चंपा या फुलवा ??

उसने झट से अपनी आंखे खोली..

वो किसी की गोद में पड़ा हुआ था.दीये की रोशनी में वो उसे पहचान सकता था.जिस्म नग्न ही था और होठो में वही मुस्कान और सामने खड़ा बलवीर उसे गुस्से से घूरा जा रहा था...बलवीर भी नग्न ही था जिससे उसका वो गठीला विशालकाय बदन अब सुमित के सामने था…

“बलवीर तुम जाओ ..”

फुलवा ने हुक्म दिया ..

“तुम्हे अकेले इसके साथ छोड़कर ???? “

बलवीर ने खा जाने वाली निगाह से सुमित को देखा..लेकिन सुमित के चेहरे में एक शिकन तक नही आयी ..

“तुम फिक्र मत करो मैं संभाल लुंगी …”

बलवीर सुमित को घूरता हुआ वँहा से निकल गया ..

“ऐसी क्या जल्दी थी की रात में ही आ गए मुझसे मिलने “

फुलवा की हँसी से सुमित का खून जल गया.वो झटके से उठा ,उसका चेहरा गुस्से से तमतमा रहा था …

“ओह मेरी जान गुस्सा है “

फुलवा की बात सुमित को ऐसी लगी जैसे वो उसे चिढ़ा रही हो ..

“चुप कर साली वेश्या ..तेरे ठिकाने का मुझे पता चल चुका है अब देखना मैं तेरे गिरोह की ईट से ईट बजा दूंगा ..”

सुमित का चेहरा गुस्से से तमतमा गया था.लेकिन फुलवा जोरो से हँस पड़ी…

“ओह मेरा बच्चा गुस्सा है. लेकिन पुलिस को तुम तब बलाओगे जब तुम यंहा से जाओगे...तुम्हे क्या लगता है की तुम खुद ही यंहा आये हो …?वो तस्वीर मैंने ही रखवाई थी मुझे पता था की तुम इस मंदिर के बारे में जानते हो और तुम जरूर अपना दिमाग लगाओगे और मुझे ढूंढते हुए यंहा तक आ जाओगे लेकिन …….लेकिन सोचा नही था की

इतनी जल्दी.बहुत ही बेचैन था मेरा बाबू मुझसे मिलने के लिए ,बहुत प्यार करते हो मुझसे ..”

फुलवा के होठो पर एक कमीनी सी मुस्कान थी …

“प्यार ??? तुझे लगता है की मैं तुझसे प्यार करता हु ?? साली वेश्या …”

सुमित का चेहरा गुस्से से जल रहा था लेकिन फुलवा के होठो पर अब भी वही मुस्कान थी ..

“मैं चंपा से प्यार करता हु तुझसे नही ,और जितना मैं उससे मोहोब्बत करता हु उतना ही तुझसे नफरत ..”

सुमित की दशा को देखकर फुलवा खिलखिलाई ..

“ओह मेरी जान लेकिन तुम किस चंपा से मोहोब्बत करते हो 7745 वाली से या 4577 वाली से ….”

फुलवा जोरो से हँस पड़ी और सुमित पिला पड़ गया …

“बेवकुफ.....चंपा नाम की कोई भी लड़की नही है जो भी है बस मैं ही हु.तुम्हारी चंपा भी और तुम्हारी फुलवा भी …”

फुलवा जोरो से हँसने वाली थी लेकिन रुक गई कारण था सुमित के आंखों में आया हुआ आंसू …

सुमित को लगा जैसे उसकी पूरी दुनिया ही खत्म हो गई.वो नीचे बैठ गया था और सर पकड़े हुए रो रहा था. विस्वास ही नही हो रहा था की उसके साथ ऐसा कुछ हुआ है ...वो बार बार चंपा को याद कर रहा था.उसने उसकी आंखों में अपने लीए प्यार देखा था उसके दिल की धड़कने सुनी थी वो गलत कैसे हो सकती थी ???चंपा का सुमित के लिए प्यार गलत कैसे हो सकता था.सुमित का दिल ये मानने को तैयार हि नही था की चंपा नाम की कोई लड़की नही है.या फुलवा ही चंपा बनाकर उस धोखा दे रही थी …….

सुमित की हालत देखकर फुलवा की आंखों में भी आंसू आ गए …

“मुझे माफ कर देना सुमित लेकिन ...मैं तुमसे इतना प्यार करती हु की तुम्हे पाने का मुझे और कोई रास्ता नही दिखा “

सुमित तुरंत ही खड़ा हो गया और पास ही पड़ी हुई बंदूक उठा लीया और सीधे फुलवा पर तान दिया …

“बोल मेरी चंपा कहा है “वो गरजा …

उसे कमरे के बाहर बड़ी हलचल सी महसूस हुई ,लगा की बाहर फ़ौज का जमावड़ा हो चुका है …

“बोल नही तो अभी तेरे सिने में ये सारी गोलीयां दाग दूंगा “

फुलवा के चेहरे में कोई भी शिकन नही थी बस आंखों में थोड़े आंसू थे..

“इतना प्यार करते हो तुम मुझसे ...मैं ही तो तुम्हारी चंपा हूं ..”वो रोते हुई बोली

सुमित को लगा की उसका वो रोना बेहद असली है.जैसे दिल से ही निकल रहा हो.लेकिन वो कैसे मान सकता था की ये ही उसकी मासूम सी चंपा है ,नही ये फुलवा थी. और वो उसे फंसा रही थी ...सुमित अपने दिल को बार बार समझाने लगा ..

“देखो मैं किसी को नही बुलाऊंगा ,और चंपा के साथ सब कुछ छोड़कर चला जाऊंगा ,लेकिन कह दो की मेरी चंपा का भी अस्तित्व है ,वो है...मैं जानता हु की तुम दोनो अलग अलग हो “सुमित सुबकने लगा ..

“तुम चंपा से प्यार नही करते अगर करते तो ठाकुर को मारने में मेरी मदद करते “

“चंपा किसी को नही मारना चाहती ..”

“लेकिन तुम तो चाहते हो ...मुझे मारना चाहते हो ,इसीलिए तुमने ठाकुर से हाथ मिलाया ..”

“मैं ठाकुर के करीब जाकर उसे फसाना चाहता था जिससे उसे उसके कर्मो की सजा कानून दे सके …”

फुलवा हँस पड़ी …

“कानून क्या सजा देगा,सजा तो मैं उसे दूंगी …लेकिन याद रखो सुमित तुम चाहे जिससे प्यार करते हो... मैं तुमसे ही प्यार करती हुई और मैं तुम्हे पा के रहूंगी …चाहे इसके लिए मुझे चंपा को मारना क्यो ना पड़े ”

फुलवा शेरनी जैसे गरजी …

सुमित के होठो में मुस्कान आ गई …

“मतलब की मेरी चंपा है ,और मेरे रहते तुम उसे छू भी नही सकती ,”

सुमित ने वो दरवाजा खोल दिया ,बाहर सभी की बंदूक की नली सुमित के ऊपर ही थी ,सूर्य की धुंधली सी किरण फिजाओं में फैल चुकी थी ,और फुलवा के सभी सिपाही तन कर खड़े थे सभी की नजर सुमित के ऊपर ही थी …

बलवीर अब भी उसे गुस्से में घूर रहा था ….

‘‘खबरदार जो किसी ने कोई भी जुर्रत की तुम्हारी सरदार को यही उड़ा दूंगा ‘‘सुमित गरजा ..

वो कमरे से बाहर आ चुका था साथ ही फुलवा भी कमरे से बाहर आ गई ,अभी भी सुमित के बंदूक की नली फुलवा के ऊपर ही थी .फुलवा अब भी नग्न थी और सुबह की किरणों में उसका जिस्म चमक रहा था ,लेकिन गिरोह के सभी सदस्यों के सामने नग्न खड़ी होने पर भी उसके चेहरे में कोई भी शर्म नही थी. बल्की बस एक मुस्कान के साथ वो सुमित को देख रही थी ,सुमित को मन हुआ की अभी उसके सीने में सारी गोलीयां डाल दे लेकिन वो ये नही कर सकता था …

वो धीरे धीरे पीछे हट रहा था और बंदूक की नोक पर फुलवा को लेकर वँहा से निकल जाना चाहता था ..

अचानक ही बलवीर ने पास पड़ा हुआ डंडा उठा लीया ,सुमित ने तुरंत उसकी ओर बंदूक घुमा कर गोली चला दी ……………………..

और सभी जोरो से हँस पड़े. क्योकि बंदूक में गोली ही नही थी .सुमित बंदूक का ट्रिगर दबाता रहा ....और सभी उसकी मूर्खता पर जोरो से हँस रहे थे. यंहा तक की फुलवा भी उसे देखकर हँसने लगी थी.लेकिन बलवीर अब भी गुस्से से उसे घूरे जा रहा था.उसने आपके हाथो में पकड़ा हुआ डंडा उठाया और सीधे सुमित के उनपर घुमा दिया.जो की सीधे ही उसके सर में आकर लगा…

सुमित का सर फिर से चकरा गया था और वो फिर से धड़ाम से नीचे गिर गया…..

एक छोटा कमरा और एक छोटी सी खिड़की ,जिसमे से आती हुई छनी हुई धूप ने सुमित को होशं में लाया.हाथ पाव बंधे हुए थे और कुछ आवाजे सुनाई दे रही थी.वो सरकता हुआ खिड़की के पास आ गया ……

“तुम्हे उसे छोड़ देना चाहिए फुलवा ....तुम समझने की कोशिश तो करो “

“नही समझना है मुझे कुछ. वो मेरा है और मैं उसे किसी के साथ भी नही बाट सकती चाहे वो मेरी बहन ही क्यो ना हो “

“मेरी बात मानो क्या तुम मुझे इतना भी नही मानती “

“मानती हुई डॉक्टर लेकिन इस बात के लिए नही …”

फुलवा की बात सुनकर डॉक्टर बॅनर्जी और त्रिवेदी दोनो ही मायूस से दिख रहे थे.सुमित उन्हें देख सकता था. सामने फुलवा थी जो अपने तेवर में थी और डॉक्टर और त्रिवेदी जो की फुलवा को बचपन से जानते थे उनकी भी कोई कदर नही कर रही थी ..

“क्या मैं उनसे मिल सकता हु “त्रिवेदी ने कहा और फुलवा उसे देखने लगी

“देखो फुलवा हो सकता है की हम उसे समझा ले ...और तुम्हारी कुछ मदद हो जाए ठाकुर को मारने में “

डॉक्टर बॅनर्जी ने अपना दाव फेका ..

“ठिक है मैं बचपन से आप दोनो की कद्र करती हुई बस इसलिए …”

उसने एक आदमी की ओर इशारा किया और वो दोनो को उस कमरे के पास ले आया. थोड़ी ही देर में दरवाजा खुला.सुमित असहाय सा दोनो को देख रहा था …

त्रिवेदी ने दरवाजा बंद कर दिया ..

“चंपा ठीक तो है ना उसे कुछ किया तो नही फुलवा ने “

सुमित का पहला सवाल था जिसे सुनकर त्रिवेदी और डॉक्टर दोनो के होठो में मुस्कान आ गई ..

“वो ठीक है तुम्हे उसकी फिक्र करने की जरूरत नही है.वो मेरे साथ है शहर में ...और तुम फिक्र मत करो हम तुम्हे छुड़ा लेंगे “

डॉक्टर की बात से सुमित को थोड़ी राहत तो मिली लेकिन फिर भी वो बेचैन था ..

“त्रिवेदी पुलिस को बुला ले और यंहा पर अटैक करवा …”

सुमित की बात से त्रिवेदी और डॉक्टर दोनो ही चुप हो गए

‘‘नही सर हमे पता है की ठाकुर ही गलत है. फुलवा को मारने का मतलब है की ठाकुर को फिर से पूरी ताकत मिल जाना.हम ये नही कर सकते ..अगर करना होता तो कब का कर चुके होते …’’

सुमित को समझ आ चुका था की त्रिवेदी और डॉक्टर दोनो ही फुलवा से मिले हुए है ..

‘‘लेकिन तुम देख रहे हो ना की वो अपने ही धुन में है और अब तो आप लोगो की बात भी नही मान रही है ‘‘सुमित बौखला गया था ..

‘‘तुम फिक्र मत करो सुमित हमारे पास एक दूसरा प्लान है तुम्हे छुड़ाने का .तुम यंहा से बाहर निकल जाओ और चंपा के साथ नई जिंदगी बिताओ बस ...ठाकुर और फुलवा को अपनी जंग खुद ही लड़ने दो …’’

सुमित बिल्कुल ही स्तब्ध सा दोनो को देखने लगा लेकिन कुछ भी नही कह पाया ……

वो दिन का ही समय था सुमित को यंहा कैद हुए तीन दिन हो चुके थे ,अभी अभी फुलवा और बलवीर कही गए थे ,वो खिड़की के पास बैठा हुआ सब कुछ देख रहा था.और बस किसी मदद की तलाश में था ....

वो बैठा बैठा सो गया था की उसे फिर से घोड़ो की आवाज सुनाई दी ..उसने देखा की फुलवा वापस आ चुकी है लेकिन इस बार उसके साथ बलवीर नही था .घोड़े से उतर कर वो सीधे सुमित के कमरे में आयी ..

"क्यो मेरी जान कैसे हो "

सुमित गुस्से से उसे देख रहा था

"अरे मेरी जान को बहुत ही गुस्सा आया .."

फुलवा के खिलखलाने की आवाज से पूरा कमरा गूंज गया.उसकी बात सुनकर बाहर खड़े हुये उसके आदमी भी हँस रहे थे .ये सुमित के लिए रोज का काम हो गया था. कभी कभी फुलवा उसके कमरे में आया करती थी और उसे यू ही सताया करती थी ..

"सुनो इसके हाथ पैर अच्छे से बांध कर इसे घोड़े पर बिठा दे .."

फुलवा ने कमरे के बाहर खड़े हुए आदमी से कहा

"लेकिन सरदार इसे आप कहा .."

"मादरठोक जो बोला है वो कर ..."

फुलवा ने सीधे ही पिस्तौल उसके सामने ठिका दिया. वो घबरा कर सुमित के बंधनो को और कसने लगा.और कुछ लोगोने उसे उठा कर फुलवा के घोड़े पर बिठा दिया.फुलवा उसके पीछे जा बैठी और घोड़ा फिर से चल पड़ा.वो पहाड़ी से नीचे आ चुके थे अभी तक फुलवा ने एक शब्द भी नही कहा था ...

नीच उतर कर वो जंगल की तरफ जाने लगे ....

थोड़ी दूर ही गए होंगे की सुमित की नजर उस गाडी पर पड़ी जो की वँहा खड़ी हुई थी ...त्रिवेदी और डॉक्टर को देखकर सुमित आश्चर्य में पड़ गया था ......

उसके सारे बंधन खोल दिए गए.वो उस लड़की की तरफ देखने लगा जो उसे छुड़ा कर लाई थी ...

उसकी आंखों का आंसू ही उसकी सच्चाई बता रहा था ..

"चंपा "सुमित ने अपनी कांपती हुई आवाज में कहा

वो रोते हुए उसके गले से लग गई ....

वो ऐसे गले मील जैसे उनके लिए समय थम ही गया था और जंहा में और कुछ भी नही बचा था ..

“अब आप लोगो का हो गया हो तो चले “त्रिवेदी ने हल्की आवाज में कहा

“जब फुलवा को ये पता चलेगा तो वो बौखला जायेगी और अब हमारा भी इस जगह रहना ठीक नही …”त्रिवेदी की आवाज से ख़ौफ़ साफ समझ आ रहा था

“उसे पता चल जाएगा की तुम्हे किसने छुड़ाया है ..खैर छोड़ो चलो जितनी जल्दी हो सके हमे यंहा से निकलना होगा ..”

डॉक्टर फिर से गाड़ी में बैठ गया.लेकिन पता नही सुमित को क्या हो गया था वो कभी डॉक्टर को देखता तो कभी चंपा को और कभी त्रिवेदी लेकिन वो एक कदम भी हट नही रहा था …

सभी के चेहरे पर सुमित के इस व्यवहार दो देखकर चिंता की लकीर छा गई थी …..

“सुमित चलो “चंपा ने उसके हाथो पर जोर डाला

“नही ...ऐसे नही. अगर ऐसे गया तो फुलवा हमे फिर से ढूंढ लेगी और फिर शायद वो हो जाए जो नही होना चाहिए.वो ठाकुर से बदला लेने की बजाय हम सब से बदला लेगी ...मैंने उसकी वो दीवानगी देखी है ,मैं उसका पागलपन जानता हु …”

“लेकिन सुमित हम कर भी क्या सकते है ...क्या तुम मेरा वो सपना पूरा नही करोगे जो हमने साथ में देखा था.मे एक घर चाहती हु सुमित ,तुम्हारा साथ चाहती हु ,हम दोनो इन सबसे कही दूर चले जायेंगे …."

“नही चंपा ऐसे नही.मैं तुम लोगो की जिंदगी को दाव पर नही लगा सकता ……..मुझे मुकाबला करना होगा …”

“किसका “

डॉक्टर ने चौक कर कहा

“फुलवा और उसके गिरोह का “

“तुम पागल हो गए हो ..?”

लगभग तीनो ने एक साथ ही कहा

“हा थोड़ा सा “सुमित के चेहरे में मुस्कुराहट फैल गई और उसने त्रिवेदी के कमर में लगा हुआ वॉकी टौकी निकाल लीया ……

कुछ ही देर में वँहा पुलिस और ठाकुर के आदमियों की कई गाड़िया लग चुकी थी.सभी इतने खामोशी में हो रहा था की ऊपर पहाड़ में बैठे किसी भी शख्स को इसकी भनक ना हो.चंपा, त्रिवेदी और डॉक्टर की सुमित ने एक नही सुनी उसे कोई धुन चढ़ गई थी.सुमित ने ही पूरा प्लान बनाया था और पहाड़ी को पूरी तरह से घेर लीया गया था …

“तुम में से कोई भी वँहा नही जाएगा “

सुमित ने ठाकुर के बेटे युवराज से कहा…

और इससे पहले वो कुछ भी बोले सीधे उसके माथे पर पिस्तौल ठिका दिया …

“अपनी ठाकुरगिरी अपने पास रख यंहा मत दिखा ..चुपचाप यंहा बैठा रह …”

युवराज जैसे मचल कर रह गया और अपने साथियों के साथ थोड़ी दूर जाकर बैठ गया.वही सुमित सभी पुलिस वालो को समझने लगा की कैसे पहाड़ी को घेरना है और बिना किसी को शक हुई अपनी पोजिशन लेनी है …

‘‘सरदार आपने ही तो कहा था की उसे मेरे साथ भेजो ‘‘

‘‘मादरठोक ‘‘

एक करारा झापड़ उस आदमी के गालो में पड़ा जिसने सुमित को आजाद किया था ….फुलवा की बेचैनी सुमित साफ साफ देख रहा था. वो आधे घंटे से उसकी प्रतीक्षा कर रहा था.अभी वो पूरी तरह के तैयार था और उसके सामने जाने को और वो उसके सामने प्रगट हो गया.लेकिन अब वो अकेला नही था उसके साथ पूरी फ़ौज थी …….

‘‘तो वो वेश्या तुम्हे छुड़ा के ले गई ‘‘फुलवा का चेहरा गुस्से से जल रहा था ..

‘‘उसे और जिसने भी उसका साथ दिया है मैं उसे नही छोडूंगी ‘‘

सुमित ने अपनी पिस्तौल उसके सामने कर दी ..

‘‘अब और नही फुलवा तुम्हारा खेल अब खत्म हुआ ,गिरफ्तार कर लो इसे और इसके बाकी साथियों को ‘‘

सुमित के एक आदेश पर सभी सिपाही भागे.देखते ही देखते सभी के हाथों में हथकड़ी पड़ते गई. बलवीर भी मजबूरी में हथकड़ी पहन चुका था.सभी के हथियार भी जब्त कर लिए गए थे.लेकिन अभी तक किसी ने फुलवा को नही छुवा था. या ये कहे की किसी सिपाही की उसे छूने की हिम्मत नही हो रही थी..

सुमित सभी की इस हरकत को देखता हुआ हंसता हुआ एक हथकड़ी अपने हाथो में लेकर फुलवा को देखने लगा. जो अपने इतनी मेहनत से बनाये हुए साम्राज्य को बिखरता हुआ देखकर आंखों में आंसू लाकर बस हल्की हल्की सी सिसक रही थी.उसकी आंखे गुस्से से जल रही थी.सुमित बस उसे देखकर मुस्कुरा रहा था और बेफिक्र ही हाथो में हथकड़ी लिए उसकी ओर बढ़ रहा था. फुलवा की आंखों में पानी था और उसके हाथ पिस्तौल में कस रहे थे.वो पहाड़ी के एक किनारे जा पहुची थी जंहा से नीचे बस खाई थी.सुमित को होने वाले हादसे की समझ आ चुकी थी.वो इसी डर में था की कही फुलवा खाई में ना खुद जाए …

‘‘फुलवा ठाकुर के किये की सजा मैं उसे दूंगा तुम अब अपने को कानुन के हवाले कर दो ..’’

फुलवा ने ना में सर हिलाया वो खाई के और भी करीब पहुच चुकी थी …

‘‘पुलिस कभी ठाकुर को नही पकड़ सकती सुमित.मेरी बात समझो मुझे जाने दो ठाकुर को अगर कोई रोक सकता है तो वो हु मैं …...सिर्फ मैं……..’’

‘‘तुम्हारी गल फैमी है यह....मैं उसे गिरफ्तार कर सकता हु. मेरे पास उसके खिलाफ सबूत है.बचपना मत करो फुलवा ..’’

‘‘मैं तुमसे प्यार करती हुई सुमित.बस यही कहना था .सच में बहुत ज्यादा प्यार और तुम्हारे लिए कुछ भी कर सकती हु लेकिन ये नही ...भगवान तुम्हे और चंपा को सुखी रखे .उससे कहना की उसकी बहन उससे बहुत प्यार करती थी ..शायद इसीलिए तुम दोनो को जिंदा रखा जबकि तुम दोनो ही मेरे मकसद में सबसे बड़े रोड़े थे …’’

फुलवा सिसक रही थी सुमित के दिल में अजीब सी पीड़ा हुई लेकिन फिर भी उसने अपने इरादे नही बदले थे ...

वो उसकी ओर बढ़ ही रहा था की एक और आवाज आयी …

‘‘इस वेश्या को कैद करके क्या करोगे इंस्पेक्टर इसका काम यही खत्म कर देतो है ‘‘

सुमित पलटा युवराज हाथ में बंदूक लिए मुस्कुरा रहा था

‘‘नही ‘‘सुमित बस चिल्लाया ही था की एक गोली की आवाज आयी और युवराज के हाथो से पिस्तौल दूर जा गिरी ,बलवीर अपने हाथो में लगी हुई हथकड़ी की फिक्र किये बिना ही युवराज पर टूट पड़ा था ,युवराज थोड़ा सम्हला तो फुलवा ने उसके ऊपर बंधूक तान दी ..

‘‘नही फुलवा नही ‘‘

सुमित बस कहता ही रहा और गोलियो की आवाज से पूरा माहौल गूंज गया.फुलवा की पिस्तौल से निकली हुई सभी गोलीयां युवराज को छलनी कर रही थी.सुमित को इसे रोकने का कोई भी जरिया दिखाई नही दिया वो अपने हाथ में रखे हुए पिस्तौल से गोलीयां चलाने लगा जो की सीधे फुलवा को लगी और वो खाई में गिरने को हुई ..

‘‘नही ……….’’

ये एक आवाज नही थी दो थी .एक सुमित की दूसरी बलवीर की दोनो ही खाई की ओर भागे थे ...फुलवा का जिस्म खाई में गिरता हुआ दिखाई दिया.सुमित तो वही रुक गया लेकिन बलवीर नही वो कुद गया उसके हाथ बंधे हुए थे लेकिन फिर भी कुद गया ...अपनी फुलवा को बचाने को कुद गया…..

सुमित बस किनारे में खड़ा देखता ही रहा.आंखों में आंसू और दिल में दर्द लिए बस देखता ही रहा ………….

सुमित के घर का दृश्य ....

“आखिर हुआ क्या था जो फुलवा ठाकुर से इतनी नफरत करती थी.आपकी कहानी तो अधूरी रह गई थी “

सुमित ने त्रिवेदी को कहा.दोनो सुमित के घर पर दारू पी रहे थे.तभी चंपा वँहा आयी और कुछ भुने हुए काजू उनके सामने रख दिया ..

“भाभी जी अगर आपकी इजाजत हो तो आपके पति को थोड़ी देर के लिए ले जाऊ”त्रिवेदी ने शरारत से कहा

चंपा शर्मा गई ..

“क्या त्रिवेदी चाचा आप भी .मैं आपकी बेटी हु. ना की भाभी और अभी हमारी शादी कहा हुई है.इन्हें तो काम से फुरसत ही नही है जो मुझे शादी कर ले “

चंपा की बात से सुमित का चेहरा गंभीर हो गया था ..

“चंपा मैंने फुलवा से वादा किया था की ठाकुर को उसके किये की सजा दिलवाऊंगा ...मुझे उसके खिलाफ ज्यादा से ज्यादा सबूत इकठ्ठे करने है ..जिस दिन ठाकुर सलाखों के पीछे जाएगा उस दिन मैं तुमसे शादी करूंगा ….”

सभी चुप हो चुके थे.अभी फुलवा को गए हुए पंधरा बिस दिन हो गए थे.ना उसकी लाश मिली ना बलवीर की.शायद पहाड़ी के नीचे बहने वाली नदी में दोनो बह गए थे ..

सुमित दिन रात बस ठाकुर के पीछे लगा था. ठाकूर को अपने बेटे के मरने का गम तो था लेकिन साथ ही फुलवा और उसके गैंग के जाने की खुशी भी थी ..

चंपा अब सुमित के साथ ही रहती थी..कभी कभी गीता और धर्मराज उससे मिलने आते थे.सुमित काम में बहुत ही ज्यादा व्यस्त था और उसे मामले को फिर से पूरा समझने की इच्छा पैदा हुई ……

त्रिवेदी और सुमित अब कमरे से बाहर चले गए थे,त्रिवेदी ने एक बिडी सुलगाई ..

“चंपा के सामने ये सब बात मत किया करो ,वो हमेशा से इन सबसे अलग थी ….”

“तो अपनी अधूरी कहानी पूरी करो ..”

सुमित ने उसके हाथो से बिडी ले ली …

त्रिवेदी गहरी सास लेकर कहता गया…….

कहानी वँहा से शुरू करते है जंहा से छोड़ा था ..

भूतकाल फिरसे दिखणे लगता हे ....

हरिया फिर से हवेली में था.लेकिन इस बार वो किन्ही और चीजों के प्रति सजग था. उसके साथी अलग अलग जगहों में छिपकर हवेली में होने वाली गतिविधियों का नुमायना कर रहे थे.

हरिया अंदर जाते हुए डरने का नाटक कर रहा था.वो जानता था की ठाकुर के लोग उसे देख भी रहे है.और रोकने वाले भी नही है ...उसे खुद पर भी हँसी आ रही थी क्योकि अंदर जाते हुए उसे डर तो लग ही नही रहा था.लेकिन नाटक जरूर कर रहा था…

वो सीधे उसी कमरे में पहुच गया जो उसके लिए कुसुम ने मुक़म्मल कर रखा थे.

जब आपको पता हो की कोई आपको देख रहा है तब ऐसी नाटक करना बड़ा ही मजेदार अनुभव होता है.हरिया को बस थोड़ी ही देर इंतजार करना पड़ा …

“ओह तो तुम आ गए “कुसुम आते ही दौड़कर उसके गले से लग गई ..

“ये क्या कर रही हो कोई देख लेगा …”

“यंहा हमे कोई भी नही देख सकता ..”

“फिर भी मैं किसी और से प्यार करता हु”

हरिया ने कुसुम को खुद से दूर करने की कोशिश की. लेकिन कुसुम किसी जोक की तरह हरिया के शरीर से चीपक गई थी ….

उसने अब अपना सर उठाया..

“तो उस दिन जो हमारे बीच हुआ था”

“वो महज एक इत्तफाक था ,उस समय मैं गुस्से में था ..”

कुसुम के चेहरे की मुसकान और भी चौड़ी हो गई..

“तो ये इत्तफाक फिर से हो जाए “

कुसुम ने हरिया के धोती के ऊपर से ही उसके औजार को सहला दिया.ना चाहते हुए हरिया के औजार ने एक फुंकार मार दी और मुह से एक आह सी निकल गई …

“छोड़ो मुझे “

हरिया ने जोर का झटका दिया और कुसुम उससे अलग हो गई …

“देखो कुसुम मैं तुम्हारी बहुत इज्जत करता हु.जिस तरह से तुमने अपनी जान पर खेलकर हमारी मदद की है मैं उसके लिए तुम्हारा अहसान मंद भी हु.लेकिन ...मेरी एक बीवी है जिससे मैं बहुत ही महोब्बत करता हु …”

कुसुम के आंखों में थोड़ा पानी आया..

“इतनी खुशनशिब है झाबु जो उसे तुम्हारे जैसा पति मिला है ….लेकिन हमारे परिवार में मर्द दो-तीन शादी करते है.फिक्र मत करो मैं भी तुम्हारी पत्नी बन जाऊंगी .”कुसुम ने चहकते हुए कहा ,

फिर थोड़े धीरे स्वर में बोली

“या फिर रखैल ..जो बनाना चाहो “

हरिया उसकी बात सुनकर ही कांप गया था.कुसुम के आंखों का आंसू बता रहा था की उसके दिल में हरिया के लिए क्या है.क्या ये महज शाररिक सुख की कामना थी या कुछ और ???

हरिया ना तो समझ पाया ना ही उसे समझना था…

“मुझे झाबु और लतिमा से मिलना है …”

कुसुम के चेहरे में दर्द भरी मुस्कान खिल गई..

“जरूर हजूर …”

वो धीरे धीरे चलते हुए उसके पास आयी और गालों में एक प्यार भरा चुंबन दिया

“मैं समझ चुकी हु की तुम मुझे अपनी पत्नी तो नही बनाओगे.लेकिन कम से कम रखैल तो बना ही सकते हो ..”

हँसते हुए उसने हरिया के औजार को मसल दिया.और शरारत भरी हँसी हँसते हुए वो वँहा से निकल गई …

कुसुम की इस शरारत से हरिया के चेहरे पर भी ना चाहते हुए एक मुस्कान आ गई.

हरिया झाबु के साथ उसी बाथटब में लेटा हुआ था.जिसमे वो उस दिन लेटा था ..दोनो एक दूसरे में खो गए थे.

इधर हवेली के एक दुसरे कमरे में ....

“वो साला मेरे ही घर में है और मेरी बीवी उसे मदत कर रही है .मादरठोक को यंही मार डालने का मन करता है.या उसके सामने ही उन तीनो लड़कियों को काट डालूंगा …”

अमरीश ने शराब को एक सांस में अपने अंदर पहुचा दिया …

संग्राम उसे सांत्वना देता है ,

“अभी ना जाने कितने हितैषी होंगे उसके इस हवेली में.सभी को धीरे धीरे ढूंढना बहुत ही जरूरी है. वरना क्या पता की हम उसे मारने की सोच रहे है और वो हमारे ही घर में हम पर ही भारी पड़ जाए “

संग्राम की बात से अमरीश शांत तो हो गया लेकिन उसके कानो में कुसुम की वो आवाज अब भी साफ साफ गूंज रही थी जिसे उसने आज सुना था.उसकी बीवी उसके दुश्मन की रखैल बनना चाहती है …….

अमरीश गुस्से को पीने के कारण कांप रहा था.लेकिन फिर भी मन के किसी कोने में उसके अंदर स आवाज आ रही थी की दिमाग से काम ले.जल्दबाजी में सब कुछ गड़बड़ हो जाएगा …..

“साला इतना महंगा बाथरूम बनवाया था. तीन लाख का झूमर लगवाया था.एक लाख का तो वो टब ही है और साले उनमे वो हरिया अपनी बीवी के साथ मौज कर रहा होगा.ना जाने कल मेरी बीवी भी ....इसकी मा की.... …”

अमरीश ने अपने हाथ में पकड़े हुए कांच के गिलास को जोरो से फेका. जो दीवाल से टकरा कर चकनाचूर हो गया ..”

संग्राम को उसकी बात पर थोड़ी हँसी भी आयी. लेकिन वो इसे अपने तक ही दबा कर रह गया..

“कुछ तो करना होगा संग्राम. हम ऐसे हाथ पर हाथ धरे तो नही बैठ सकते ना “

“बेशक ...हमे कुछ करना तो होगा ठाकुर साहब.लेकिन अभी नही ...बेफिक्र रहिए और किसके लिए रो रहे हो वो लड़की जो कभी मन से आपको अपना पति स्वीकार ही नही कर पाई.क्या आश्चर्य है की वो आपसे धोखा कर रही है. आपने भी तो उसके बाप के गले में तलवार रखकर उसे उठाया था.वो कैसे आपको प्यार कर सकती है.जिस प्यार और वफ़ा की आप उससे कल्पना कर रहे हो क्या अपने कभी उसे दिया है ..”

अमरीश को लगा जैसे किसी ने उसे आईना दिखा दिया था.वो बौखला गया था लेकिन वो संग्राम था कोई और होता तो शायद अमरीश उसे गोलियो से भूंन देता...संग्राम के साथ यही दिक्कत थी वो बेबाक था. चाहे ठाकुर ही क्यो ना हो वो उसकी गलतियों को गिना देता.लेकिन ठाकुर उसे बर्दास्त करता था.क्योकि उसे भी पता था की ऐसा वफादार और सच्चा आदमी उसे नही मिल सकता.........

रात के दो बजे होंगे.संग्राम अपनी बीवी के बांहो में था.वो अभी अभी पति पत्नी वाले काम से निपटे थे.थके होने के बावजूद संग्राम कभी अपनी पत्नी को निराश नही करता था.वो एक बजे तक ठाकुर के पास ही था.काम से थका हुआ आया और बीवी को देखकर उससे प्यार करने लगा….

संग्राम छत को ताक रहा था.उसकी बीवी उसके नंगे छाती में उगे हुए काले बालो को सहला रही थी ..जिस्म की कोमलता संग्राम के मर्दाना जिस्म से सटी हुई थी और दोनो के प्यार के परिणाम स्वरूप उत्पन्न पसीने की महक दोनो को एक दूजे के प्रति और भी कामुक बना रही थी …

"क्या हुआ कुछ सोच रहे हो ,सब ठीक तो है ना "

"हम्म सब ठीक है.लेकिन कभी कभी लगता है की ठाकुर की वफादारी करने से अच्छा कोई दूसरा काम देख लू …"

"क्या हुआ "

"कितने घिनोने काम करना पड़ता है मुझे यंहा.सच कहु तो दिल गवाही नही देता लेकिन फिर सोचता हु की ये ही मेरा काम है. जो हम पुरखो से करते आ रहे है...लड़ाई.इसके अलावा हमे आता ही क्या है.कभी राजाओं के सेवक थे.तो अब ठाकुर के है. मेरा बेटा भी यही करेगा.हमारे खून में वफादारी है जिसके साथ रहे वो गलत हो या सही साथ नही छोड़ते,..."

संग्राम की बीवी उसके सीने को प्यार से चूमती है ..

"मैं अपने बेटे को ठाकुर का वफादार नही बनाऊँगी. वो तो उसका वफादार होगा जो नेक हो और जो ठाकुर जैसे लोगो को ही खत्म कर दे "

संग्राम आश्चर्य से अपनी बीवी को देखता है ,जो उसे देख कर बस मुस्कुरा रही थी ………..

हरिया जंगल में बैठा हुआ इस बात पर विचार कर रहा था की क्या झाबु ,लतिमा और कुसुम को इस बात के लिए आगाह कर दिया जाय की अमरीश उनकी हर हरकत पर नजर रखे है …

उसे सभी का समलित जवाब हा में मिला. लेकिन समस्या थी की कैसे... क्योकि अगर अमरीश किसी तरह से उनकी बात सुन रहा होगा तो फिर क्या होगा.जवाब आया की क्यो ना पूरी बात लिख कर पढ़ाई जाय…

हरिया ने यही किया.झाबु और लतिमा ने तो इसे आराम से स्वीकार कर लीया.लेकिन कुसुम ने जब ये सब पढ़ा तो माहौल कुछ अलग था……

वो उसी कमरे में थे…

“ह्म्म्म तो फिर ये बात है”

हरिया ने उसे चुप रहने का इशारा किया.

“क्या इशारा कर रहे हो मेरे राजा ...लगता है की तुम मुझे अपनी रखैल बनाने को राजी हो ही गए. जो ऐसे इशारे कर रहे हो “

हरिया कुसुम की बात सुनकर दंग रह गया.कुसुम इठलाकर उससे लिपट गयी और उसके कान में फुसफुसाई ..

“अगर ऐसा है तो मैं उस साले अमरीश को तड़फा कर मार डालूंगी.साले ने मुझे मेरे घर से उठाया था.मेरे पिता को जलील किया था. अब तो उसे इसकी सजा मिलनी ही है .जिसके मोह में आकर उसने मुझे उठाया था उसकी शरीर को मैं उसकी ही नजरो के सामने दूसरे को सौप दूंगी और तुम्हे मेरा साथ देना होगा “

उसके आवाज में संकल्प ,दर्द और बदले की चाह साफ थी. साथ ही हरिया के लिए एक धमकी भी थी.

हरिया को समझ आ चुका था की कुसुम ऐसा क्यो कर रही है. लेकिन आगे वो क्या करे इस बारे में वो समझने की कोशिश कर रहा थे

“तुम मुझसे सच में प्यार करती हो या बस अपनी जिस्म की भूख मिटाना चाहती हो ..”

हरिया ने थोड़ा जोर से कहा ताकि अगर अमरीश सुन रहा हो तो उसे भी ये सुनाई दे जाए …

वो खिलखिलाई ..

“तुम मुझे अच्छे लगते हो.अब इतने कम दिनों में प्यार तो हो नही सकता न.लेकिन हा अगर तुम उस दिन जैसे मेरा साथ दो तो तुम्हारे मजबूत इरादों और मजबूत औजार से मुझे संचमे प्यार हो जाएगा “

वो मुस्कुराई.उसकी मुस्कुराहट बिल्कुल सच्ची थी जैसे उसकी ये बात सच्ची थी .सच्चाई ढूंढने के लिए कुछ खोजना नही पड़ता .बस आंखों में उभरे भाव ही काफी होते है…

वो मचलते हुए हरिया से लिपट गई और साथ ही हरिया भी जोरो से हँस पड़ा और उसे मजबूती से अपनी बांहो में भर लिया.वो ध्यान से कुसुम को देखने लगा.वो परी थी जिसकी कल्पना भी शायद हरिया अपनी दूसरी जिंदगी में नही कर सकता था.

वो खूबसूरती में लतिमा और झाबु से कही आगे थी.लेकिन उसकी खुबसूरती को नापने वाली आंखे होनी चाहिए.

नीली आंखे ,बिल्ली सी आवाज ,भूरी प्यारी सी लड़की ,बाल पूरे तरह से काले नही थे,चेहरे के रंग के कारण वो भी थोड़े भूरे थे लेकिन लंबे और मजबूत ,होठो की लालिमा किसी गुलाब सी थी किसी भरे हुए मय के प्याले ही लगते थे ,

हरिया आगे बढ़कर उसके होठो को हल्के से चूमा.वो आंखे उठाई उसकी आंखों में देखने लगी.ये क्या हो रहा था उनके बीच …

पता नही क्या था लेकिन जैसे कोई करेंट सी दोनो के जिस्म में दौड़ गई थी.कुसुम के बदले की आग और हरिया का पत्नीव्रता होना सब जैसे कही पीछे छूट गया.ये अजीब था वो ये सब इसलिए तो नही कर रहे थे की उनके मन में एक दूसरे के लिए प्यार था.या जिस्म की हवस ही थी.नही ऐसा कुछ तो नही था.लेकिन अभी अभी जो हुआ था वो क्या था…

दोनो के आंखों में आया हुआ वो भाव क्या था..जिसे दोनो ही अपने दिलो में महसूस कर रहे थे,वो दोनो ही झटके से अलग हो गए और अपने आप से यही सवाल पूछने लगे…

हरिया ने सिर्फ एक ही औरत से प्यार किया था और वो थी उसकी बीवी .वही कुसुम हरिया के करीब इसलिए जाना चाहती थी क्योकि उसे वो मर्द लगा जो उसका बदला ले सके …

लेकिन वो होठो का एक मिलन सभी गणित को बिगाड़ कर रख दे रहा था....

“मुझे माफ करो की मैं “हरिया कुछ बोलता इससे पहले ही कुसुम ने उसके होठो पर अपने हाथ रख दिए ...और सर ना में हिलाया.वो हरिया के करीब आई और उसके कानो में कहा ,

“पता नही ये क्या था लेकिन ये नही होना चाहिए.जिस्म मिल जाय लेकिन जस्बात नही वरना हम दोनो हो मुसीबत में फंस जाएंगे…..”

हरिया ने सर हा में हिलाया …

‘‘चलो तुम्हे तुम्हारी प्यारी पत्नी से मिलवा देती हु …’’कुसुम मुश्किल से सामान्य हो पाई क्योकि उसके जीवन में ये पहला मर्द था जिसके लिए उसे ऐसा अहसास हुआ था.ये एक दिन के मिलन का नतीजा नही था.शायद कुछ उसने मन में पहले ही रहा हो जो आज अचानक से बाहर आ गया ...सम्मान कब और कैसे प्यार में बदल जाए कहा नही जा सकता……

धर्मराज उसी कमरे था जंहा उसने वो खेल खेला था और अब भी झाबु और लतिमा उसके साथ बैठे थे. लेकिन लतिमा आज उस दिन की अपेक्षा बहुत ही शांत थी .क्योकि उसे भी पता था की जिस प्लान को वो पूरा करना चाहती थी वो अब नही हो सकता लेकिन इसके एवज में उन्होंने एक गलती कर दी थी वो था की धर्मराज के मन में झाबु को पाने की चाह पैदा करना.धर्मराज जुनूनी और हवसी दोनो ही था.अब वो झाबु को हवस नही बल्कि जुनूनी नजरिये से देख रहा था.उसके मन में उसे पाने के अलग अलग ख्यालात पैदा हो रहे थे...वही लतिमा और झाबु इसी सोच में थे की आखिर धर्मराज को उसके शैतानी इरादों से कैसे रोका जाए……

‘‘क्यो मेरी जान आज बड़ी चुप हो ‘‘धर्मराज के बाजू में बैठी हुई लतिमा के जांघो पर हाथ फेरते हुए धर्मराज ने कहा ..

लतिमा ने उसका हाथ हटा दिया.एक खुलासा और हरिया की मौजूदगी दोनो ने ही लतिमा और झाबु के सोचने के तरीके को बदल दिया था. पहले वो अपने को मजबूर समझ रही थी. हरिया के आने से वो मजबूत हो गई.लेकिन इस खुलासे से की अमरीश उनपर नजर रखे है वो डर गई थी.उन्हें समझ ही नही आ रहा था की आखिर करे तो क्या करे.अगर धर्मराज का साथ दिया तो हरिया की प्रतिक्रिया क्या होगी और अगर नही दिया तो धर्मराज क्या करेगा.और फिर अमरीश…

वो ना तो हरिया को गुस्सा दिलाना चाहते थे.ना ही धर्मराज को. क्योकि दोनो में से किसी को भी गुस्सा दिलाने का मतलब था की हरिया के ऊपर संकट आना …

झाबु उठी और अपनी ननद को पास बुला कर उसके कानो में कहा …

‘‘तू इसे संभाल मैं तेरे भइया को संभालती हु.अगर उन्हेंने तुझे कुछ करते देख लीया तो वो खुद को माफ नही कर पाएंगे...और अगर उन्होंने वक्त से पहले कुछ कर दिया तो समझो की आफत आ जाएगी ‘‘

लतिमा ने सर हिलाय.धर्मराज झाबु को जाते हुए देखता रहा लेकिन कुछ नही कहा.कह तो उसकी आंखे रही थी जो गुस्से से लाल हो चुकी थी …

‘‘ये साली वेश्या अपने को समझती क्या है.किसी दिन इसे जबरदस्ती ठोक दूंगा .बड़ी आयी सती सावित्री बनने वाली.इसे प्यार से पाना चाहता हु.भाई की इसपर नजर है इसलिए अभी तक बची हुई है…वरना.....’’

धर्मराज ने लतिमा को गुस्से से देख.लतिमा ने अपने को तैयार कर लीया था.वो मचलते हुए उसके पास आ गई और उसके गोद में बैठ गई.वो एक कसे हुए सलवार में थी जिसका दुपट्टा उसने पहले ही फेक दिया था...

“ठाकुर साहब हमे भी देख लीया करो.हम कच्ची कली है हमे भी फूल बना दीजिए..”

लतिमा ने धर्मराज का हाथ अपने वक्षो में रख दिया.धर्मराज कच्ची कली होने की बात सुनकर उसपर थोड़ा ध्यान दिया ..

“तुझे फूल तो बनाऊंगा मेरी जान लेकिन उसे पाने की जिद जो कर बैठा हु “

लतिमा का अब बस एक ही मकसद था की धर्मराज के दिमाग से झाबु का भूत उतारना और उसने गांव की महिलाओं से ये सिख रखा था की उसे ऐसा करने के लिए धर्मराज का पानी निकालना पड़ेगा ….

वो मुस्कुराती हुई घूम कर बैठ गई.अब उसके दोनो पैर धर्मराज के कमर को घेरे हुए थे और चेहरा उसके चेहरे के करीब दोनो की सांसे टकरा रही थी.हवाओ में एक अजीब सी खुशबू ही और माहौल में एक अजीब सी बात.ये वही समय था जब हरिया कुसुम दो देख रहा था.और यंहा धर्मराज लतिमा को …

दोनो ही जोड़े एक दूसरे से प्यार नही करते थे लेकिन फिर भी दोनो ही एक दूसरे के आंखों में उस खास वक्त में खो से गए थे.कहा जाता है की एक ही तरह की ताकद एक दूसरे को आकर्षित करती है और बढ़ाती भी है.इसलिए प्राचीन लोग कोई भी साधना ब्रम्हमुहूर्त में करने पर जोर देतो थे क्योकि आसपास के समस्त साधक उस समय साधना में होंगे और सब की एक तरह की ताकद मिलकर सबका संवर्धन करेगी…

शायद ऐसा ही कुछ यंहा हो रहा था ..

दोनो ही जोड़े जो एक दूसरे से प्यार नही करते थे एक दूसरे की आंखों में खिंच से गए.दोनो के लब मिले और जैसे कामदेव ने प्रेम का बाण मार दिया हो दोनो जोड़ो को एक अजीब सी संवेदना का अहसास हुआ.जो की हवस नही थी वो प्रेम था… प्रेम …

लतिमा और धर्मराज एक दूसरे को छोड़ दिया.उन्हें समझ ही नही आया की ये उनके साथ क्या हुआ.धर्मराज बेचैन हो गया.इतने लड़कियों के साथ सो चुके धर्मराज के लिए ये पहला आभस था वो भी उसके साथ जिसे वो अपनी दासी बनाना चाहता था. वही लतिमा के लिए तो पहला पुरुष धर्मराज ही था लेकिन वो उससे नफरत करती थी .हा उसकी मर्दानगी पर उसे थोड़ा मोह तो आया था. और उसने उस दिन लतिमा के हवस को भी जगाया था.लेकिन वो प्यार तो नही था. लेकिन अभी अभी जो हुआ वो क्या था….दोनो ही अजीब से दुविधा में थे…लतिमा से ज्यादा बेचैन धर्मराज था. क्योकि वो इस लड़की के प्यार में तो मरकर भी नही पड़ना चाहेगा…

वो जल्दी से उठा और बिना कुछ बोले या नजर मिलाए ही वँहा से निकल गया.लतिमा भी अपनी सोच में गुम हुए हादसे को सोचती रही …….

हा ये सच है की प्यार में पड़ जाना या उसका आभस हो जाना भी किसी हादसे से कम नही होता……….

धर्मराज एक गहरी परेशानी में अपने कमरे में बैठा हुआ था. और वही कुसुम और लतिमा भी अपने ही ख़यालो में थे.

हरिया झाबु के साथ सुकून से लेटा था लेकिन उसके दिमाग में भी कई विचार चल रहे थे.लतिमा ने कुसुम को वो बतलाया जो उसके साथ हुआ था.

कुसुम शायद इस बात को नही संमझती अगर उसने भी इसका अनुभव नही किया होता लेकिन अब वो लतिमा की बात को समझ सकती थी.

धर्मराज के कमरे का दरवाजा खुला.इसने इसी कमरे में ना जाने कितनो की इज्जत लूटी थी.कितनो को नग्न किया था लेकिन आज वो अजीब से कसमकस में फंसा हुआ था.उसे प्यार कैसे हो सकता है. वो तो खुद को शैतान समझता था. कमरे के खुलने की आवाज से वो चौका ..

सामने खड़ी दुल्हन सी सजी हुई कुसुम उसके सामने खड़ी हुई थी ………

‘‘आप फिर से मुझे जलाने आ गई ‘‘

वो बौखलाया नही बल्कि हल्की आवाज में बोला.पता नही आज उसे जोर से बोलने पर भी तकलीफ हो रही थी …

कुसुम मुस्कुराते हुए उसके बाजू में आकर बैठ गई ..

‘‘तुम मेरे देवर हो लेकिन आज तक हमारा रिश्ता कभी देवर भाभी का नही बन पाया.क्योकि तुम्हारे लिए मैं भाभी से ज्यादा बस तुम्हारे भइया की लूट का समान थी.इस घर में औरतो को तो ऐसे भी कोई इज्जत नही मिलती.और मैं ये भी जानती हु की तुम दोनो ही भाईयों के लिये औरत बस एक जिस्म है जिसका भोग करना और इस्तेमाल करने के अलावा तुम कुछ जानते ही नही.शायद इसीलिए हमारे बीच भी ये दूरी है की हम एक दूसरे से बात भी नही करते …’’

धर्मराज ने पहले कभी ऐसे अपनी भाभी से बात नही किया था. असल में उसने तो कभी कुसुम की ओर ध्यान भी नही दिया था.वो थी जिसे उसका भाई उठाकर ले आया था पहले तो अपनी ऐयासी के लिये फिर जाने क्या सोचकर उसे अपनी बीवी बना लीया था. उससे ज्यादा कुसुम का कोई अस्तित्व धर्मराज के लीया नही था…

“तो आज क्यो आयी हो यहा… ये बात याद दिलाने की हम कितने बड़े शैतान है …”

कुसुम के होठो में एक हल्की सी मुस्कुराहट जाग गई

“नही ये याद दिलाने के लिए की इस शैतान के अंदर एक इंसान अभी भी जिंदा है ….तूम अपने भाई से हमेशा से ही अलग थे.तुम्हे कभी भी जबरदस्ती करना पसंद नही आया और तुम्हारे भाई ने कभी बिना जबरदस्ती के काम ही नही किया. तुम्हारे दिल में जाने अनजाने ही मानवता थी. तुम्हारी परवरिश ऐसी हुई की तुम शैतान बन गए लेकिन तुम्हारे अंदर इंसानियत है…. और आज वही इंसानियत के कारण तुम प्यार में पड़ गए …”

धर्मराज आश्चर्य से कुसुम की ओर देखने लगा…

“मुझे लतिमा ने सब कुछ बताया.जैसे तुम डरे हुए हो वैसे वो भी डरी हुई है…उसे भी कभी उम्मीद नही थी की वो तुम्हारे बारे में ऐसा महसूस करने लगेगी.लेकिन जो होना होता है उसे कौन रोक सकता है …”

धर्मराज कुछ कहता उससे पहले ही कुसुम ने अपना हाथ उसके सर पर रख दिया.धर्मराज ने पहले ऐसी भावना कभी महसूस नही की थी.आज दिन में दूसरी बार था जब उसका प्यार से सामना हो रहा था. ममत्व से सामना हो रहा था. उसके आंखों में अनायास ही आंसू आ गए .उसका दिमाग जोरो से कह रहा था की प्यार तेरे लिए नही है. तू शैतान है.लेकिन फिर दिल का एक कोना इतना ज्यादा भावूक हो रहा था की वो भावनाओ में बहने लगा था. दिमाग के ऊपर दिल छा गया था और वो ना चाहते हुए भी कुसुम से जा लिपटा.

कुसुम उसके बालो को इतने प्यार से सहला रही थी की धर्मराज में कुछ अजीब से भाव जागे.वो ममत्व वो प्यार ..शायद इन्ही सबकी तलाश उसे बचपन से ही थी. लेकिन कभी उसने इसे खोजा ही नही था. उसे लगा जैसे उसे वो सब मिल गया जो वो बचपन से अनेक चीजों में खोजता हुआ फिर रहा था. कभी उसे माँ की गोद नसीब नही हुई थी.बाप भी उसका अमरीश की तरह ही था. और कोई बहन भी नही थी.ऐसा कोई दोस्त नही जो उसे प्यार कर सके .थी तो बस लडकिया जिसे वो भोगा करता था. लेकिन वो जिस्म तक ही सीमित रह जाती ….

अनजाने में ही धर्मराज बहुत प्रयास करता की वो लड़कियों के जिस्म से भी पार पहुचे.. वँहा जिसे इश्क कहते है. जो बढ़ने पर इबादत बन जाती है. लेकिन लकड़ियों के लिए भी वो बस एक ऐसा जमीदार ही रह जाता था जो पैसे या ताकत के बल पर उन्हें अपना रहा था …

वो लड़कियों से बहुत ही सलीके से पेश आता लेकिन किसी के प्यार में पड़ने के लिए इतना काफी भी तो नही होता.लडकिया अंदर से तो ये जानती थी की वो मजबूर है उसकी बांहो

में जाने के लिए…

आज उसे लग रहा था की उसे वो मिल ही गया.एक अजीब सी संतुष्टि उसे कुसुम के सिने से लगकर हो रही थी.वो वासना नही प्रेम था. एक भाभी का अपने देवर के लिए जैसा एक बहन का अपने भाई के लिए होता है ,...

असल में प्यार का स्वरूप एक ही है.बस उसको जताने का तरीका अलग होता है.पति पत्नी या प्रेमी अपने प्यार को जिस्म के मिलन के जरिये जताते है. तो माँ और बहने अपने बेटे की फिक्र स्नेह करके .वही बाप अपने बच्चे को डांट कर भी अपना प्यार जता जाता है,...

ये प्रेम जब जीवन में उतरता है और जब किसी को इसका अहसास किसी भी रूप में होता है .वो सबसे पहला काम होता है वो है व्यक्ति का रूपांतरण …..

कहा गया है की प्रेम होता नही है.प्रेम में गिरा जाता है ,और जो गिर गया उसके लिए पूरी दुनिया ही प्रेम हो जाती है ..धर्मराज प्रेम में गिर चुका था और उसके अंदर एक रूपांतरण होने लगा था. और शायद इसी लिए वो रो रहा था.कुसुम के सीने से लगे हुए बच्चों की तरह रो रहा थे...

दरवाजे पर खड़ी लतिमा की आंखों में भी आंसू थे.उसे भी पता था की धर्मराज किस दर्द से गुजर रहा है .लेकिन हर रूपांतरण एक दर्द के साथ ही शुरू होता है .व्यक्तित्व का बदलना कोई खेल नही होता .पुराने हर आदत जब बेकार लगने लगती है.जीवन बिल्कुल सुना सा लगने लगता है,लगता है की जीवन में जो भी किया वो बेकार था फिजूल था. और जब इतना समय बिता देने की ग्लानि होती है.पुरानी सड़ी हुई व्यक्तित्व की परते सामने आती है तो दर्द तो होता ही है …….आंसू तो निकलते ही है ………..

हवेली से निकलने की योजना बन चुका था.अब बस आखिरी फैसले का इंतजार था.

इधर ठाकुर अमरीश ने भी कुछ खास ना पता चलते देख अटैक करने की योजना करना शुरू कर दिया.इसी बीच हरिया और कुसुम के बीच बात बढ़ने लगी …..

हरिया कुसुम के बांहो में था. हरिया मैं जानती हु की तुम लोग यहां से निकलने वाले हो लेकिन क्या जाते जाते मुझे कोई तोहफा नही दोगे…

हरिया ने कुसुम को प्यार से निहारा ..

“कौन कहता है की मैं तुम्हे छोड़कर चला जाऊंगा “

“नही हरिया मैं इस हवेली को तभी छोडूंगी जब मैं अमरीश की मौत देख लू “

कुसुम की बात से हरिया स्तब्ध रह गया.उसने प्यार से उसके बालो को सहलाया ..

“तुहारी वो ख्वाहिश भी पूरी करूंगा लेकिन अभी बताओ क्या चाहिए तुम्हे तोहफे में ..”

कुसुम हल्के से मुस्कराई ..

“तुम्हारा बच्चा “

कुसुम बोल कर शर्मा गई... लेकिन हरिया किसी सोच में पड़ गया..

“अमरीश तुम्हे मार डालेगा ..”

“नही वो नही मरेगा...उसकी इतनी हिम्मत नही की तुम्हारे और मेरे बच्चे को हाथ लगा दे “

हरिया ने कुसुम को जोरो से जकड़ा और उसके होठो में अपने होठो को घुसा दिया.दोनो ही मस्त हो चुके थे एक दूसरे के जिस्म की प्यास दोनो में बढ़ने लगी थी.कुसुम हरिया का हाथ पकड़कर उसे एक दूसरे कमरे में ले गई.ये आलीशान कमरा था जंहा बड़े से प्रेम में अमरीश और कुसुम की फ़ोटो लगी थी …

“तो ये तुम्हारा कमरा है ,”

कुसुम ने हा में सर हिलाया

वो बड़ा सा गोलाकार बिस्तर जिस्म कम से कम चार लोग सो जाए.हरिया ने कुसुम का हाथ पकड़कर उसे उस बिस्तर में पटक दिया.दोनो के होठ मील और जिस्म भी मिलते गए.

लतिमा और झाबु अपनी तैयारी में बैठे थे.धर्मराज भी उनका साथ देने को तैयार था. लेकीन वो हवेली छोड़कर नही जाना चाहता था.वो अपने भइया से आशीर्वाद लेकर ही लतिमा को अपनाना चाहता था. उसे पता था की अमरीश उससे कितना प्यार करता है.लतिमा घबराई ज़ुरूर लेकिन अपने प्यार पर उसे पूरा भरोसा था.

''अगर मरेंगे तो साथ ही मरेंगे ''धर्मराज ने उससे कहा

अमरीश से अब बर्दास्त नही हो रहा था. संग्राम के मना करने के बाद भी वो नही रुका.बड़े से कमरे में अब अमरीश की ललकारी गूंज रही थी.और दूसरी ओर उसका भाई उसके दुश्मन की बहन से शादी करने की बात सोच रहा था.

अमरीश ने पिस्तोल उठाई और अपने कमरे की ओर चल दिया…

पूरे हवेली में घेरा बंदी शुरू हो गई थी.ठाकुर के सभी लोग सचेत थे.ये सब समय से पहले हो रहा था. हरिया की जल्दबाजी का ही नतीजा था.हरिया के लोगो ने जब देखा की हवेली को घेरा जा रहा है.तुरंत ही डॉक्टर और त्रिवेदी से संपर्क किया.जल्दबाजी में ही गिरोह के सभी लोग वँहा पहुच गए और अपने सरदार को वँहा से निकालने की योजना बनाने लगे.गिरोह का नेतृत्व होशियार कर रहा था…

हवेली के बाहर जितनी गहमा गहमी मची थी वैसी ही गहमा गहमी हवेली के अंदर अमरीश सिंग के बिस्तर में भी मची हुई थी.हरिया और कुसुम एक दूसरे के नंगे जिस्म में दोहरे हुए जा रहे थे.हरिया ने जोर लगाया और अपना गर्म लावा कुसुम के गर्भी में डाल दिया …..

कुसुम को लगा कि जैसे उसे जन्नत मिल गई हो …….

हरिया तैयार हुआ और झाबु और लतिमा के पास पहुच गया.कुसुम भी तैयार होकर कमरे से बाहर निकली थी की…

अमरीश उसके सामने खड़ा था उसकेआंखों में जैसे अंगारे थे …..

कुसुम को देखते ही उसने गोलीयां चला दी …….

गोलियो की आवाज पूरे माहौल में गूंज गई थी ……

कुसुम लुढ़ककर नीचे गिरते गई …..

चारो ओर खून फैला था. और एक गजब की शांति पूरे वातावरण में छा गई …..

हवेली में बस ठाकुर के सिपाहियों के जूते की आवाज गुंजने लगी.हरिया उसकी बहन और पत्नी घिर चुके थे.धर्मराज उन्हे बचाता हुआ सामने चल रहा था.वो उन्हें गेट तक ले गया.जंहा से हरिया ने बाहर निकलने का रास्ता बनाया हुआ था.बचाव में हरिया के लोग भी गोलियार चलाने लगे थे और कुछ अंदर भी आ चुके थे .

संग्राम सामने ही खड़ा हुआ था.धर्मराज को देखकर उसकी आंखे चौड़ी हो गई ..

“सामने से हट जाओ छोटे ठाकुर वरना आज मेरे हाथो से नही बच पाओगे ..”

“मैं मर जाऊंगा संग्राम लेकिन इन्हें तुम नही रोक सकते “

धर्मराज के पीछे खड़े हरिया ने अपने पिस्तौल में अपनी हाथ मजबूत की.चारो तरफ शोर शराबा था.लेकिन ठाकुर का किला हरिया के लोगो के लिए अभेद्य ही रहा.हरिया के लोग

गोलीयां खा रहे थे शिकस्त नजदीक दिखाई पड़ रही थी.जैसे तैसे धर्मराज के सहारे वो गेट तक पहुच गए जिसे दीवाल तोड़कर बनाया गया था.बाहर हरिया के लोग थे और अंदर ठाकुर के गोलीयां ही दोनो ओर के लोगो की रक्षा कर रही थी.धर्मराज के कारण ठाकुर का कोई आदमी उनपर गोली नही चला रहा था यंहा तक की संग्राम भी रुक गया था.

अमरीश जब बाहर आया और सामने का नजारा देखकर बौखला गया. उसका भाई भी उसके दुश्मन की ढाल बना हुआ है.उसने आव देखा ना ताव और गोलीया चला दी जो सीधे सामने खड़े हुए धर्मराज के सीने में जा धंसी …

“धर्मराज …”

लतिमा की चीख निकली लेकिन हरिया उसे खिंचता हुआ हवेली के पार जा चुका था. दोनो ओर से गोलियो की बरसात सी हो गई.अमरीश अपने दिल के अजीज भाई को इस हालत में देखकर खुद को रोक नही पाया और गोलीया बरसते हुए गेट के बाहर तक आ गया जिसे संग्राम ही खिंच कर अंदर लाया ………

हरिया और ठाकुर दोनो के कई लोगो को गोलीया लगी थी. और कुछ ही देर में माहौल में शमशान की तरह की शांति छा गई थी ………..

अमरीश अपने घर की खमोशी को महसूस कर रहा था. हाथो में जाम लिए वो परेशान दिख रहा था. हरिया से खेल खेलने की सजा में उसे अपने बीवी और भाई को खोना पड़ा था. दोनो ही अभी हॉस्पिटल में थे और जिंदगी और मौत के बीच झूल रहे थे.संग्राम उसकी खामोशी को समझ सकता था .लेकिन वो कह कुछ भी नही कर सकता था. शायद ये सभी उसकी ही गलती के कारण हुआ था.वो सर झुकाए बाहर जा रहा था की अमरीश ने उसे रोक लीया…

"संग्राम यार ये क्या हो गया ...इतनी दौलत शोहरत अब किस काम की जब घर में कोई अपना ही नही …"

दरवाजे पर खड़ा अमरीश के पहली बीवी का बेटा युवराज सब सुन रहा था अमरीश ने उसे देखा और अपने पास बुलाया ...उसके सर पर हाथ फेरा

"पापा माँ कहा है "

वो अभी बहुत छोटा था की इन सभी चीजों को समझ सके लेकिन उसकी माँ के गुजर जाने के बाद से कुसुम उसे बहुत प्यार देती थी.बच्चा छोटा था लेकिन प्यार को तो समझ ही सकता था. अमरीश नही चाहता था की उस पर कुसुम का साया ज्यादा पड़े.क्योकि वो उसे भी अपनी तरह बनाना चाहता था.लेकिन फिर भी आज उसकी बात सुनकर अमरीश का दिल कचोट गया…

"वो कही गई है ..आ जाएगी ...जाओ तुम अपने कमरे में "

उसके जाते ही अमरीश ने एक और पेग बनाया ...और गहरी सांस ली ..

"मैं उस औरत को कभी माफ नही करूंगा ...चाहे तुम कुछ भी कहो ना ही अपने भाई को ...लेकिन उस औरत को अपने पास जरूर रखूंगा ,ताकि हरिया की सारी जिंदगी उसे मेरे कैद से छुड़ाने में निकल जाए .."

उसने एक ही बार में अपना पूरा पेग खत्म कर दिया ……

धर्मराज और कुसुम की हालत में बहुत सूधार आ चुका था.अमरीश ने धर्मराज को कह दिया था की तू लतिमा से इस शर्त पर शादी कर सकता है की तुझे हवेली और जायजाद दोनो को छोड़ना होगा …

धर्मराज पड़ा लिखा था और अपने दम में लतिमा को पाल सकता था उसने हामी भर दी.वही कुसुम के पेट में गोली लगने से उसका गर्भाशय भी क्षति ग्रस्त हो चुका था. डॉक्टर ने कह दिया था की वो कभी माँ नही बन पाएगी ,अमरीश को ना जाने क्यो लेकिन ये सुनकर बेहद खुशी हुई.क्योकि वो जानता था की कुसुम के गर्भ में हरिया का बीज है …

दोनो के हॉस्पिटल से छूटने के बाद धर्मराज लतिमा से शादी कर हवेली छोड़कर शहर चला जाता गया.वही कुसुम को अमरीश अपने साथ ले आया.कुसुम एक जिंदा लाश सी हो गई थी.हरिया ने उससे मिलने की और उसे छुड़ाने की बहुत कोशिश की लेकिन सभी असफल रही …

ठाकुर और डाकुओं के बीच की जंग वैसे ही चल रही थी ,और ठाकुर को एक खबर मिली …

हरिया बाप बन गया है.मानो ठाकुर के आंखों में चमक आ गई ,

वो अभी कुसुम के कमरे में था …

“तुम्हे हरिया का बच्चा चाहिए था ना “

कुसुम जैसे सपने से जागी ...वो आंखे फाड़ कर ठाकुर को देख रही थी

“सुना ही उसे जुड़वा लडकिया हुई है.उसकी बीवी और बहन को तो मैं अपनी वेश्या नही बना पाया लेकिन उसकी बेटियों को जरूर बनाऊंगा …”

ठाकुर की भद्दी हँसी से कुसुम के नसे कांप गए …

हरिया को पिता बने लगभग छह महीने हो चुके थे.हरिया ने दोनो बेटियों का नामकरण किया चंपा और फुलवा.ठाकुर के लोग दोनो पर नजर रखे हुए थे और एक दिन आया जब वो फुलवा को हरिया के पहरे से चुराने में कामियाब रहे.ठाकुर ने फुलवा को लाकर कुसुम की झोली में डाल दिया …

हरिया बौखलाया बहुत खून भी बहा लेकिन आखिर उसे हार का सामना ही करना पडा.ठाकुर अपनी जायजाद का काफी हिस्सा हवेली की सुरक्षा पर खर्च कर रहा था. उसने हवेली को और अपनी सुरक्षा को अभेद्य बना दिया था. पुलिस और राजनीति में उसके ही लोग थे.वो दिन ब दिन ताकतवर हो रहा था.नए नए हथियार और तकनिक के इस्तेमाल के कारण वो हरिया जैसे डाकुओं के गिरोहों के पहुच से बहुत बाहर था.हा वो हरिया को मारना चाहता था लेकिन उसमे उसे कामयाबी हासिल नही हो रही थी.लेकिन हरिया जंहा जंगल का बादशाह था वही जंगल के बाहर ठाकुर का राज था……..

कुसुम ने फुलवा को बेहद प्यार दिया लेकिन वो जानती थी की ठाकुर उसे किस लिए बड़ी कर रहा है.वो उसे या तो अपने बेटे की वेश्या बना देगा या फिर उसे अपने ही पिता के खिलाफ इस्तेमाल करेगा…

लेकिन कुसुम को एक उम्मीद सी दिखी वो था. बलवीर का फुलवा के प्रति प्रेम …

कुसुम जानती थी ठाकुर को गिराना है तो संग्राम को पहले गिराना होगा और संग्राम की सबसे बड़ी कमजोरी थी उसका इकलौता बेटा बलवीर …

कुसुम ने एक कठोर फैसला लीया और कुसुम और बलवीर के प्यार को बढ़ावा दिया.वही युवराज की नजर भी जवान होती फुलवा पर टिकी रही.वक्त बढ़ता रहा.चंपा हरिया के गिरोह में तो फुलवा ठाकुर के हवेली में बढ़ती गई.दोनो ही जवानी की दहलीज पर पहुच गई थी और बला की खूबसूरत थी.

फुलवा को लेकर अक्सर ही बलवीर और युवराज में लड़ाई होने लगी.ये संग्राम और अमरीश दोनो के लिए चिंता का सबब बन चुका था. बलवीर ताकतवर था और बेहद ही गुसैल भी.अगर वो संग्राम का बेटा ना होता तो अमरीश उसे कब का मरवा चुका होता.लेकिन अब युवराज की फुलवा को पाने की बेताबी और बलवीर का उसके प्रति बेहद प्यार ने दोनो बापो को चिंता में डाल दिया था. कुसुम अब अधेड़ हो चुकी थी और उनकी हालत पर मुस्कुराया करती थी लेकिन उसे ये डर हमेशा ही रहता की फुलवा किसी मुसीबत में ना फंस जाए.अब फुलवा का हवेली में रहना उसे खतरे से खाली नही लग रहा था. लेकीन कैसे वो उसे यंहा से आजाद करे ……..

उसके दिमाग में एक बात कौंधी …

फुलवा अब सोलाह साल की हो चुकी थी और पुरषों में मुह में उसे देखकर ही लार आ जाती थी.कुसुम ने इरादा बनाया की वो फुलवा को वो गुर सिखाएगी जो एक बेबाक और मजबूत लड़की में होना चाहिए.लड़को को अपने इशारे पर चलाने का गुर …

वो जानती थी की फुलवा इतनी हसीन है की वो किसी भी मर्द की नियत को खराब कर दे लेकिन उसे तालीम की जरूरत थी. वैसी तालीम जो एक जिस्म का धंधा करने वाली लड़की लेती है.

वो उस मासूम लड़की को खतरनाक बनाना चाहती थी. ताकि वो एक नागिन सी जहरीली और मादक हो सके …

कुसुम को फुलवा को बचाने और उसे इस दलदल में भी कमल की तरह खिलाने का यही रास्ता दिखा.

वो अपने काम में लग गई थी ……...

“ये मुझे ऐसे क्यो देख रही है…”

फुलवा के मादक मुस्कान को देखकर युवराज आश्चर्य में पड़ गया था ..

“अरे ठाकुर साहब आखिर कब तक अपना मुह फुलाएगी.आप तो मालिक हो ..कभी ना कभी तो उसे आपकी ही होना है ..”

युवराज के खास चापलूस मनोहर ने कहा ,और अपनी बत्तीसी निकाली ..

मनोहर की चापलूसी युवराज की छाती चौड़ी हो गई और अपनी जमीदार वाली अकड़ में वो अपने मूंछो को ताव देने लगा..

फुलवा उसके इस प्रतिक्रिया पर खुद में हँस पड़ी …

‘साले को लग रहा है की इसके रोब में फंस गई फुलवा... साले की अक्ल ठिकाने लगाती हु ‘

फुलवा ने मन में सोचा और उसकी ओर मुह मटका कर ऐसे किया जैसे उससे उसे चिढ हो और बलवीर को हाथो से इशारा कर उसकी ओर चल दी ..

युवराज ना सिर्फ मायूस हो गया बल्कि गुस्से से भी भर गया.जंहा उसे पाने की हवस में वो जला रहा रहा था फुलवा थी की उसे कोई भाव ही नही देती थी.आज पहली बार वो उसे देखकर मुस्कुराई थी लेकिन फिर ना जाने उसे क्या हो गया..उसकी छाती फिर से सिकुड़ गई …

वो फुलवा के मटकते हुए पिछवाड़े को देख रहा था.पता नही लेकिन आज जैसे फुलवा के कमर में कुछ ज्यादा ही लचक थी जैसे उसे ललचा रही हो.युवराज के मुह से लार टपक गई.वो मचल कर रह गया.फुलवा को उभरे हुए पिछवाड़े को देख कर उसे लग रहा था जिसे अभी उसे पकड़ कर भर दे लेकिन …

उत्तेजना उसके चेहरे में दिख रही थी वो आंखे फाडे हुए उसे देख रहा था. जो लड़की उससे लगभग दस साल छोटी थी.उसके सामने ही बड़ी हुई और आज उसका ही खड़ा करने में आमादा थी.युवराज ने ना जाने कितनी लड़कियों को अपने नीचे लिटाया था लेकिन फुलवा उसके लिए हसरत थी.एक ख्वाब थी जिसे वो हर हालत में पूरा करना चाहता था …

वो नजर टिकाए हुए ही था की फुलवा पलटी और उसने फिर से एक मुस्कान युवराज को दी.मायूस युवराज की जैसे बांछे खिल गई .उसके दिल में एक लहर सी उठी .इतने दिनों तक जिसे पाने को उसने इतने पापड़ बेले आज वो पहली बार उसे देखकर ऐसे मुस्कुराई थी.लगा की फुलवा को पाने की मंजिल अब ज्यादा दूर नही है…

रोज की तरह ही फुलवा बलवीर के साथ चली गई.लेकिन आज युवराज को ज्यादा गुस्सा नही आया क्योकि आज उसे वो मिला जो उसे कभी नही मिला था फुलवा की तरफ से एक इशारा..

फुलवा अभी बलवीर के गोद में लेटी थी.दोपहर का वक्त था और ठाकुर के हवेली के बगीचे में लगे हुए आम के पेड़ ने नीचे दोनो की ही फुर्सत का ठिकाना था.वो अक्सर ही यंहा आते थे.बलवीर की उम्र भी युवराज जितनी ही थी लेकिन फुलवा को देखने का नजरिया उसके बिल्कुल ही विपरीत …

वो युवराज से कही ज्यादा बलशाली था.गठीला शरीर और रौबदार चेहरा …कोई भी लड़की उसे देखते ही रह जाती लेकिन आज तक बलवीर के जेहन में फुलवा के अलावा और कोई नही आ पाई थी …

“वो साला कुत्ता तुझे आज फिर ऐसे देख रहा था.जी करता है साले की आंखे निकाल दु …:

फुलवा हल्के से हँसी ,जैसे वो बलवीर को अधीर देखकर अधिकतर करती थी ..

“क्यो तुम्हे इतनी जलन क्यो होती है उससे “

फुलवा के सवाल पर बलवीर ने एक बार उसे घूरा लेकिन कुछ भी नही कहा ..

“तुम मेरे भाई हो क्या “

बलवीर जैसे झुंझला गया

“किसने कहा “

“सब कहते है की बलवीर और फुलवा भाई बहन की तरह रहते है “

“नही मैं तेरा भाई नही हु”

फुलवा के चेहरे पर एक हल्की मुस्कान आई …

“तो क्या हो ,..मेरे घरवाले ..”

फुलवा खिलखिलाई ,लेकिन बलवीर हड़बड़ा गया

“छि कैसी बात करती हो ,शर्म नही आती क्या.शर्म बेच खाई हो क्या “

बलवीर की भोली बाते फुलवा को बहुत अच्छी लगती थी.बलवीर उससे उम्र में ही बड़ा था लेकिन समझ में वो फुलवा को बच्चा ही लगता था.या ये कहे की बलवीर अपनी समझदारी फुलवा पर नही झाड़ता था ..

“तो ऐसे क्यो जलते हो ,देखने दो अगर देखता है तो ..”

बलवीर गुस्सा में आ गया ,वो खड़ा होने लगा ..

“तो जा उसी के पास ,तुझे तो उसका देखना अच्छा लगता है ना कैसे उसके सामने ही कमर मटका के चल रही थी …”

फुलवा फिर से हँस पड़ी लेकिन बलवीर गंभीर था उसके चेहरे से गुस्सा टपक रहा था.वो जाने को हुआ और फुलवा जल्दी से उठाकर पीछे से उसके जकड़ ली ..और अपना सर उसके पीठ पर टीका दिया …

“छोड़ मुझे ..पैसे का बहुत प्यार हो गया है तो जा उसी के साथ ..हम कौन है तेरे ”

“नही …”फुलवा की आवाज बहुत ही धीमी थी

“मुझे क्यो पकड़ती है जा ना उसी के पास ..उसका देखना तुझे अच्छा लगता है ना “

बलवीर की बात से फुलवा सिसकने लगी ,उसकी सिसकियां सुनकर बलवीर फिर से हड़बड़ाय.बलवीर कभी फुलवा को रोता हुआ नही देख सकता था. वो पलटा और उसे अपने बांहो में उठाकर फिर से उस आम के छाव में ले गया.वो किसी गुड़िया सी फुलवा को उठाये हुए था. अब फुलवा बलवीर के छाती से लगी सिसक रही थी और उसकी गोद में बैठे हुई थी ..

बलवीर ने उसके सर पर प्यार से अपने हाथ फेरे ..

“मेरी बात का इतना बुरा मान गई क्या ,तुझे पता है ना की मैं तुझे रोता हुआ नही देख सकता “

उसकी बात सुनकर फुलवा थोड़ी और उसके छाती से लग गई ..

“तुम्हे क्या लगता है की पैसा मेरे लिए तुझसे ज्यादा जरूरी है .या तू ये सोचता है की तेरी जगह कोई और ले सकता है …मैं अगर यंहा हु तो सिर्फ तेरे और माँ की वजह से वरना कब की मर गई होती.कैसे देखते है मुझे ये हवेली के लोग.कोई मारने की बात करता है तो कोई कलंक कहता है.यंहा मुझे कोई भी पसंद नही करता बलवीर लेकिन एक तू ही है जो मुझे सच्चे मन से अपना मानता है…”

फुलवा के कहने से बलवीर भी भावुक हो गया था.वो जोरो से उसे अपने गले से लगा लेता है ..

“तुझे कोई और देखे ना दिल जल जाता है मेरा पता नही क्या हो जाता है ..”

फुलवा के आंसुओ से भरे नयना में भी मुस्कुराहट झलक गई…

“इतना प्रेम है मुझसे ..”

बलवीर सोच में पड़ गया

“प्रेम का तो नही पता लेकिन जो भी है बस ऐसा ही है ..”

फुलवा ने अपना चेहरा ऊपर किया ..

“उसे देखकर अपनी कमर मटकाने या उसे देखकर मुस्कुराने में मुझे मजा नही आता बलवीर ना. ही उसे ही मुझे दूसरी औरतो की तरह उसके पैसे चाहिए जो उसके साथ जा के सो जाऊ...लेकिन उसके सहारे मुझे इस कैद से आजाद होना है …”

बलवीर उसकी बात सुनता ही रह गया.उसे समझ नही आ रहा था की आखिर वो करना क्या चाहती है ..

“तू करना क्या चाहती है फुलवा “

फुलवा के होठो में रहस्यमयी हँसी आ गई ..

“तू बस देखता जा लेकिन कभी अपनी फुलवा की नियत पर संदेह मत करना ,और कभी मुझसे नाराज नही होना..चाहे कुछ भी हो जाए ..कसम खा मेरे सर की “

फुलवा ने बलवीर के हाथो को अपने सर पर रख दिया ,बलवीर बस किसी कठपुतली उसे कसम दे बैठा..

बलवीर को इस कसम की कीमत बहुत महंगी चुकानी पड़ी ,लेकिन वो फुलवा के प्रति उसका प्यार ही था की उसने कभी उफ तक नही किया ……...

फुलवा की गर्म सांसे युवराज के चेहरे में पड़कर युवराज के दिल को पिघला रही थी.जीवन में पहली बार वो फुलवा के इतने नजदीक था ,दिल की धड़कने किसी बिजली की तरफ दौड़ रही थी.ये युवराज का ही कमरा था जंहा से निकलते हुए फुलवा को उसने बस इतना कहा था की 'रानी इधर भी आ जाओ '

हर बार की तरह उसने सोचा था की फुलवा बुरा सा मुह बनाकर चली जाएगी लेकिन फुलवा अंदर आ गई .ना सिर्फ आयी बल्कि युवराज से चीपक कर खड़ी हो गई.फुलवा की उन्नत उरोज युवराज के सीने में धंस रही थी और युवराज अपनी सांसे रोके हुए खड़ा था.युवराज ने अब तक फुलवा को लेकर कई ख्वाब देखे थे.वो सोचता था की जब मौका मिलेगा तब वो उसे दबोच लेग.लेकिन आज मौका था जो खुद फुलवा ने दिया था लेकिन युवराज किसी भीगी हुई बिल्ली की तरह सहम गया था.वो असल में फुलवा के इस अचानक बदले व्यवहार से ही घबरा गया था.क्योकि इसकी तो उसने कभी कल्पना भी नही की थी …

उसके सब ख्वाब बस ख्वाब ही रह गए थे,

वही फुलवा को पता था की युवराज की ऐसी ही हालत होगी.ये उसकी मुह बोली माँ कुसुम ने उसे पहले ही बता दिया था. आखीर इतने सालो से वो युवराज को जानती थी ..

युवराज की सांसे अटकी हुई थी और फुलवा के होठो में एक कातिल मुस्कान थी ,वो अच्छे से सिख रही थी…

"क्या बोलना है ठाकुर साहब ,रोज बुलाते हो आज आ गई तो ऐसे क्यो घबरा रहे हो,कभी लड़की नही छुई क्या …"

युवराज जल्दी से जगह बना कर थोड़ा अलग हुआ ..

"तुझमे ना जाने इतना करेंट कहा से आया "

वो हड़बड़ाकर बोल गया ,और फुलवा हँस पड़ी ..

"करेंट तो हमेशा से था इसलिए तो आज तक तू मुझे नही छू पाय.बस मुझे घूरता रह.छेड़ता रहा लेकिन …"

"वो ...वो तो मैं पिता जी और माँ के कारण …"

"ओहो बहाने तो देखो ,,"फुलवा फिर से मुस्कुराई लेकिन तब तक युवराज संभाल चुका था और उसके औजार ने फुंकार मारनी शुरू कर दी ,

जब इंसान अपने औजार की सुनने लगता है तो डर कोसो दूर भाग जाती है,युवराज भी फुलवा के पास आकर उसके कमर को अपने हाथो में फंसा उसे अपने से सटा लेता है,

फुलवा जिसने एक नई फ्रॉक पहनी थी जिसे बलवीर ने उसे लाके दिया था. उसे अपने जांघो के बीच युवराज की मर्दानगी का अहसास होने लग.उसका औजार लोहे से कड़ा हो गया था.

उसकी सांसे उखड़ी हुई थी शायद वो अपने ख्वाब को पूरा करना चाहता था.उसकी लुंगी से उसका औजार बाहर झकने लगा था ..

फुलवा ने उसके कमर को अपनी ओर और खिंच लीया और उसका औजार फुलवा के जांघो के बीच से होता हुआ उसके पेट तक रगड़ खा गया ..

"आह …"

युवराज की आंखे बंद हो गई क्योकि फुलवा ने उसे ऐसे जकड़ा था की उसके औजार की चमड़ी भी खिसक गई थी ,सूखे हुए कपड़े में रगड़ खाने से उसे थोड़ा दर्द तो हुआ लेकिन मजे के असीम आकाश में वो दर्द कही गुम ही हो गया था...

फुलवा ने उसे थोडा और पीछे किया और उसके खड़े हुए औजार को अपने हाथो में भर लिया.युवराज बस उस हसीना के अदांओ पर आश्चर्यचकित हुआ.आंखे फाडे अपने किस्मत पर इठला रहा था.वो क्या करने वाली थी इसका अंदाज लगा पाना उसके दिमाग के बाहर ही था..

फुलवा ने मुस्कुराते हुए उसे देखा ,

"यही सब कुकर्मो की जड़ है बोल तो इसे काट दु "

फुलवा के हाथ में पास ही पड़ा हुआ एक चमकदार चाकू था जिसे उसने अभी अभी उठाया था युवराज का डर से बुरा हाल हो गया ,जिसका पता उसके औजार के तनाव से ही पता लग रहा था वो ऐसे सिकुड़ा जैसे गुबबरे से हवा निकल रही हो ..

फुलवा जोरो से हँसी ,इतने जोरो से की पूरे कमरे में सिर्फ उसकी हँसी गूंजने लगी…

उसने युवराज के औजार को छोड़ दिया और उसके चेहरे का भाव अचानक ही बदलने लगा.वो दृढ़ हो चुका था आंखे जैसे अंगारे थी ..

"फुलवा को पाने के लिए शेर का दिल चाहिए.तेरे जैसे गीदड़ का नही जो बात बात पर डर जाए,जब ऐसी हिम्मत हो तो मेरे पास आना ,सब कुछ दूंगी तुझे .."

युवराज बस उसे जाते हुए देखता रहा. फुलवा के इस रूप को देखकर उसका चेहरा पसीने से तर हो चुका था ...

इधर युवराज फुलवा के रूप जाल में फंसता जा रहा था तो वही हवेली के बाहर की स्तिथि भी गर्म थी,हरिया के ऊपर लोगो का भरोषा बढ़ने लगा था. त्रिवेदी की मदद से कुछ पुलिस वाले भी अब उसके मददगार थे.कुछ अधिकारियों तक उसका पैसा जाता था.जिससे वो उसका थोड़ा मोड़ा सहयोग कर दिया करते थे.देखा जाय तो हरिया की धाक और ताकत अब भी अमरीश के मुकाबले कुछ भी नही थी. लेकिन फिर भी अमरीश के लिए तो एक सर दर्द ही था. और दूसरी सर दर्द उसके घर में ही पल रही थी .अगर अमरीश को पता होता की ये लड़की आगे जाकर उसकी इतनी तकलीफ बनने वाली है. तो शायद वो उसे वेश्या बनाने के सपने नही देखता .कब का मार चुका होता.लेकिन अमरीश ने भी वही भूल कर दी जो अधिकतर लोग कर जाते है ,औरत को कम समझने की भूल …

युवराज फुलवा के रूप जाल में तो फंस ही चुका था. लेकिन उसे जो चीज ज्यादा तकलीफ दे रही थी वो थी उसका व्यंग बाण जो उसने युवराज के ऊपर छोड़ा था. फुलवा के शब्द युवराज के कलेजे पर तीर की तरह चुभ गए थे,लेकिन उसकी ये समझ के परे था की ये तीर कितने दूर की सोच कर लगाई गई थी ,फुलवा और कुसुम भी चाहती थी की ऐसे शब्द बोले जाय जो युवराज को सोचने पर मजबूर कर दे ,साथ ही उसका ये भरम भी मिट जाए की फुलवा कोई ऐसी वैसी लड़की है ,वो उसे फुलवा के लिए पागल कर देना चाहते थे,लेकिन वो नशा कुछ अलग होने वाला था..

फुलवा ने युवराज की ओर देखना भी बंद कर दिया था. अब वो उससे बात करने की कोशिश करत.जैसे कुछ बदल गया था.वो उसे रिझाने की कोशिश करता लेकिन उसकी कोई भी बात फुलवा को रिझाने कर पाने में नाकाम होती …

“आखिर तुम चाहती क्या हो “

एक दिन उसने फुलवा का रास्ता ही रोक दिया..

फुलवा ने उसे पहले तो गुस्से से घूरा लेकिन देखते ही देखते उसके चेहरे में एक अजीब सी मुस्कान खिल गई ..

“पूछ तो ऐसा रहे हो जैसे जो बोलूं दे ही दोगे ,चलो हटो मेरे रास्ते से ..”

“अरे बोल कर तो देखो ..”

युवराज बेहद ही भरोसे में था ,फुलवा ने एक बार आसपास देखा वँहा कोई भी नही था..

“बलवीर बता रहा था की बाहर शहर में सिनेमा घर है और वँहा बहुत बड़ा पर्दा है …..”

फुलवा ने ऐसे कहा जैसे किसी दूसरी दुनिया की बात कर रही हो ..युवराज के होठो में मुस्कान आ गई

“तुम्हे देखना है “

फुलवा के तेवर अचानक ही बदल गए..वो ललचाई आंखों से उसे देखने लगी ..

“तुम सच में दिखा सकते हो ,लेकिन ठाकुर साहब तो मुझे हवेली से बाहर जाने ही नही देतो ..”

“मैं भी तो ठाकुर हु “

“लेकिन …”

“जाना है ...की नही ..”

“हा “फुलवा ने धीरे से कहा

“तो चलो लेकिन मुझे क्या मिलेगा “

युवराज का डर जैसे चला गया थे

“हर चीज के लिए तुम्हे कुछ देना ही पड़ेगा क्या ..?”

फुलवा शरारत से बोली जैसे सब कुछ ठीक हो गया हो …

“तुमने ही तो कहा था तुम्हारी बन जाऊंगी ..”

“ओ हो बड़े आये ..”

वो थोड़ी देर चुप रही

“अच्छा चलो कुछ दे दूंगी ,लेकिन बलवीर भी हमारे साथ जाएगा “

बलवीर का नाम सुनकर युवराज के चेहरे का रंग उड़ गया वो थोड़ा मायूस दिखा ..

“अरे उसे दूर बिठा देंगे और हम साथ बैठ जाएंगे ,अब वो मेरा इतना अच्छा दोस्त है मैं उसके बिना कैसे जाऊंगी ..”

युवराज अचानक से ही चौका लेकिन फिर उसके दिमाग में आया ,यार ये दोस्त भी तो हो सकते है..हो सकता है की वो जैसा सोचता हो वैसा ना हो..

“लेकिन वो तुम्हे मेरे साथ देखके बुरा नही मान जाएगा ..”

युवराज ने अपना शक बोल ही दिया ..

“क्यो मानेग.वो मेरा दोस्त है ..सबसे अच्छा दोस्त और मुझे खुश देखकर उसे तो खुशी ही होगी..और उसे भी फ़िल्म देखने मिल जाएग...”

युवराज कुछ सोच में पड़ा था..

"देखो युवराज मैं तुम्हे पसंद करती हु ,और मुझे नही लगता की बलवीर को इसमें कोई दिक्कत होगी ,वो तो तुम पर इसलिए गुस्सा करता था क्योकि तुम मुझे ऐसा वैसा कहते थे,लेकिन कुछ दिनों से तुम्हारे व्यवहार में आये बदलाव ने उसे भी तुम्हारे प्रति एक नया नजरिया दे दिया ,कल तो उसने ही कहा की युवराज से जाकर बात कर ले वो परेशान सा दिख रहा है…."

युवराज को यकीन ही नही हुआ की बलवीर उसके बारे में ऐसा बोलेगा ..

"हम सब साथ ही तो बड़े हुए है फिर हमारे बीच काहे का बैर …"

कहते कहते ही फुलवा की नजर थोड़ी आगे बढ़ गई जंहा से बलवीर आ रहा था ,

वो बलवीर को देखकर उसके सीने से लग गई और पूरी बात बता दी ..बलवीर गंभीर था लेकिन उसने युवराज की ओर हाथ बड़ा दिया ..

"मेरी फुलवा का ख्याल रखना ,अगर इसको चोट पहुचाई तो सोच ले ..मैं नही देखूंगा की तू किसका बेटा है .."

"तूम फिर शुरू हो गए ..बस एक फ़िल्म तो देखना चाहते है हम साथ में शादी थोड़ी ना कर रहे है.."फुलवा खिलखिला दी,बलवीर के होठो में भी एक मुस्कान आयी और दोनो के चेहरे में आये भाव ने युवराज को भी थोड़ा सहज किया

युवराज फुलवा को फ़िल्म दिखाने के लिए मान तो गया था लेकिन उसे बलवीर अब भी खटक रहा था. उसने अपने खास लोगो से सिनेमा हॉल को घेरने को कहा और अपने खास चापलूस मनोहर को भी अपने साथ ले गया.सिनेमा हॉल पूरी तरह के खाली था. बलवीर और मनोहर को बालकनी की सबसे आगे वाली सीट पर बिठाया गया वही फुलवा और युवराज आखरी लाइन में एक बड़े से सोफे जैसे सीट में बैठे जिसे युवराज की खास फरमाइश में वँहा लगाया गया था ,वो सीट उसके लिए ही थी ..

"ये पूरा सिनेमा हॉल खाली क्यो है कोई बकवास फ़िल्म तो नही ले आये मुझे"

फुलवा की बात पर युवराज थोड़ा मुस्कुराया

"अरे मेरी जान जब हम फ़िल्म देखते है तो बस हम ही देखते है ,पूरी टिकिट हमने ही खरीद ली है "

फुलवा के होठो में मुस्कान थी ..

बलवीर मनोहर को घूर के देख रहा था. मनोहर की बलवीर से ऐसे भी फटती थी लेकिन क्या करे मालिक ने हुक्म जो दिया था निभाना तो पड़ेगा ही …

बलवीर के मन में फुलवा को लेकर चिंताएं गहरा रही थी. लेकिन वो जानता था की फुलवा जो भी कर रही थी वो सही ही होगा .उसे अपने से ज्यादा फुलवा पर भरोसा था.

फिर भी वो मुड़ मुड़ कर देख ही लेत.दोनो अभी बात ही कर रहे थे,वो बहुत दूर थे लेकिन फिर भी बलवीर को वो दिख रहे थे,जब युवराज ने बलवीर को पलट कर देखते हुए देखा उसने बस एक इशारा गेट पर खड़े हुए गार्ड की ओर किया ,कुछ ही मिनट में सिनेमा हॉल की लाइट बंद हो गई और फ़िल्म शुरू हो गई ,अब बलवीर को दोनो स्पष्ट नही दिख रहे थे,लेकिन फिर भी फ़िल्म के लाइट में दोनो का थोड़ा आभस जरूर हो रहा था.

फुलवा ने अपने जांघो में युवराज के हाथ का आभास किया ..

जो उसे हल्के हल्के से रगड़ रहा था..

“बहुत जल्दी है तुम्हे ..”

फुलवा की बात व्यंग्यात्मक थी ..उसने युवराज के हाथो को जकड़ लीया था

“अरे मेरी जान थोड़ी तो जल्दी है मुझे ,ऐसे भी तुम्हारी ये अदा ही हमे मार डालती है..”

फुलवा खिलखिलाई,

“अच्छा तो इतने दूर क्यो हो पास आ जाओ नही खाऊँगी तुम्हे “

फुलवा ने युवराज के कॉलर को पकड़कर उसे अपने पास खिंच लीया..

युवराज उसके इस प्रहार से स्तब्ध था .लेकिन अब उसे ऐसे झटकों की आदत हो चुकी थी वो समझ चुका था की ये लड़की कोई भी झटका दे सकती है …

फुलवा की सांसे अब युवराज की सांसों से टकरा रही थी.युवराज मन मुग्ध होकर उसके उस काया को देख रहा था. सच में कितनी सुंदर थी फुलवा.कभी कभी उसे ऐसा लगने लगता था की उसे इस हसीना से प्यार हो गया है.लेकिन फिर वो अपने को संभालने की कोशिश करता था..

फुलवा भी उसकी आंखों में देख रही थी …

“क्या हुआ मेरे ठाकुर साहब आंखों में ही खो जाओगे क्या “

फुलवा की बात में अजीब सा आकर्षण था. उसने इसे बहुत ही होले से कहा था.जैसे उसकी सांसे ही आवाज का रूप लेकर निकल रही हो ,कानो के पास कही गई इस बात में

हल्की सी मदहोशी भी थी और हल्की सी शरारत भी.

ये युवराज के औजार में नही बल्कि दिल के किसी कोने में चोट कर गई

“लगता है जीवन भर तेरी आंखों को ऐसा ही देखता रहू ..”

फुलवा हल्के से हँसी लेकिन उस हँसी में अजीब सा दर्द था..

“कितनी लड़कियों से ये बात कह चुके हो ठाकुर साहब ,जो करने आये हो वही करो.क्यो प्यार का झूठा शगूफा फैलाने की कोशिश कर रहे हो ..”

युवराज फुलवा की बात को समझ चुका था. उसका सर नीचे हो गया..

“मैं जानता हु फुलवा तुम मेरी बात का भरोसा नही करोगी. लेकिन यही सच है की तुम्हारे लिए मेरे दिल में कुछ अजीब सा है जो किसी दूसरी लड़कियों के लिए नही होत.तुम्हे पाने की इच्छा तो मेरी है लेकिन जबरदस्ती नही ..”

फुलवा मुस्कुराई

“जबरदस्ती कर भी नही सकते,मुझे क्या ऐसी वैसी लड़की समझ कर रखा है..”

इस बार युवराज भी मुस्कराया

“तू तो सब से अलग है मेरी जान ,और मैं तो तेरा दीवाना हु “

युवराज ने अपना हाथ फुलवा की साड़ी के झांकती हुई कमर में डाल दिया और उसे अपनी ओर खिंच लिया.और फुलवा के फुले हुए गाल में एक बेहद ही संवेदनशील और प्यार से भरा हुआ चुम्मन झड़ दिया.

फुलवा उसके आभस से थोड़ी देर के लिए ही सही लेकिन खो सी गई .उसमें एक अजीब सी मिठास थी लेकिन फुलवा ने तुरंत ही अपने सर को झटका दिया.तभी युवराज ने अगला चुम्मा फुलवा के गले में कर दिया था.वो कसमसाई और युवराज को थोड़ा और अपनी ओर खिंच लिया.यंहा फ़िल्म तो चल रही थी लेकिन कोई भी फ़िल्म देखने नही आया था सबका एक अलग ही उद्देश्य था. बलवीर बार बार पीछे पलटता था लेकिन अंधेरे में उसे कुछ भी दिखाई नही दे रहा था. लेकिन जो परछाई उसे दिख रही थी उसमे उसे इतना तो आभस हो चुका था की दोनो गले मिले हुए है ,उसके दिल में एक दर्द उठ.अचानक उसकी नजर मनोहर से मिली जो अपनी दांत निकाले हुए हँस रहा था शायद उसने भी पीछे देखा था. बलवीर ने एक जोर का घूंसा उसके मुह में दे मार.मनोहर की दो दांत टूटकर उसके हाथ में आ गई और मुह से खून फेक दिया.वो सहमे हुए गुस्से से भरे हुए बलवीर को घूर रहा था..

“निकल यंहा से मादरठोक “

बलवीर की बात सुनकर वो दौड़ाता हुआ युवराज के पास पहुच गया.युवराज अभी फुलवा के कंधे पर अपने चुम्मन की बरसात कर रहा था जिससे फुलवा भी मदहोश हो रही थी और उसका साथ दे रही थी ,की ..

“ठाकुर साहब बलवीर ने देखो क्या किया मेरे दांत तोड़ दिए ..”

युवराज को उसकी बात सुनकर बेहद गुस्सा आया और उसने उसके गाल पर एक जोर की चपात लगा दी ,

“मादरठोक देख नही रहा है की मैं व्यस्त हु …भाग यंहा से “

मनोहर की ये हालत देखकर फुलवा जोरो से हँस पड़ी ..

“तुम जाओ और किसी से मरहम पट्टी करवा लो मैं बलवीर से बात कर लुंगी …”

“अरे जान रुको ना कहा जा रही हो ,”

“वो गुस्से में रहा तो कुछ भी कर देगा “

“वो कुछ नही करेगा.इस साले की शक्ल ही ऐसी है की कोई भी इसे मार दे. तुम आओ ना मेरे पास ,तू जा भोसड़ीके और चेहरा मत दिखाना फ़िल्म खत्म होते तक “

मनोहर मायूस सा वँहा से निकल गया ,और युवराज ने फुलवा का हाथ खिंचकर फिर से उसे अपने से सटा लीया ,वो खिलखिलाते हुए उसके गोद में जा समाई ..

युवराज ने फुलवा के ऊरोजो को छुपाए हुए साड़ी के पल्लू को नीचे गिरा दिया और उसके सीने की शुरुवात में अपने होठो को लगा दिया.वो नीचे जा रहा था जंहा फुलवा के उरोजो को उसके ब्लाउज ने बड़ी ही मुश्किल से संभाल कर रखा था. उरोजो के ब्लाउज से झांकते हुए खुले भाग पर अब युवराज के होठ थे ,उसे अपनी किस्मत पर यकीन ही नही हो पा रहा था की जिसे वो जीवन में सबसे ज्यादा पाने की कोशिश और चाहत करता था आज वो उसके पास है.वो पूरी तरह से फुलवा के रस को पीना चाहता था. उसका औजार भी अब अपनी तैयारी में था.वो फुलवा के खुले हुए कमर को अपने हाथो से मसलने लगा था ,दोनो की ही सांसे अब तेज थी जो संकेत थी की दोनो ही अपनी मदहोशी को अब काबू नही करना चाहते .युवराज ने अपने शर्ट को खोल कर फेक दिया .फुलवा के हाथ अब उसके सीने के बालो से खेल रहे थे,फुलवा की आंखे भी अब नशीली हो चुकी थी वो अपने हाथो से अब फुलवा के गदराए हुए सीने में फले हुए वक्षो को जोरो से दबाने लगा था.वो जैसे उसे निचोड़ ही देना चाहता था..

“आह धीरे करो ना ..”फुलवा की सिसकियां गूंजने लगी थी

“अब सहा नही जा रहा है जान ,फुलवा के ब्लाउज का एक बटन टूट कर गिर गया और अब युवराज का हाथ उसके खाली जगह में घुस गया.फुलवा ने कोई भी अंतर्वस्त्र नही पहने थे ,युवराज का हाथ सीधे ही उसके उरोजों से टकराया ,

“ओह “फुलवा ने ताकत लगा कर उसके सर को अपने सीने से लगा लिया.फुलवा की ताकत इतनी थी की युवराज को लगा की इन गोल भारी गुब्बारों के बीच उसका दम ही निकल जाएग.वो छटपटा रहा था लेकिन फुलवा की गिरफ्त तब भी बहुत मजबूत थी ,फुलवा उसे देखकर मुस्कुराई और अपने हाथो से अपने एक वक्ष को आजाद कर दिया ,फुलवा ने अपने ब्लाउज के सारे बटन ही खोल दिए.दोनो ही वक्ष बाहर झूलने लगे जिसमे से एक को फुलवा ने युवराज के मुह में ठूस दिया.वो सांस ना ले पाने के कारण छटपटा तो रहा था लेकिन फिर भी अपने मुह से उसके उरोजो को बाहर नही निकलना चाहता था. फुलवा उसकी इस स्थिति को देखकर थोड़ा हँसी और उसे अपने गिरफ्त से आजाद कर दिया.युवराज अब एक हाथ से उसके उरोज को दबा रहा था वही मुह में भर कर पूरा रस भी चूस रहा था. फुलवा की हालत भी खराब थी और वो उसके बालो को चूम रही थी ,उसकी सिसकी से युवराज और भी मदहोश होकर उरोजो को निचोड़ता ,.......

तभी सिनेमा हॉल का दरवाजा खुला और अचानक ही लाइट जल गई ,फुलवा हड़बड़ाया कर जल्दी से अपने साड़ी के पल्लू से अपने सीने को ढक लिया.युवराज गुस्से से गेट की ओर देखा लेकिन फिर उसका गुस्सा डर में बदल गया था ..

वही हाल बलवीर का था.वो पहले फुलवा को देखकर दुखी हो गया लेकिन फिर दरवाजे में खड़े शख्स को देखकर चौक गया ..

गेट पर संग्राम खड़ा हुआ था और बहुत ही गुस्से में लग रहा था…..

उसने बस तीनो को बाहर आने का इशारा किया और वँहा से निकल गया ,युवराज जल्दी से अपने कपड़े पहन कर बाहर भागा ..

बलवीर भी फुलवा के साथ हो ली ,

“ये इतनी जल्दी कैसे आ गए ..”

फुलवा ने बलवीर को हल्के से पूछा ,पहले तो बलवीर ने उसे गुस्से से देखा ..

“मुझे क्या पता माँ ने बापू को शायद जल्दी ही बता दिया ..और तुम तो ये सब इतनी जल्दी नही करने वाली थी न.अगर बापू नही आते तो ..”

बलवीर के गुस्से को देखकर फुलवा मुस्कुरा उठी और बलवीर के गालो को प्यार से चूम लीया ..

“क्या करू मैं भी थोड़ा बहक गई थी ,अब जल्दी चलो देखते है हमारी इस हरकत से हवेली में क्या कोहराम मचेगा ..”

चटाक …. हवेली मे तमाचे की जोरदार आवाज गुंजी

अमरीश गुस्से से कांप रहा था. वही युवराज के लिए ये शाररिक से ज्यादा मानसीक और भावनात्मक दर्द था. हवेली का माहौल तनावपूर्ण था. पिता ने अपने पुत्र पर पहली बार हाथ उठाया थे

“तुम इस वेश्या के कारण हमारे नियमो को तोड़ दिया.क्या तुम्हे पता नही की इसे बाहर जाने की इजाजत नही है …”

अमरीश ने कांपते हुए कहा ..

युवराज की नजर नीचे थी ..

“ठाकुर साहब आप खामख्वाह डर रहे है.मैं कहा भाग जाऊंगी जो आप मुझे बांध कर रखना चाहते है ,और युवराज ने जो भी किया वो मेरे कारण किया सजा मुझे मिलनी चाहिए…”

फुलवा की निडरता से अमरीश और भी बौखला गया ..

“चुप कर वेश्या …ये हमारे घर का मामला है ”अमरीश चिल्लाया

“पिता जी आप उसे बार बार यू वेश्या कहना बंद कीजिये. वो वेश्या नही है “

युवराज की इस बात से सभी स्तब्ध रह गए .वही फुलवा और कुसुम के होठो में दबी हुई मुस्कान आ गई.अमरीश स्तब्ध सा युवराज को देख रहा था ..

वो गुस्से में उसके ऊपर फिर से हाथ उठाने ही वाला था कि संग्राम ने उसे रोक लीया ,

“चले जाओ यंहा से “अमरीश कांपते हुए बस इतना ही कह पाया …

शाम रात में बदलने लगी थी और हवेली में एक सन्नाटा छा गया था ,

युवराज फुलवा के कमरे की ओर जा रहा था लेकिन कुछ आवाजो ने उसे खिड़की के पास ही रोक दिया ..

खिड़की पूरी तरह से बंद नही थी और आवाजे साफ थी …

युवराज ने हल्के से धक्का लगाया और खिड़की खुलती गई ..

अंदर का नजारा देख कर युवराज के दिल में एक जोर का झटका लगा…….।

अंदर फुलवा उसी कपड़ो में लेटी थी जिसमे वो आज उसके साथ थी ,और बलवीर उसके बिल्कुल ही बाजू में सोया हुआ था.

बलवीर ऊपर से नग्न था उसके चौड़े सीने में उगे हुए घने बाल उसकी मर्दानगी बता रहे थे जिससे फुलवा खेल रही थी ,

मजबूत लोहे सा जिस्म था. अपणी जवानी के पूरे शबाब में दोनो ही काम के साक्षात पुतले लग रहे थे..

फुलवा की आंखों में मदहोशी थी.जो साफ साफ बता रही थी की उसके मनोदशा इस समय क्या होगी ..

उसकी साड़ी का पल्लू बिस्तर से नीचे लटक रहा था और ब्लाउज के कुछ बटन खुले हुए थे,पसीने उसके गले से उतर रहा था. सांसे तेज थी ,चेहरे की लालिमा बढ़ी हुई और आंखों में मदहोशी..

फुलवा ने अपने होठो को बलवीर के उरोजो में लगा दिया.वो उसे बड़े ही प्यार से चूम रही थी,बलवीर ने अपनी मजबूत भुजा से उसे कस लीया फुलवा जैसी धाकड़ लड़की की भी आह निकल गई ..

“तुम्हे नही पता की आज मैं कितना जला हु तुम्हारे लिए. तुम्हे किसी और के बांहो में देखने से बड़ी सजा क्या हो सकती है ..”

फुलवा ने आंखे उठाकर उन मासूम आंखों को देखा जो उसके लिए कुछ भी करने को तैयार थे ..और ऊपर उठाकर उसके होठो में अपने होठो को मिला दिया ,

युवराज के दिल में जैसे खंजर चल गया हो..वो दर्द से तिलमिला उठा..

“मैं किसी के साथ भी रहु लेकिन रहूंगी तुम्हारी ही मेरी जान ,आज मेरा कौमार्य तुम्हारे हाथो से टूटेगा.ये अधिकार मैं तुम्हे ही दे सकती हु .तुम्ही सच्चे मर्द हो ...”

युवराज को रोना ही आ गया.लेकिन वो अब और भी विस्मय में था क्योकि जब फुलवा ने जब ये कहा की तुम्ही सच्चे मर्द हो ..तो वो खिड़की की ओर देख कर मुस्कुराई ..

युवराज को इस बात पर विस्वास ही नही हो रहा था की फुलवा ये जानते हुए भी बलवीर की बांहो में थी की वो उसे देख रहा है ..

फुलवा की कातिलाना अदा बिना किसी हथियार के भी किसी को मारने को काफी थी.युवराज को ये अपने आंखों का धोखा ही लगा..

फुलवा बलवीर को उकसा चुकी थी और बलवीर ने उसे अपने नीचे डाल लिया.वो जानवरो सा उसके ऊपर टूट पड़ा..

एक ही झटके में उसके सीने को ब्लाउज से आजद कर दिया ,और उसकी साड़ी निकाल फेंकी..

फुलवा अब बस एक पेटीकोट में थी और बलवीर के विशाल शरीर के नीचे मचल रही थी ,

“मैं तुमसे बहुत प्यार करता हु फुलवा ,तुम मेरी हो मेरी हो …”

बलवीर उसके पूरे चेहरे को चूमने लग.

फुलवा का हाथ ऊपर था जिसे बलवीर के मजबूत हाथो में थाम रखा था.वो उसके उरोजों को चूमे जा रहा था. उसका दूध पीने की पूरी जिद में थे

फुलवा की सिसकियां बढ़ते ही जा रही थी ,

बलवीर उठा और उसने अपने नीचे के वस्त्रों को निकाल फेक.उसके नाग की फुंकार ने युवराज को भी डरा दिया था.उसकी आंखे और भी फट गई थी,फुलवा भी उसे बिना पलक झपकाए देख रही थी ..

“तुम सच में सच्चे मर्द हो बलवीर “

फुलवा ने उसके औजार को हाथो से भरा और अपनी ओर खिंच लीया ,बलवीर की कमर अब लेटी हुई फुलवा के होठो के पास थी बलवीर की आंखे बंद थी ,फुलवा एक बार फिर खिड़की की ओर देखते हुए मुस्कुराई और खिड़की की ओर देखते हुए ही होले से बलवीर के ताजे औजार को अपने होठो से सहलाकर अपने मुह में ले लिया.बलवीर मानो सुख के सातवे आसमान में पहुच चुका था…

“आह मेरी फुलवा “उसका हाथो फुलवा के सर पर अपने ही आप आ चुका था. फुलवा भी अब खिड़की को देखना बंद कर चुकी थी उसकी आंखे भी बंद हो चुकी थी वो इतनी तन्मयता से बलवीर का औजार चूस रही थी मानो समय रुक गया हो और फुलवा के पूरे अमरीश उसी एक काम में लग गए हो …

बलवीर का गीला औजार अब और भी चमक रहा था. फुलवा ने अपने पेटीकोट का नाडा खुद ही खोल दिया .अंदर बालो से ढकी हुई योनि को देखकर बलवीर उसपर ही टूट पड़.उसके होठ फुलवा के योनि को पूरी तरह से सहला रहे थे…

“आह आह मैं मर जाऊंगी बलवीर आह ..मेरी जान “

फुलवा की सिसकियां बढ़ने लगी थी ,थोड़ी ही देर में उसका बदन अकड़ा और वो निढल होकर गिर गई …….

कुछ देर उसकी आंखे बंद ही रही लेकिन फिर बलवीर के उंगली के योनि में घुसने के आभस से उसने आंखे खोली उसके होठो में मुस्कुराहट थी उसने फिर से खिड़की की ओर देखा ..

बेचारा युवराज अपने प्यार को किसी और के हाथो लूटते हुए देख रहा था. लेकीन उसके औजार ने जैसे बगावत करार दी थी वो झुकने का नाम ही नही ले रहा था.औजार अपने पूरे शबाब पर था.उसकी अकड़ से युवराज को दर्द तक होने लगा था. उसने अपने कपड़े के कैद से उसे आजद कर दिया और अपने हाथो में भरकर उसे सहलाने लगा.......

इधर बलवीर ने अपनी थूक फुलवा की योनि को गीला कर दिया था.वो एक उंगली आसानी से अंदर बाहर कर रहा था. लेकीन अब भी उसमे इतनी जगह नही थी की उसका मूसल उस छोटी सी छेद में जा सके ,वो और थूक का सहारा ले रहा था. जब उसे लगा की ये भी काफी नही होगा वो घी ले आया और अपनी उंगलियों में लगाकर अच्छे से योनि में जगह बनाने लग.फुलवा दर्द और मजे के सामूहिक सम्मेलन से मदहोशी और दर्द से भरी हुई सिसकियां ले रही थी ..

बलवीर अब उसके ऊपर छा गया था और अपने औजार को घी से भिगो चुका था.चमकता हुआ उसका औजार फुलवा के योनि के द्वार को खोलने को तैयार था. पहले उसने योनि में हल्के हल्के ही औजार को सहलाया और आराम से अंदर करने लगा.....

“आह बलवीर नही ही........”

फुलवा की चीख सी गूंज गई जो जल्द ही बलवीर के मुह में दब गई ,वो उसके होठो को अपने होठो में भर चुका था. औजार अंदर जाता गया और फुलवा मानो बेहोश होते गई लेकिन बलवीर उसे प्यार से सहला रहा था. फुलवा ने आंखे खोली और बलवीर के होठो में अपने होठो को भर लीया ,दोनो ही मदहोशी में एक दूसरे को चूम रहे थे,बलवीर भी धीरे धीरे धक्के को बड़ा था रहा ,दोनो का ही पहली बार था दोनो ही एक दूसरे के प्यार में गुम हो रहे थे,

फुलवा ऐसे खो गई जैसे दुनिया अब उसके लिए खत्म हो गई हो ,धक्के तेज होते गए और फुलवा और बलवीर के मुह से निकलने वाली आवाजे भी ....

तूफान जब शांत हुआ दोनो ही पसीने से पूरी तरह से भीग चुके थे और बलवीर ने अपना पूरा दम फुलवा की कोख में छोड़ दिया था......

और युवराज ने दीवार पर ......

युवराज ने जब खुद को देखा तो वो अपनी ही स्तिथि पर शर्म और ग्लानि से भर गया.वो दौड़ाता हुआ भागा.वही फुलवा और बलवीर अपने ख्वाबो की दुनिया में मस्त एक दूसरे से लिपटे हुए पड़े थे..

“अब तो मेरा बेटा ही मेरा दुश्मन बना बैठा है संग्राम.समझ नही आ रहा की क्या किया जाय ..”

संग्राम चुप ही था. अमरीश नशे की हालत में था ..

“उस फुलवा को रास्ते से हटाना ही होगा ,मैं भी अपने अहंकार में आकर उस नागिन को दूध पिला रहा था. साली मुझे ही डस रहि हे... संग्राम ..अब भी समय है उसे मार कर कही फेक दो …”

संग्राम अब भी चुप था

“क्या हुआ चुप क्यो हो ..”

“ठाकुर साहब उसने सिर्फ आपके बेटे पर ही नही मेरे बेटे पर भी काबू कर रखा है ,बलवीर के रहते उसे मारना मुश्किल ही है ..”

“तो फिर क्या किया जाए ???”

“अगर इन दोनो के कारण ही वो मर जाए तो …”

“मतलब “

“मतलब की उसे हवेली से बाहर भेज दो युवराज के साथ और बाहर से आदमी बुला लेते है ,वो लोग उस पर नजर रखने के लिए कहो …,मौका पाकर वो लोग उनपर हमला कर देंगे और युवराज को भी शक नही होग की हमने हमला करवाया है ...और उसे हम बतलायेंगे की आपके दुश्मनों ने फुलवा को मार डाला ….”

अमरीश सोच में पड़ जाता है..

“क्या दिन आ गए है ,अपने ही बेटे पर हमला करवाना पड़ेगा.लेकिन क्या वो ये बात मान लेंगे की उसे हमने नही किसी और ने मारा है “

“फिक्र मत कीजिये बलवीर भी उनके साथ जाएगा.यंहा से तो दोनो अकेले ही निकलेंगे लेकिन मैं बलवीर को जानता हु वो फुलवा को युवराज के साथ अकेले नही जाने देगा.वो उनके पीछे जाएगा ही ,इसी दौरान उसके दिमाग में ये बात डाल देंगे की वो लोग ठाकुर के बेटे को मारने आये है.बलवीर फुलवा को बचाने जरूर जाएगा ….और इन सबकी लड़ाई में फुलवा पर कोई गोली चला देगा …….”

अमरीश की फिक्र थोड़ी कम हुई ..

“ठीक है जो करना है करो लेकिन युवराज और फुलवा बाहर जाएंगे क्यो ??”

“आप उसे वो शहर वाले फार्महाउस को देखने अकेले भेज दीजिये.फुलवा का साथ पाने के लिए वो उसे भी साथ ले जाएगा.आग तो उसे लगी ही है…..आज नही बुझा पाया तो कोई दूसरा मौका तो ढूंढेंगे ही ..”

अमरीश के चेहरे में मुस्कान आ गई ………

“लेकिन अकेले ही क्यो ,बलवीर भी साथ चले तो क्या दिक्कत है “

फुलवा ने युवराज के प्रस्ताव पर कहा …

“क्योकि मुझे अधूरा काम पूरा करना है ,और बलवीर के रहते मैं कुछ भी नही कर पाऊंगा ..”

“ओहो ऐसी बात है,लेकिन याद है मैंने कहा था की मुझे असली मर्द चाहिए और तुम तो अपने बाप के सामने कांपने लगते हो ..”

फुलवा खिलखिलाई

“फुलवा अगर तूम यही चाहती हो तो ठीक है. मैं तुम्हे इस हवेली के ही बंधन से आजाद कर दूंगा ,अब चलोगी मेरे साथ ..”

फुलवा युवराज को देखती रही ...और उसके गले से लग गई ……..

दोनो ही एक कार में बैठे जा रहे थे.जंहा फुलवा पूरी तरह से मस्ती के मुड़ में थी वही युवराज बेहद ही गंभीर दिख रहा थे

“इतने चुप क्यो हो ,कल तो बहुत कुछ करने को उतावले थे..”

“कुछ नही कुछ देर में ही पता चल जाएगा..”

युवराज ने कार रोड से उतार दी और जंगल की तरफ ले गया,कुछ दूर जाने के बाद गाड़ी रुकी ..

“यंहा क्यो रोक दिए …”

“थोड़ी दूर में एक झरना है “

“ओह तो जनाब झरने में मजे लेना चाहते है …”फुलवा के होठो में कातिल सी मुस्कान आयी लेकिन युवराज अब भी चुप ही था

फुलवा को ये उन्मुक्त वातावरण बेहद ही भा रहा था. वो खुशी से इधर उधर दौड़ रही थी ..

“अरे वँहा खड़े हुए क्या देख रहे हो आओ ना “

फुलवा चिल्लाई ,युवराज धीरे धीरे उसकी ओर बढ़ने लग.जब वो उसके थोड़ा नजदीक गया फुलवा का ध्यान उसके चेहरे पर गया..

वो कांप रहा था..पूरी तरह से लाल

“क्या हुआ तुम्हे “

फुलवा युवराज की तरफ आने लगी

“रुक जाओ मेरे पास मत आना “

युवराज ने उसके ऊपर पिस्तौल तान दी थी

“ये ..ये क्या कर रहे हो ठाकुर साहब ..ये कैसा मजाक है ”फुलवा ने कांपती हुई आवाज में कहा

“मजाक तुम इसे मजाक कहती हो ??मजाक तो तुमने मेरे साथ किया है फुलवा..मैं तो तुमसे प्यार करने लगा था लेकिन तुम ...तुमने मुझे धोखा दिया.तुम उस बलवीर के साथ ,वो भी तुम्हे पता था की मैं तुम्हे देख रहा था..”

फुलवा के होठो में कातिल मुस्कान खिल गई ..

“क्यो मजा आया ना ..सच में बलवीर सच्चा मर्द है”

युवराज का गुस्सा सातवे आसमान पर था और उसके हाथ भी कांपने लगे थे …

“पिता जी सही कहते थे ...तू है ही वेश्या ….”

बलवीर हवेली से दूर बैठा हुआ युवराज के गाड़ी के आने का इंतजार कर रहा था.उसे पता था की आज युवराज फुलवा को अकेले ले जा रहा है.लेकिन वो फुलवा को अकेले तो नही छोड़ सकता था.

वो एक मोड़ पर उसकी गाड़ी का इंतजार कर रहा था ताकि मौका देखकर वो उनके पीछे एक किराए की गड्डी से लग जाए ..

तभी कुछ लोग वँहा आ गए बलविर के पीछे बैठ कर शराब पीने लगे ,वो लोग गड्डी में थे. दस लोग थे .दिखने से ही गुंडे जैसे लग रहे थे.उन्हें पहले बलवीर ने नही देखा था शायद वो किसी दूसरी जगह से थे.

‘‘सालो जल्दी करो ठाकुर का बेटा आता ही होगा ..’’

‘‘खबर तो पक्की है ना तेरी वरना साला हम यंहा बैठे ही रह जाएंगे और वो आएगा ही नही ..’’

‘‘अरे अंदर की खबर है फिक्र मत कर अपनी वेश्या के साथ जा रहा है अय्याशी करने उसके ही चेले ने बताया है ..’’

बलवीर के कान उनकी बात से खड़े हो गए ,वो अपनी गाड़ी उठाकर वँहा से चला गया.उसके जाते ही वो एक दूसरे को देखने लगे

‘‘साले ने सुना की नही ..’’

‘‘फिक्र मत कर उसके चेहरे से ही लग रहा था की उसने सुन लीया है ..’’

युवराज के गाड़ी के आगे तीन गड्डीया चल रही थी. जिनमे से दो तो उन गुंडों के थे जिन्हें संग्राम ने बुलाया था और एक था बलवीर वो सबसे पीछे चल रहा था.वही गाड़ी के सामने 2 और गड्डीया थी.सभी गुंडे एक दूसरे से वायरलेस की मदद से बात कर रहे थे.वही उनके साथ वायरलेस की मदद से जुड़ा हुआ संग्राम भी पल पल की खबर ले रहा था ……

युवराज की गाड़ी जंगल में मुड़ने से सभी घबरा गए क्योकि सब ने सोचा था की वो फुलवा को फार्महाउस ले जाने वाला है …

सभी उसके पीछे लग गए और जब उनकी गाड़ी रुकी तो वो भी कुछ दूर में ही रुक गए.उन लोगो को ये भी पता था की बलवीर भी उनके पीछे है ,बलवीर गाड़ी एक कोने में लगाकर देखने लगा लेकिन जब उसने देखा की युवराज फुलवा के ऊपर पिस्तौल ताने खड़ा है तो वो दौड़ा …

‘‘हमारी क्या जरूरत ये तो ठाकुर का बेटा ही उसे मारने पर तुला है ‘‘

एक आदमी ने वायरलेस से पूरी बात संग्राम को बतलाई ..

‘‘चलो अच्छा ही हे... हमारे हाथ गंदे नही होंगे ‘‘संग्राम भी मुस्कुराया और अगले ही पल…

‘‘युवराज नही …’’

दौड़ता हुआ बलवीर फुलवा की ओर आ रहा था.बलवीर को देखकर युवराज और भी घबरा गया और पिस्तौल से गोली चला दी जो सीधे जाकर फुलवा के सीने में लग गई.खून की धार फुट पड़ी और बलवीर स्तब्ध सा बस उसके गिरते हुए ब देख रहा था. बलविर ने दौड़कर फुलवा को संभाला …

अब भी फुलवा के होठो में मुस्कान थी.. वो प्यार से बलवीर के गालो को सहला रही थी ,...

युवराज स्तब्ध खड़ा हुआ था.

संग्राम वायरलेस में चिल्लाया ..

‘‘सालो देख क्या रहे हो युवराज को वँहा से बाहर निकालो वरना बलवीर उसे मार डालेगा ..फायर करो ‘‘

वो लोग तेजी से सक्रिय हुए और युवराज को खिंचते हुए अपनी गड्डी में बिठा लीया …

‘‘मादरठोक रुक …….’’

बलवीर उनके पीछे दौड़ने को हुआ लेकिन गोलीयां चलने लगी और फुलवा ने बलवीर का हाथ थाम लीया ..

‘‘मुझे छोड़कर मत जाओ बलवीर ..’’

बलवीर रुका और देखते ही देखते फुलवा की आंखे बन्द हो गई .....रह गई तो बस बलवीर की चीखे जो पूरे जंगल को दहला रही थी ………

“हैल्लो हल्लो काम हो गया.युवराज की गोली से फुलवा मारी गई ,लेकिन बलवीर की हालत ठीक नही है ,...”

एक दूसरा जासूस वायरलेस से संग्राम से बात कर रहा था..

“कोई बात नही वो ठीक हो जाएगा ,युवराज को कुछ दिनों के लिये छिपाना पड़ेगा ,तुम आ जाओ और किसी के नजर में मत आना ..”

संग्राम ने अमरीश को देखा जो उसकी बात सुन रहा था.आज अमरीश के चेहरे में वो खुशी थी जो पहले कई दिनों से कभी नही आयी थी …

युवराज को कही छिपा दिया गया था ताकि वो बलवीर के कोप से बच सके.लेकिन बलवीर का भी कोई पता नही चल पा रहा था…

इधर जंगल मे ....

हरिया जंगल के अपने ठिकाने में बेचैनी के साथ घूम रहा था. होशियार सिंग और शंभु भी बेचैन लग रहे थे ..

कुछ देर के इंतजार के बाद उन्होंने किसी के आने की आहट सुनी और सामने जो था उसका चेहरा देख कर हरिया और झाबु दोनों ही झूम उठे …

“बापू ...मा…..”

फुलवा दौड़ाते हुए जाकर दोनों से लिपट गई थी ,आज उसने पहली बार इन्हें सामने से देखा था. दोनों ही अपनी बेटी को जितना प्यार दे सकते थे दे रहे थे.साथ ही आया बलवीर भी अपने आंखों में पानी लिए सब कुछ देख रहा था और फिर आयी चंपा जिसे देखकर बलवीर और फुलवा का मुह ही खुल गया…

“ये तो बिल्कुल मेरी तरह ही दिखती है …”फुलवा तुरंत अपनी बहन के गले से लग गई ,

“हा बस एक अंतर है इसके ठोड़ी में ये तीन बिंदिया बनाई गई है जिसे सरदार ने बचपन में ही बनवा दिया था..”

पूरा परिवार फिर से मिल चुका था ,सभी खुश थे तभी हरिया एक आदमी की तरफ मुड़ा

“अरे भवानी जा जाके ठाकुर को बता दे की मेरी बेटी अब मेरे साथ है.उसका सपना अधूरा का अधूरा ही रह गया लेकिन अब मेरा सपना पूरा होगा.ठाकुर की मौत का सपना …”

हरिया जोरो से हँस पड़ा था ………

कहने के लिए भवानी ठाकुर का जासूस था लेकिन उसे जासूस हरिया ने ही बनवाया था.ठाकुर उसे पैसे देता था हरिया की जासूसी करने के लीये और वो हरिया का ही एक वफादार था.

हवेली के अंदर का दृश्य.....

संग्राम और ठाकुर इस वाकये से बौखला गए थे,

"आखिर ये हुआ कैसे .."

अभी तक उन्हें कुछ समझ नही आ रहा था की आखिर युवराज ने जब फुलवा को मार दिया था.तो वो जिंदा कैसे बची. वही संग्राम इस चिंता में था की उसका बेटा भी फुलवा के प्यार में पड़कर अब उसे ही धोखा दे गया.

"ठाकुर साहब ये फुलवा की ही चाल थी.जब युवराज फुलवा को सिनेमा हॉल ले गया था तब भी वो अपने प्लान में काम कर रहे थे.वंहा बलवीर हरिया के एक आदमी से मिला था और उसे फुलवा की योजना समझाया था .युवराज तो फुलवा से अय्याशी करने में ही व्यस्त था. आखीर फुलवा ने युवराज को भड़का दिया ताकि वो उसे मारने की सोचे ,बलवीर ने उसके पिस्तौल में नकली गोलीयां डाल दी थी .रही सही कसर हमने उन दोनों को बाहर भेज कर पूरी कर दी ...."

भवानी की बात से ठाकुर बुरी तरह से बौखला गया था ,वो संग्राम की ओर ही देख रहा था ..

"तुम्हारे खून ने तो अच्छा धोखा दिया हमे "

संग्राम क्या कहता लेकिन उसकी आंखे नीची नही हुई थी ...

"ठाकुर साहब हमारे खून में ही वफादारी है.जैसे मैं आपके लिए वफादार हु वैसे ही मेरा बेटा उस फुलवा के लिए वफादार है.उसने अपनी वफादारी निभाई और मैंने अपनी.लेकिन मुझे लगता है की अब मैं और ये काम नही कर पाऊंगा .मैं आपके लिए किसी की जान ले सकता और अपनी जान दे भी सकता हु लेकिन .....लेकिन मैं अपने बेटे की जान कैसे लूंगा.अब तो वो भी हरिया गिरोह का एक सदस्य बन गया है "

ठाकुर ने जीवन में पहली बार संग्राम की आंखों में आंसू देखे थे ..

‘‘तुम मेरे लिए आज भी उतने ही मूल्यवान हो संग्राम ,अगर तुम भी मेरा साथ छोड़ दोगे तो मैं टूट ही जाऊंगा ‘‘

ठाकुर का अहंकार जैसे आज टूट सा गया था.लेकिन संग्राम ने जैसे फैसला कर लीया हो ..

‘‘मुझे माफ कर दीजिए ठाकुर साहब.मैं अपनी बाकी की जिंदगी चैन से गुजरना चाहता हु .इन सब से दूर .मैं अपने ही बेटे को मारने की साजिश में अपनी बाकी जिंदगी नहई गुजार सकता.आपने मुझपर बहुत भरोसा किया है.मुझे जानकर अच्छा लगा की आप की नजरो में मेरी इतनी कद्र है लेकिन ...लेकिन मुझे माफ कीजिये ‘‘

ठाकुर संग्राम को रोकना तो चाहता था लेकिन संग्राम के फैसले के सामने वो भी मजबूर हो गया था.वो अपना सबसे अच्छा सिपहसालार को खो रहा था ……….

वर्तमान में....

“हम्म्म फिर संग्राम गया कहा “सुमित के मुह से अचानक ही निकल गया

“कोई नही जानता.सिवाय बलवीर के लेकिन उसने कभी किसी को नही बताया की संग्राम आखिर गया कहा .शायद वो अपनी बाकी की जिंदगी चैन से जीना चाहता था ,”

“यानी बलवीर से वो फिर से मिला ???”

“सुना है एक बार उसने बलवीर को अपने पास बुलाया था. लेकिन उन दोनों में क्या बातचीत हुई और वो कहा गया था ये किसी को नही पता “

त्रिवेदी की बात से सुमित को सकून मिला ..

“फिर फिर क्या हुआ ..?”

त्रिवेदी के चेहरे में सुमित के उत्तेजना को देखकर एक मुस्कान आ गई

“वही जो नियति को मंजूर था. ठाकूर बौखला गया था. और हरिया के पीछे पड़ गया था. वही उसने लतिमा की मदद से चंपा ,फुलवा और बलवीर को इन सबसे दूर शहर भेज दिया.हरिया के पास यही समय था की ठाकुर पर पूरे जोर से प्रहार किया जाए क्योकि उसके पास संग्राम अब नही था. दोनों की लड़ाई तेज हो गई लेकिन नसीब को कुछ और ही मंजूर था. ठाकूर को पता चल गया की भवानी असल में उसकी नही हरिया की जासूसी करता है और इसी का फायदा उठा कर वो हरिया के ठिकाने तक पहुच गया.हरिया मारा गया साथ ही झाबु भी..... पूरा गैंग ही तबाह हो गया …”त्रिवेदी ने एक गहरी सांस ली

“फिर ..”सुमित की उत्सुकता और भी बढ़ गई थी …

“फिर …….फिर फुलवा और बलवीर वापस आये ..”त्रिवेदी के होठो में एक मुस्कान थी ….

उतने मे चंपा की आवाज आयी ..“अब आप लोग अंदर आ जाइये रात बहुत हो गई है “

त्रिवेदी बिदा लेकर अपने घर जा चुका था..और सुमित अब चंपा की बांहों में था…

“तुमने मुझे कभी बताया नही की तुम शहर में रहती थी “

“हा मेरी पढ़ाई वही हुई थी.ठाकुर से बचने के लिए बाबूजी ने मुझे शहर भेज दिया था. लेकीन जब बाबूजी को ठाकुर ने मार दिया और फुलवा और बलवीर वापस आ गए तो मेरा शहर में रहना भी दुर्भर हो गया...ठाकुर के आदमी हमे सभी जगह तलाश कर रहे थे,वो तो मुझे भी मार ही देते लेकिन तुमने मुझे बचा लीया “

चंपा की बात सुनकर सुमित थोड़ा चौक गया ..

“क्या??...क्या कहा...? मैंने बचा लीया ...?“

इस बार चंपा मुस्कुराई

“ठाकुर को पता था की मैं किसी जंगल के सरदार के पास नही बल्कि शहर में रहती हु और अपनी पढ़ाई कर रही हु,मैं गीता(लतिमा की बेटी) के ही कालेज में थी.इधर चंपा का आतंक फैल रहा था और वही ठाकुर को मेरी कोई सुध नही थी की हरिया की कोई दूसरी बेटी भी है.मैंने मुम्बई से अपनी इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी की और ..”

“वाट द फक ...तुम ...तुमने इंजीनियरिंग की है ..”

ये ऐसे था जैसे सुमित के सर पर किसी ने कोई बम्ब फोड़ दिया हो , सुमित जिसे आजतक इस जंगल की भोली भाली लड़की समझ रहा था वो तो मॉर्डन लड़की है ..

सुमित अपना सर पकड़ कर खड़ा हो गया था लेकिन चंपा घबराई नही बल्कि सिर्फ मुस्कुराती रही ..

“तुमने मुझे ये सब पहले क्यो नही बताया ..??” सुमित विस्मित होकर बोल उठा

इस बार चंपा के चेहरे में एक फिक्र और चिंता के भाव थे

“इसी डर से की कही तुम मुझे छोड़कर ना चले जाओ.फुलवा ने अपनी चाल चल दियी थी.तुम्हारे आने के पहले से ही ये सब शुरू हो गया था.ठाकुर को पता चल गया था की मै शहर मे पढाई कर रही हु.वंहा मेरी जान को खतरा होने लगा था. लेकिन ठाकुर को चकमा देने के लिए फुलवा चाहती थी की मैं ये देश छोड़कर निकल जाऊ.ये सब हो पाता लेकिन उससे पहले ही उस इंस्पेक्टर का खून हो गया और तुम उसकी जगह आ गए.दीदी ने तुम्हे आजमाने की सोची और बलवीर के कहने पर तुमसे मिलने गई.याद है जब तुम पहली बार फुलवा से उस झील में मिले थे …”

“बलवीर के कहने पर ???” सुमित फिर से थोडा आश्चर्य में था..

“हा फुलवा किसी पर यू ही भरोसा नही कर लेती.उसने तुम्हे आजमाया लेकिन उससे गलती हो गई.वो तुम्हारे प्यार में पड़ गई. उसे तुम बहुत अच्छे लगे लेकिन तुम उसे चंपा ही समझते रहे और वो भी आगे बढ़ गई.उस दिन जब तुम दोनों शहर के दुकान में गए थे.. तो तुम्हें युवराज मिल गया और ठाकुर ने तूम दोनों को बचा लीया.क्योकि वो भी जानता था की अगर फुलवा वंहा है तो उसके बेटे को भी वंहा खतरा होगा.तब तक तुम्हारे साथ मैं नही बल्कि फुलवा ही थी.

लेकिन इन सबमे फुलवा के सामने एक सवाल लाकर खड़ा कर दिया था की उसे किसे चुनना है.अपने प्यार को या फिर उस लक्ष्य को जिसके लिए उसने अपनी जवानी अपना चैन सुख सब कुछ कुर्बान कर दिया था. और फुलवा ने फैसला ले लीया.उसने अपने लक्ष्य को ही चुना…...उसने इसके लिए मुझे फिर से वापस बुला लिया.ये बात ठाकुर को भी पता चल गई थी और वो इससे और भी ज्यादा परेशान हो गया. क्योकि वो जानता था की अगर उसने फुलवा समझ कर मुझे मार दिया तो बड़ी गड़बड़ हो जाएगी.

उसने भी एक प्लान बना रखा था उसने तुम्हे खरीदने की कोशिश की वो जानता था की तुम चंपा के कितने करीब हो ,और फुलवा को पकड़ने के लिए अपना जी जान लगा दोगे इसलिए उसने मेरी तरफ से ध्यान भी हटा लिया.तो तुमने ही मुझे बचाया ना ..”

इस बार सुमित का दिमाग हिल गया था.सुमित अपना सर पकड़े हुए बैठा हुआ था. उसके आंखों में दुख था आंसू थे , वो अपने आप को किसी बेवकूफ की तरह महसूस कर रहा था …

“तो तुम दोनों ने मिलकर मेरा इस्तेमाल किय.और तुम..तुमने तो बस मुझसे प्यार का दिखावा किया बस ..”

चंपा आकर उसके बाजू में बैठ गई …

“सच कभी कभी कड़वा होता है सुमित.लेकिन मेरी बात का विस्वास करो की फुलवा और मैंने दोनों ने ही तुमसे बेहद प्यार किया है.तुम जानते हो की हमारी आंखे कभी गलत नही थी ...हा जब मुझे बुलाया गया था तब मैं बस एक खेल खेलना चाहती थी. फुलवा की मदद करना चाहती थी.याद है जब तुम मेरे झोपड़े में आये थे शराब पीने के लिए.मैंने उस दिन तुम्हे पहली बार देखा था.तुम्हे महसूस किया था.

ये हमारा ही प्लान था की तुम मेरे नजदीक ना आ पाओ इसलिए फुलवा ने गोली चलवा दी और तुम उसे ढूंढने जंगल में चले गए.लेकिन यकीन मानो वो आखिरी बार था जब फुलवा तुम्हारे साथ थी.क्योकि मैं भी तुम्हारे प्यार में पड़ चुकी थी और फुलवा ने ये कुर्बानी भी दे दी.तब से तुम्हारे साथ बस मैं ही थी.हमने ही एक दूजे को अपना प्यार दिया और आज भी मैं तुमसे बेहद मोहोब्बत करती हु …”

सुमित को पता था की उसे बेवकूफ बनाया गया था.लेकिन वो इस बात से इनकार नही कर सकता की चाहे वो फुलवा हो या चंपा उन्होंने सुमितसे प्यार तो बेपनाह किया था.इनकी आंखे कभी झूट नही बोलती थी ,किसी की भी नही बोलती बस पढ़ने वाला होना चाहिए ..

सुमित अपने ही दुनिया में गुम था.“ये सब तुमने आखिर किया कैसे ???”

“कुछ लोग है जो हमारी मदद कर दिया करते है ,मेरे पिता जी और फुलवा के चाहने वाले.वो दोनों ही डकैत थे लेकिन ...लेकिन उन्होंने अच्छाई के लिए हथियार उठाये थे कभी गरीबो और मजबूरों को परेशान नही किया.उनके कारण कई बच्चे अपनी जिंदगी अच्छे से जी पा रहे है ,अच्छे कालेजो में पढ़ रहे है और अच्छी नॉकरिया भी कर रहे है ,कभी कभी ये सब हमारी मदद कर देते है “

चंपा का चेहरा शांत था. सुमित को एक अलग ही चंपा दिख रही थी. उसने अपने होठो को उसके होठो से मिला दिया ..

“एक बात पुछु चंपा...."सुमित ने कहा

"हा ! पूछो ..."

"फुलवा और बलवीर कहा है ,अभी तक उनकी बॉडी नही मिली कही वो दोनों अभी भी …”जो कीड़ा सुमितके दिमाग में इतने दिनों से हलचल मचाये था आखिर वो बाहर आ ही गया

चंपा जोरो से हँस पड़ी …“तुम रहोगे पुलिस वाले ही “

“क्या करे मेडम काम है अपना ..”

“ओह तो अपना काम कीजिये इंस्पेक्टर साहब ,खुद पता लगाइए की आखिर वो है कहा “

“मतलब की दोनों अभी भी जिंदा है “

“यह तो बस भगवान को पता हे ..”

चंपा सुमित की गोद में बैठते हुए बोली. उसने अपने होठ सुमित के होठो से मिला दिए ……...

समय बीतता जा रहा था , सुमित चंपा से शादी करना चाहता था. लेकिन उसने फुलवा को वचन दिया था की ठाकुर को उसके किये की सजा देगा. लेकिन ठाकुर के खिलाफ कोई भी सबूत ही हाथ नही लग रहा था. ठाकूर भी उसका तबादला कही दूसरी जगह करना चाहता था लेकिन नही कर पा रहा था.

‘‘चंपा तुम इन झंझट से दूर क्यो नही चली जाती ,मैं भी अपना काम खत्म करके वही आ जाऊंगा दोनों वही सेटल हो जाएंगे’’एक दिन सुमित ने उसे कह ही दिया

" इन्स्पेक्टर सुमित जी पहले मुझे अपनी बीवी बनाइये फिर मैं कही जाऊंगी,तुमसे शादी किये बिना मैं तुम्हे नही छोड़ने वाली ‘‘चंपा की बात सुनकर सुमित थोड़ा उदास हो गया

‘‘क्या करू समझ से परे है ,ठाकुर मेरे सोच से कही ज्यादा चालाक है.बेटे के मर जाने के बाद ऐसे तो वो टूट सा गया है लेकिन अभी भी उसकी पहुच बाकी है.हमने उसके गलत कामो को बंद तो कर दिया लेकिन उसके खिलाफ कोई ऐसा सबूत नही जुटा पाए की उसे कोई सजा मील सके ‘‘

‘‘तो तुम सच में उस कसम को लेकर सीरियस हो ‘‘चंपा सुमित आंखों में देख रही थी …

‘‘बहुत ज्यादा …’’

‘‘तो तुम्हरे पास समय है जितना तुम लेना चाहो। मैं कही नही जा रही तुम्हे छोड़कर.ठाकुर ने मेरे पिता और मेरे मा को मार डाला लेकिन मेरे दिल में कभी उसके लिए बदले की भावना नही उठी.लेकिन फुलवा ने अपनी जिंदगी लगा दी.मैं उसके जैसी नही हो सकती लेकिन मैं उसकी इज्जत करती हु.उसका सपना पूरा करो सुमित मैं तुम्हारी ही हु.और तुम्हारी बीवी बनने के लिए कई जन्मों तक इंतजार कर सकती हु ‘‘

चंपा की आंखों में हल्की नमी थी.... लेकिन होठो पर एक प्यारी सी मुस्कान थी....

“ये क्या कह रहे हो त्रिवेदी जी “

“सच कह रहा हु सर वो खुद आपसे मिलने आने वाला है “

त्रिवेदी की बात सुनकर मैं सोच में पड़ गया था लेकिन मैंने एक गहरी सांस ली

“ठिक है आने दो उसे देखते है क्या कहता है ..”

ठाकुर अमरीश मुझसे मिलना चाहता था.और मुझसे मिलने खुद आ रहा था क्या बात है.लेकिन क्यो...बहुत जोर लगाने पर भी मुझे कुछ समझ नही आया ….

अमरीश आकर मेरे सामने बैठ गया …….

“कहिए ठाकुर साहब आखिर हमे आज कैसे याद किया अापने “

मेरी बात सुनकर उसके होठो में एक फीफी की मुस्कान आई

“सुमित जो हुआ वो तो हो गया लेकिन अब मैं अपने किये पर शर्मिंदा हु.मैंने अपने भाई को खो दिया.अपने बेटे को खो दिया.मेरी बीवी मुझसे सालों से बात नही करती.इतने धन दौलत का मैं करू तो क्या करू.सब जैसे अब मुझे मिट्टी से लगने लगे है …

मैंने पूरी जिंदगी सिर्फ दौलत और ताकत कमाने में लगा दी सुमित.अब मैं सकून की जिंदगी जीना चाहता हु. इन सब लफड़ो से दूर …

मेरी बात से ये मत समझना की मैं तुम्हारे पास अपने को कानुन के हवाले करने आया हु.नही मैं आज तक पुलिस के हत्थे नही चढ़ा आगे भी नही चढूंगा.क्योकि मेरे पहले किये बुरे कामो का कोई सबूत है नही और अब मैंने सारे बुरे काम खुद ही खत्म कर दिए है …

मैं यंहा तुम्हे आमंत्रण देने आया हु .मैं एक नई शुरुवात करना चाहता हु.इसलिए घर में एक पूजा रखी है जिससे मेरे बेटे की आत्मा को भी शांति मिले.तुम्हे और चंपा को आना ही है ...अगर तुम आओगे तो मुझे और कुसुम को अच्छा लगेगा..”

मैं ठाकुर को देखता ही रहा ...वो थोड़ी देर रुका और फिर बोलने लगा

“कुसुम ने हमेशा ही फुलवा और युवराज को अपने बच्चों की तरह प्यार किया है.ये उसके लिए बड़े ही दुख की घड़ी है,वो चाहती थी की एक बार फुलवा से मिल पाए,शायद चंपा के रूप में उसे फुलवा दिख जाए …”

वो मुझे नमस्कार करता हुआ एक कार्ड देकर चला गया साथ ही त्रिवेदी जी को भी एक कार्ड दिया था …..

मैं और त्रिवेदी जी एक दूसरे को ही देख रहे थे,आंखों ही आंखों में एक दूजे को ये पूछ रहे थे की जाए की नही …

“ठाकुर ने जो भी किया हो लेकिन हमे कुसुम मौसी के लीया वंहा जाना चाहिए .उन्होंने फुलवा को दिल से प्यार किया था. अपणी बच्ची की तरह उसकी हिफाजत की और उनके ही कारण तो मा और बुआ ठाकुर के चुंगल से निकल पाई .हम इतना कुछ कैसे भूल सकते है …”

ठाकुर के आमंत्रण की बात का पता चलते ही चंपा भावुक हो गई थी …

थोड़ी देर बाद ही मुझे पता चला की ठाकुर ने कुछ धर्मराज,गीता और डॉक्टर बॅनर्जी को भी निमंत्रण दिया है...उसके साथ कुछ वीआईपी लोग भी आ रहे थे …

आखिर हम सबने जाने का फैसला कर लीया ……

चंपा मेरी चंपा इतनी खूबसूरत थी ,वो एक लाल रंग की साड़ी में किसी अप्सरा से कम नही लग रही थी.उसकी पतली झालरदार साड़ी उसे कसे हुए जिस्म में कसी हुई थी .कमर में एक चांदी का कमरबंध लटक रहा था.उसकी नाभि के पास पेट का हिस्सा पूरी तरह से दर्शनीय था.पतली कमर और चौड़ी नितंब वाली मेरी जान के गोरे गोरे जिस्म जो की उस लाल साड़ी की लालिमा से झांक रहे थे और मुझे दीवाना बना रहे थे.

उसकी लाल साड़ी के किनारों पर नक्कासी की गई थी.हाथो का वर्क था जो की हरे पट्टी के ऊपर किया गया ही उसने लाल रंग का ही ब्लाउज पहन रखा थी. साडी पतली थी और ब्लाउज खुले हुए गले का यह किसी भी मर्द के दिल की धड़कनों को बढ़ाने के लिए काफी था. और उसके साथ उसका वो मादक जिस्म …..

उसने हल्के हल्के अपने गले के पास कुछ इत्र का छिड़काव किया जिससे कमरे में हल्की गंध झूम उठी साथ ही मेरा दिल भी ,मैंने उसे पीछे से पकड़ लीया था ,वो कसमसाई तो उसके हाथो की चूड़ियां खनक उठी……..

लाल हरे रंग की चूड़ियां कुछ चमकीले चूड़ियों के साथ पहने गए थे,मैंने उसके हाथो को अपने हाथो में ले लिया.उसकी हर चीज आज गजब की थी……

“कहर ढाने का इरादा है क्या ??”

मैं किसी सम्मोहन के आवेश में आकर बोल उठा..

“कहर ..??? आप के सिवा किसपर कहर बरसाउंगी ,”

उसने अपने निचले होठो को अपने दांतो से हल्के से कांटा ..और शरमाई मैंने उसे अपनी ओर पलटा लीया था ,उसके सीने मेरे सिनो में धंस गए

“ओह तो मेरी रानी मुझपर ही कहर बरसा रही है..”

मैंने उसके गले को चूमना चाहा लेकिन उसने अपना गला घुमा लीया फिर भी मेरे होठ का गीलापन उसके गले में जा चिपका ..

वो फिर से मचली

“ओहो छोड़ो ना पूरा खराब कर दोगो …”

“अरे जान खराब करने के लिए ही तो सजी हो ..”

मैंने थोड़े और जोर से उसे अपनी ओर खींचा

“हटो पूजा के बाद घर आकर पूरा खराब कर लेना अभी तो हटो ..”

उसने मुझे धक्का दिया और मैंने उसे छोड़ दिया

“तो पूरी शाम बस मुझे तड़फाना पड़ेगा “

मेरी बात सुनकर वो हँस पड़ी

“थोड़ी सी तड़फन भी अच्छी होती है बाबू…सुना नही है क्या इंतजार का फल मीठा होता है…अब चलो जल्दी से तैयार हो जाओ ,फूफा जी और गीता भी आते ही होंगे “

“ओहो जिजाजी मैंने सुना था की लडकिया तैयार होने में टाइम लगती है लेकिन पहली बार देख रही हु की बीबी तैयार बैठी और और पति देव तैयार होने में लेट हो गए .. वैसे हैंडसम लग रहे हो “

मेरे कमरे से निकलते ही गीता की आवाज आई ,वो लोग आ चुके थे ..

“अरे यार काम में फंस गया था ..”

ठाकुर के घर पूजा में सभी जाने पहचाने चेहरे आये हुए थे.शहर से डॉक्टर बनॅर्जी और उनकी सेकेट्री मेरी भी पधारी थी.त्रिवेदी जी भी आये हुए थे.प्रदेश के मुख्यमंत्री और गहृमंत्री भी आये हुए थे.पुलिस विभाग के कई अधिकारी मुझे वंहा मिल गए,ठाकुर जैसे अपने गुनाहों को साफ कर सभी से अच्छे रिश्ते बनाना चाहता था. वो सभी से अच्छे से मिल रहा था.मैंने अपने जीवन में उसे इतना नम्र कभी नही देखा था. साथ ही उसकी बीवी कुसुम भी थी …...जब हम अंदर आये तो कुसुम हमारे पास आ गई और चंपा को देखते ही उसकी आंखों में आंसू आ गए ..

वो बार बार चंपा के गालों को सहला रही थी ,तो कभी वो गीता पर भी अपना प्यार बरसाती ,गीता और चंपा की भी आंखे गीली थी …..

मैंने इस हवेली के बारे में बहुत कुछ सुना था. आज उसके अंदर आकर देख भी रहा था.मैंने गौर किया जितना मैंने सोचा था ये उससे कही बड़ी थी.मुझे याद आया की कैसे इसी हवेली में फुलवा बड़ी हुई थी.उससे पहले कुसुम को हरिया ने इसी हवेली में प्राप्त किया था.इसी हवेली के किसी कमरे में झाबु और लतिमा को बंदी बनाया गया रहा होगा...मैं पूरी हवेली को ध्यान से देख रहा था तभी मेरे पास धर्मराज और डॉक्टर आकर खड़े हो गए ..

“क्या देख रहे हो सुमित ,”धर्मराज ने कहा

“कुछ नही फूफा जी बस ..”

“ह्म्म्म इसी हवेली में मेरा बचपन बिता और मैं यही जवान हुआ...इसी हवेली में मुझे मेरी लतिमा मिली “

धर्मराज ने एक गहरी सांस छोड़ी जैसे पुरानी यादों को वो बहुत याद कर रहा हो

तभी मुझे हवेली के छत पर कोई इंसान की परछाई दिखाई दी …

“वंहा इस वक्त कौन होगा “अंधेरे के कारण मुझे साफ साफ कुछ नही दिख रहा था.लेकिन मुझे इतना तो यकीन था की कोई व्यक्ति छत पर घूम रहा होगा ..

धर्मराज और सुमित दोनों भी उस ओर देखने लगे....

‘‘होगा कोई हवेली का ही नॉकर ,यंहा बहुत से लोग काम करते है ‘‘
धर्मराज बोल उठा ………..

पूजा खत्म हो चुकी थी कई मेहमान भी जा चुके थे.कुसुम और ठाकुर के विशेष अनुरोध पर कुछ लोग ही रुके हुए थे.सभी बड़े से हाल में बैठे बाते कर रहे थे.मर्दों के लिए शराब की व्यवस्था की गई थी.वही औरते आपस में ना जाने क्या बात करने में बहुत ही व्यस्त दिख रही थी …

डॉक्टर,मेरी ,मैं ,धर्मराज ,गीता ,त्रिवेदी के अलावा ठाकुर का एक अजीज दोस्त मंत्री चौहान रुके हुए थे ..

“धर्मराज मैं चाहता हु की तुम बिटिया के साथ फिर से हवेली में आ जाओ “

पेग लगाते हुए ठाकुर अमरीश बोल उठा. धर्मराज बस अवाक उसके चेहरे को देखने लगा जैसे उसे यकीन ही नही हो रहा था की उसे कोई ऐसा कुछ कहेगा …

“तुम मेरे छोटे भाई हो और मैं हमेशा से ही तुमसे बेहद ही प्यार करता हु …”

धर्मराज कुछ भी नही बोल पाया बस उसके आंखों में आंसू ही थे …

थोड़ी देर बाद सभी ने मिलकर खाना खाया. रात बहुत हो चुकी थी हम जाने वाले थे लेकिन ठाकुर ने हमे फिर से रोक लीया.उसके हाथ में एक लड्डू का पैकेट था…

“बातों बातों में हम प्रसाद लेना तो भूल ही गए “अमरीश के होठो में एक मुस्कान थी. सभी का उसपर ध्यान गया

“लाओ मैं बांट देता हु “

मंत्री चौहान ने उसके हाथो से वो पैकेट ले लीया और सभी को बांटने लगा.सभी ने बारी बारी से वो लड्डू खा लीया था अंत में वो ठाकुर के पास पहुचा.सभी की आंखे उस समय ठाकुर के ऊपर जम गई जब चौहान ने अमरीश को लड्डू नही दिया बल्कि हम सभी को देखते हुए हँसने लगा …

सभी की आंखे फट रही थी ,जैसे कुछ समझ नही आ रहा हो की आखिर हुआ क्या …

“तुम सभी के कारण आज मेरी ये हालत हुई है.आज मैं सबसे अपना बदला लूंगा “

अचानक ही अमरीश के चेहरे का भाव बदला और वो अट्हास करने लगा.मेरे तो जैसे पैरों से जमीन ही खिसक गई थी.मुझे समझ आ चुका था की आखिर हमारे साथ क्या हुआ है.मैंने खड़े होने की कोशिश की लेकिन ..

धड़ाम ..

मैं जमीन में गिर गया थ. यही हालात चंपा और डॉक्टर की भी थी जिन्होंने खड़े होने की कोशिश की थी.मैं कुछ बोलने वाला था लेकिन लगा जैसे मुह खोलने तक की ताकत नही बची है.पूरा शरीर सुन्न पड़ने लगा था.जैसे पूरा शरीर पड़ा तो है लेकिन उसपर अब मेरा कोई भी काबू नही रह गया.मुझे सब दिखाई और सुनाई दे रहा था.मेने अपना सर घुमा कर चंपा की ओर देखना चाहा जो की मेरे पीछे ही जमीन में गिरी हुई थी लेकिन सर भी घुमा नही पाय.ठाकुर के इरादों की समझ मुझे आ चुकी थी और अपना अंत नजदीक ही दिख रहा था .कुछ ही देर हुए थे की कानो में आने वाली आवाजे भारी होती गई ऐसा लगा जैसे वो दूर जा रही है आंखे भी ना चाहते हुए बंद हो रही थी.उसे खोले रखने तक की ताकत मुझमें नही थी.आखिर सब कुछ धुंधला हो चुका था और बस एक सेकेंड की बात और सारी आवाजे और दृश्य गायब हो गयो ……….

ना जाने कितनी देर हो चुकी थी.मुझे लगा था जैसे मैं कभी आंखे नही खोलूंगा लेकिन मुझे होश फिर से आने लगा था.मुझे कुछ कुछ आसपास का आभास होने लगा था.आसपास कई लोगो की आवाजे आ रही थी जैसे बहुत भीड़ लगी हो.मैंने धीरे से आंखे खोलने की कोशिश की मैं सफल भी हुआ ,सामने ऊपर छत दिखाई दे रही थी.मैंने अपना गला मोड़ने की कोशिश की तभी किसी ने मेरे सर को अपने हाथो से उठाया ..

“ आराम से अभी कोई ताकत मत लगाइए आप ठीक है ..”

वो एक लड़की की आवाज थी मैंने देखा वो चेहरा मैंने पहले कभी नही देखा था लेकिन उस सौम्य से चेहरे में मुझे देखकर हल्की सी मुस्कान जरूर आ गई ,..

कुछ ही देर में मैं सामान्य हो चुका था और उस लड़की ने मुझे उठाकर बिठा दिया था …

“ये सब क्या हो रहा है “

मैंने उस लड़की से कहा जिसने एक डॉक्टर के कपडे पहने हुए थे

“आप ठीक है आपको नशे की कोई दवाई खिलाई गई थी. जिसके कारण आप बेहोश थे लेकिन अब आप होश में है ..”

मैंने नजर चारो ओर घुमाई सामने चंपा मुझे देखकर मुस्कुरा रही थी.वही डॉक्टर और धर्मराज भी होश में आ चुके थे और उन्हें भी डॉक्टर उठाकर बिठा रहे थे .बाकी के लोग अभी होश में नही आये थे जबकि त्रिवेदी जी होश में आकर कुर्सी में बैठे चाय की चुस्कियां ले रहे थे…वो डॉक्टर मुझे छोड़कर दुसरो के पास चली गई.

“ये सब क्या है त्रिवेदी और ठाकुर और चौहान कहा है “

त्रिवेदी मेरी बात सुनकर मुस्कुराया जिससे मैं और भी अचंबित हो गया.हम जैसे नया जन्म लेकर आये थे पता नही हम जिंदा क्यो थे ?क्योकि ठाकुर तो हमे मारने की योजना बना ही चुका था…

त्रिवेदी एक चाय का कप लेकर मेरे पास आ गया और मुझे दिया.

“थोड़ा रिलेक्स हो जाओ सर ,जवाब बाहर है,पहले चाय पी लो थोड़ा रिलेक्स हो जाओ फिर बाहर चलते है “

मैं बिना कुछ बोले चाय पीने लगा.वंहा कोई भी कुछ नही बोल रहा था. डॉक्टरो की टीम सभी के पास जाकर उनके नब्ज़ देख रही थी और उन्हें इंजेक्सन लगा रही थी. जिससे लोग फिर से होश में आ रहे थे.वही कमरे के बाहर मुझे और भी हलचल दिखाई दे रही थी.कुछ पुलिस वाले भी दिखे जिससे मेरी उत्सुकता और भी बढ़ रही थी.चंपा बिल्कुल ही रिलेक्स दिख रही थी वो आंखे बंद कर सोफे से टिकी हुई लेटी हुई थी हमारे बीच कोई भी बात नही हुई …

चाय खत्म कर मैं खड़ा होने की कोशिश करने लगा.त्रिवेदी ने मुझे थोड़ा सहारा दिया मैं अब अपने पैरों पर आराम से खड़ा था ..

हम बाहर आये और बाहर बरामदे पर पहुचते ही मैं फिर विस्मय से भर गया.चारो ओर बस पुलिस ही पुलिस दिख रही थी ,यंहा तक की कमिश्नर भी आये हुए थे…..

पास ही खड़ा एक सिपाही पंचनामा बना रहा था

“इधर दिखाओ “

मैंने उसके हाथो से वो पंचनामा पकड़ा ,मैं उसे पढ़ने लगा

“ये सब क्या ..ठाकुर और चौहान “

मैंने सिपाही को देखा

“जी सर दोनों कल रात आप लोगो को नशे की दवाई देने के बाद भारी शराब के नशे में छत से गिर कर मर गए. …सीसीटीवी फुटेज से पता चला की इन दोनों ने मिलकर ही लड्डू में नशे की दवाई डालकर आप लोगो को खिलाया था ”

मैं अभी उसे देख रहा था तो कभी त्रिवेदी को और कभी…. बरामदे में पड़े हुए उन दो लाशों को ……………...

बात साफ थी.पंचनामा बन चुका था.सभी इस बात को मान भी चुके थे लेकिन मेरा दिमाग अब भी इस बात को सही मानने को तैयार नही था…

अमरीश ठाकुर इतना भी बेवकूफ नही था की खुद ही अपने घर में सीसीटीवी कैमरा लगा कर अपने गुनाहों को रिकार्ड होने दे.वही वो इतना बड़ा बेवकूफ भी नही था की अपने हाथ में आया हुआ इतना बड़ा मौका यू ही छोड़ दे .उसके सारे दुश्मन उसके सामने ही थे,सभी लाचार थे वो हमारे साथ कुछ भी कर सकता था ,लेकिन किसी को कोई भी नुकसान नही हुआ था.मैं ये बात कैसे मान सकता था की अमरीश हमे बेहोश करने के बाद दो मंजिल चढ़कर छत में जाकर इतनी शराब पीता है की वंहा से गिर जाता है यही नही उसका दोस्त जो की एक मंत्री है वो भी ऐसी बेवकूफी कर डालता है……

मुझे इसके पीछे कोई बड़ी साजिश का आभास हो रहा था लेकिन मैं कुछ भी नही कर सकता था.क्योकि मुख्यमंत्री ने भी केस वही बंद करने की बात कह दी ,इसके ऊपर अब कोई और तहकिकात नही होनी थी ,ऐसे भी चीजे बिल्कुल साफ थी,ठाकुर के पास हमे बेहोश करने की मजबूत वजह भी थी और मंत्री को ऐसे भी ठाकुर के गुनाहों में बराबर का हिस्सेदार रहा था जिसका पता सभी को था. लेकीन ठाकुर के कारण कोई उसे कुछ बोलता नही था……..

मैं अपने घर के सोफे में बैठा हुआ यही सब कुछ सोच रहा था तभी …

“क्यो जिजाजी क्या सोच रहे हो ,मेरे ख्याल से शादी की तैयारी के बारे में ही सोच रहे होंगे ..”

गीता की खनखनाती हुई आवाज मेरे कानो में पड़ी..

मैंने आंखे खोली तो सामने गीता और चंपा थी ,शादी की बात सुनकर चंपा थोड़ी शर्मा गई थी…

ठाकुर को मरे सात दिन हो चुके थे,मैं और चंपा दोनों ही बेहद व्यस्त थी कारण था की ठाकुर की अन्टोष्ठी का कार्यक्रम.धर्मराज और गीता हवेली में रहने चले गए थे.वही चंपा भी उनके और कुसुम के साथ वही रह रही थी.डॉक्टर और मेरी भी वही रह रहे थे वो शहर वापस नही गए थे,आज चंपा और गीता ....चंपा के कपड़े लेने यंहा आये थे …

“कुछ नही बस आओ बैठो ना “

“मैं अपने कपड़े समेटती हु ...तू अपने और अपने जिजाजी के लिए चाय बना ले “

चंपा बेडरूम की ओर बड़ी

“अरे पूरे कपड़े ले जाने की क्या जरूरत है “

मैंने बैठे बैठे ही कहा

“जिजाजी अब तो ठाकुर नही रहे .फुलवा दीदी को दिए वचन का भार भी आपके ऊपर नही है ...तो ...तो अब चंपा दीदी आपके साथ इस घर में तभी रहेंगी जब आप बारात लेकर हवेली आओगे और शादी करके इन्हें यंहा लाओगे ,समझे तब तक के लिए मैं अपनी दीदी को ले जा रही हु “

गीता मुस्कुराते हुए रसोई की ओर चली गई

“ओह तो ये बात है …”

मैं भी मुस्कुराता हुआ अपने बेडरूम में गया जंहा चंपा अपने कपड़े एक बेग में डाल रही थी. मैंने उसे पीछे से जकड़ लीया

“अरे छोड़िए ना गीता आ जाएगी “

वो मेरी बांहों में ही मचली

“तुमने उस दिन कहा था की हवेली से वापस आते ही तुम्हारा श्रंगृार बिगाड़ दु लेकिन आज वापस आयी हो “

मैं उसके गले को चूमने लगा वो हल्के से हंसी और मेरी बांहों में कसमसाई

“क्या करू गीता और कुसुम मा ने आने ही नही दिया.और सुना ना गीता ने क्या कहा.अब तो सुहागरात में ही मेरे दुल्हन वाला श्रंगृार बिगड़ना बच्चू “

वो कसमसाते हुए मेरे पकड़ से अलग हो गई और मुझे चिढ़ाते हुए जीभ दिखाने लगी

“अच्छा जी…ऐसे एक चीज बताओ की हमारी शादी मे फुलवा और बलवीर आएंगे की नही “

मेरी बात सुनकर चंपा के चेहरे की हंसी गायब हो गई

“ये क्या बोल रहे हो “

“चंपा मैं इतना भी बेवकूफ नही हु ,अमरीश और चौहान ऐसे ही नही गिर सकते उन्हें किसी ने वंहा से प्लान करके गिराया है “

मेरी बात सुनकर वो थोड़ी मुस्कुराई

“आप और आपकी ड्यूटी बस हर समय यही चलते रहता है क्या.अगर आपको लगता की उन्हें फुलवा और बलवीर ने गिराया है तो ढूंढ लो उन्हें बात खत्म ...और अब कोई बहाने नही चलेंगे ठाकुर जा चुका है तो अब तुम्हे हमारी शादी के बारे में सोचना होगा.वरना रहना यू ही अकेले इस घर में.......और शादी से पहले मुझे छूने की सोचना भी मत ..”

वो इठलाते और मुस्कुराते हुए वंहा से निकल कर रसोई में जा घुसी ..

मुझे उसकी अदा पर बेहद ही प्यार आया. मेरे होठो में मुस्कान भी आ गई. लेकिन दिल के किसी कोने में एक टीस भी उठी की हो ना हो फुलवा और बलवीर अब भी जिंदा है. और उन्होंने ही ठाकुर को मारा है और मुझे लगता था की चंपा ही नही गीता ,धर्मराज,त्रिवेदी ,डॉक्टर यंहा तक की कुसुम भी इन सबमे शामिल थे ..

लेकिन मैं चाहते हुए भी कुछ नही कर पा रहा था.किसी नतीजे पर बिना सबूत के पहुच जाना मेरी फितरत भी नही थी ,और ठाकुर कोई दूध का धुला भी नही था की मैं उसको इंसाफ ना दिला पाने की वजह से दुखी फील करू ,लेकिन मुझे सच जानना था क्योकि यही तो मेरा काम था ....

ठाकुर को मरे हुए तीस दिन ही हुए थे की हवेली को दुल्हन की तरह सजाया गया ,वजह थी मेरी और चंपा की शादी …

चंपा का कन्यादान कुसुम कर रही थी और शादी के जश्न में कोई कमी नही आ जाए इसलिए दस दिन पहले से ही धर्मराज और डॉक्टर दिन रात लगे हुए थे ,मेरे माता पिता भी वहां आ चुके थे.उनके अलावा मेरी तरफ से और कोई नही आया था कोई था भी तो नही.मेरी बारात मेरे सरकारी मकान से हवेली तक गई…

मेरे माता पिता कुछ ज्यादा ही खुश लग रहे थे.जबकि मुझे लगा था की मेरी शादी की बात सुनकर उन्हें झटका लगेगा. लेकिन ऐसा नही हुआ बल्कि अब मुझे पता चला की मेरे माता पिता पहले से सभी को जानते थे और इस रिश्ते से बेहद ही खुश थे.वो लोगो से ऐसे मिल रहे थे जैसे उनका इनसे बहुत पुराना राब्ता रहा हो ..

त्रिवेदी ने मुझे बताया की पहले मेरे माता पिता जी के कारोबार के चाहते यंहा हवेली आया करते थे.इसलिए जब मेरी मा कुसुम से मिली तो गले मिलकर और गला फाड़कर रोने लगी.वही मेरे पिता जी जब धर्मराज ,डॉक्टर और त्रिवेदी से मिले तो बेहद ही आत्मीयता के साथ मिले..

इतने दिन हो गए थे मुझे यंहा काम करते लेकिन पिता जी ने कभी नही बताया था की उनका हवेली से और यंहा के लोगो से इतनी घनिष्ट जान पहचान थी.मेरे पिता जी ने बस ये कहा की ठाकुर अमरीश सही आदमी नही था और इसलिए तुझे कुछ नही बताया …

आखिर सब कुछ ठीक हो चुका था ….

मैं पूरी शादी यही इंतजार करता रहा की कही फुलवा और बलवीर मुझे दिख जाए लेकिन ऐसा नही हुआ उनकी कोई सुगंध भी मुझतक नही आई …….

हवेली का वो कमरा पता जो की बेहद ही बड़ा था.बहुत ही सुंदर तरीके से सजाया गया था.कमरे के बीचों बीच एक गोलाकार बिस्तर था जिसपर मेरी दुल्हन सजी हुई और शरमाये हुए बैठी थी.उसके पास ही कुछ लडकिया भी बैठी थी जिनमे एक गीता थी बाकी सब उसकी सहेलीयां …

जाते ही वो मेरी टांग खिंचने लगी और मेरा पर्स खाली करवाकर ही दम लीया.वो लोग हसंते हुए बाहर भाग गई …

चंपा के साथ कई महीनों से मेरा जिस्मानी रिश्ता रहा था…हम साथ ही रहा करते थे लेकिन पता नही आज फिर भी मेरा दिल जोरो से धड़क रहा था.मे उसके पास ही बैठा हुआ था वो घूंघट में थी.जब मैंने वो घूंघट उठाया तो मैंने उसकी आंखों में आंसू देखे …

“तुम रो रही हो ..”

उसने नजरे उठाई.उसकी बड़ी बड़ी आंखे काजल के कारण और भी बड़ी लग रही थी.आंखों में अब भी पानी भरा हुआ था जो उसके साफ आंखों को और भी उजला बना रहा थे

“आज मुझे वो मिल गया जिसका मैंने इतने दिनों से सपना देखा था ,ये खुशी के आँसू है दुख के नही “

वो हल्के से मुस्कुराते हुए बोली और उसके इस भोलेपन में मैं अपना दिल हार बैठ.मेरे होठ उसके होठो के पास जाने लगे थे.उसकी आंखे बंद हो चुकी थी जब हमारे होठ एक दूसरे से मिले..

और कुछ ही देर में ही कमरे में बस चूड़ियों और सिसकियों की आवाजे ही फैल रही थी …………..

एक महीना बीत चुका था मेरे तबादले का आदेश आ चुका था और मेरे दिमाग से ठाकुर फुलवा और बलवीर की बकरठोकी भी अब निकल गई थी.

त्रिवेदी जी ने भी अपना रिटायर ले लीया था. और भी अब नए जगह जाने से पहले कुछ दिन के लिए कही घुमकर आने की फिराक में था.तो मैंने भी छुट्टी का आवेदन डाल दिया जो की मंजूर भी हो गया ....

मैंने चंपा को बता दिया था की मैं एक महीने की छुट्टी ले रहा हु .जब मैं घर आया तो माहौल ही अलग था.मेरे आते ही चंपा मुझसे लिपट गई .....

"अरे क्या हुआ "

"जिजाजी आप लोगो की लाटरी लगी है "गीता खुशी से झूम रही थी

"क्या ???"

मैं चौका

"हा आपको याद है हमने कुछ दिन पहले ही एक ट्रेवल एजेंसी की लाटरी ली थी मॉल से "

चंपा ने मुझे याद दिलाया ,एक शाम हम माल घूमने गए थे और वंहा एक काउंटर में नए खुले एक ट्रेवल एजेंसी वाले लॉटरी बेच रहे थे,लक्की विनर को कनाडा का ट्रिप फ्री था ..

"हा याद आया तुमने वो खरीदी थी राइट!क्या नाम था एजेंसी का ??"

मैं याद करने की कोशिश करने लगा

"मिस एंड मिस्टर सिंह ट्रेवल एजेंसी ..हम वो जीत गए "

चंपा के चेहरे पर खुशी थी साथ ही मैं भी खुश हो गया

“वाओ क्या बात है आज ही मेरी छुट्टी भी मंजुर हो गई ऐसे कब निकलना है ..और कितने दिन का ट्रिप है “

“वही 10 दिन 10 रात का ,और हमे आज ही रात को निकलना होगा “

अब ये प्रॉब्लम आ गई

“लेकिन वीसा वगेरह “

मैंने अपनी दुविधा बताई

“ओहो जिजाजी डोंट वारी पासपोर्ट रेडी था तो वीसा का जुगाड़ डैडी ने कर दिया है.आज रात मुम्बई के लिए निकलो वंहा से कल सुबह की फ्लाइट है “गीता की बात से मैं ताज्जुब में पड़ गया लेकिन फिर मुझे याद आया की ठाकुर धर्मराज के भी बहुत कनेक्शन्स है …

जब हम वंहा पहुचे तो एक बड़ी सी गाड़ी हमारे स्वागत के लिए लग गई थी ,वंहा से हमे एक होटल ले जाया गया ,जंहा हमे बताया गया की ट्रेवल कंपनी के मालिक मिस्टर और मिसेज सिंह पर्सनली हमसे मिलने आने वाले है ,

मुझे ये सब थोड़ा अजीब जरूर लग रहा था लेकिन मैंने सोचा की हो सकता है की क्लाइंट रिलेशन शिप मेंटेन करने के लिए ये सब किया जा रहा होगा…

हम सफर से बहुत ही थक चुके थे तो हमने भी आराम करने की सोची ..

शाम होने पर हम होटल के एक हिस्से में गए जंहा हमसे मिसेज और मिस्टर सिंह मिलने वाले थे,l.मैं नार्मल टीशर्ट जीन्स में था वही चंपा ने फूलों वाली एक स्कर्ट डाल रखी थी .हमारे टेबल से नजारा बेहद ही शानदार दिख रहा था ,सामने समुंदर था और ठंडी हवाओ का सुकून भी …

मैं चंपा का हाथ पकड़े हुए कुछ बैठा हुआ समुंदर को ही देख रहा था .

“यार ये लोग कितने समय आएंगे ,मैं वाशरूम से आती हु “

चंपा मुस्कुराते हुए वंहा से चली गई..

मैं अब भी समुद्र को देख रहा था. साथ ही मैंने दो विस्की के ऑर्डर भी दे दिए ,ऐसे सुनहरे मौसम में और सुकून भरे जगह में बैठकर विस्की पीने का आनंद ही कुछ और था ..

मैं आराम से चुस्कियां ले रहा था ,5 मिनट ही हुए थे की चंपा वापस आकर मेरे पास बैठ गई …

उसने मेरे हाथो में अपना हाथ रखा ..

“वो लोग अभी तक नही आये ना “

उसकी आवाज सुनकर मैंने उसकी ओर देखा ,वो मुझे मुस्कुराते हुए देख रही थी ,उसकी प्यारी सी मुस्कुराहट को देखकर मैं भी मुस्कुरा उठा ……

मैं उसे बहुत ही बारीक नजरो से देख रहा था. हमारी आंखे मिल गई और मेरी मुस्कुराहट और भी गहरी हो गई

“क्या हुआ “

उसने मुझे यू देखता पा कर कहा

“मुझे पता था और अब यकीन हो गया है “

उसने मुझे थोड़े आश्चर्य से देखा

“किस बात पर ..”

मेरे होठो की मुस्कान और भी गहरी हो गई

“की तुम दोनों जिंदा हो “

उसने मुझे अजीब निगाहों से देखा

“तुम ठीक तो हो,क्या हो गया है तुम्हे “

उसकी बात सुनकर मैं जोरो से हँस पड़ा

“अब बहुत हो गया फुलवा ,अब मैं अपनी जान को आंखे बंद करके भी पहचान सकता हु “

मेरी बात सुनकर उसके होठो में भी मुस्कान खिल गई जो और भी चौड़ी हो गई ..

“बलवीर कहा है ??”

उसने मेरे सवाल का कोई जवाब नही दिया बल्कि हाथ से एक ओर इशारा किया ,उधर से चंपा और बलवीर चलते हुए आ रहे थे दोनों के होठो में मुस्कान थी ,चंपा और फुलवा ने

एक ही ड्रेस एक ही तरीके से पहन रखी थी ,

बलवीर पूरे सूट बूट में था. उसका धाकड़ शरीर पर वो कपड़े कसे हुए थे वो कोई बड़ा बिजनेसमैन ही लग रहा था …

‘‘तुम जीत है इसने तो मुझे देखते ही पहचान लीया ‘‘

फुलवा की बात सुनकर चंपा खुशी से उछल पड़ी

‘‘देखा मैंने कहा था की मेरा सुमित अब धोखा नही खायेगा ‘‘

वो आकर मुझसे लिपट गई ,वही थोड़ी देर बाद ही बलवीर ने मेरे तरफ हाथ बढ़ाया और मेरा हाथ खिंचते हुए अपने सीने से लगा लीया ,

‘‘कितने दिन से मैं तुम्हे अपने सीने से लगाना चाहता था भाई ‘‘

उसकी बात सुनकर मैं थोड़ा चौका जरूर लेकिन ज्यादा ध्यान नही दिया

अब हम चारो आराम से वंहा बैठे अपना ड्रिंक इंजॉय कर रहे थे ..

‘‘मुझे तुम लोगो से बहुत कुछ पूछना है’’

आखिर मैं अपने को कब तक रोक पाता ..

‘‘अरे पूछ लेना यार ,मेरी बहन इतने दिनों बाद मुझे मिली है थोड़ी बात तो करने दो ‘‘

फुलवा ने मुझे झड़पा और चंपा हँस पड़ी

‘‘ऐसे तुम्हारे लिए कई सरप्राइज है हमारे पास ‘‘

चंपा ने मुझे चिढ़ाते हुए कहा

“तू तो मुझे रात में मिल “

मैंने उसे तिरछी निगाहों से देखा और वो थोड़ी शर्मा गई लेकिन तुरंत ही मुझे अपना जीभ दिखा गई ..

थोड़ी देर तक चंपा और फुलवा दुनिया जहान की बाते करते रहे.वही बलवीर के मुझे एक अजीब बदलाव दिख रहा था वो मुझे बड़े ही प्यार से देख रहा था …

कुछ देर के बाद मैं फिर से फुट पड़ा

“अब तुम दोनों का हो गया हो तो ये तो बता दो की ठाकुर को तुमने कैसे मारा ?? मेरा तो सोच सोच कर ही सर दर्द हो गया है ,और इतनी ऊँचाई से गिरने के बाद तूम दोनों बच कैसे गए ,जबकी मेरी गोली भी तो तुम्हे लगी थी …???”

मेरी बात सुनकर फुलवा थोड़ा मुस्करा दी …

तभी एक वेटर वंहा ड्रिंक लेकर आया

“इसे पहचानते हो “फुलवा ने वेटर के तरफ इशारा किया

“सलाम साहब ..”

ऐसे तो वेटर पूरे कोर्ट टाई पहने हुए था लेकिन जब वो हंसा तो तम्बाकू से लाल हुए दांत दिख ही गए

“ह्म्म्म तुम्हारे ही गैंग का मेंबर है ,यानी सब को यंहा बुला लीया है ,इतना कुछ कर लीया तो इसके दांत भी साफ करवा देती “

मेरी बात सुनकर सभी हँस पड़े

“दो दिन बाद ही अपॉइमेन्ट है साहब डेंटिस्ट के पास,जेल से छूटकर सीधे यंहा ही आ गया “

वो फिर से दांत दिखता हुआ वंहा से चला गया

“तुमने मेरे सवाल का जवाब नही दिया फुलवा “

फुलवा ने अंगड़ाई ली

“तुम्हे समझ जाना चाहिए की हम सबने मिलकर ये किया है “

“हा इतना तो समझ आ ही गया लेकिन कैसे ??”

वो फिर से मुस्कुराते हुए मुझे देखने लगी ..

“जब तुमने वंहा मुझे घेरने की योजना बनाया और ठाकुर के लोगो को भी बुलाया तो,हमे ये पहले से पता था की तुम छूटते ही ऐसा कुछ करोगे,और जिंदा रहते हुए मैं ठाकुर तक नही पहुच पा रही थी तो मरना ही मैंने भी मरना ही ठीक समझा.चंपा ने मेरे भेस में जाकर तुम्हे छुड़ा लीया ,तुमने सोचा था की पुलिस काफी नही होगी तो ठाकुर के लोग नीचे हो घेर कर रखेंगे ,और तुमने उन्हें भी बुला लिया.तुम्हारे प्लान बनाते समय मैं वही मौजूद थी तुमसे थोड़ी ही दूर में ,त्रिवेदी जी और डॉक्टर के पास रखे माइक से तुम्हारी हर बाते सुन रही थी ,मुझे पता था की युवराज कभी भी नीचे बैठ कर मुझे गिरफ्तार होने नही देगा वो ऊपर आकर मुझे मारना चाहेगा.

हमने इसी बात का फायदा उठाया ,प्लान तो मेरे और बलवीर के मारने का और ऊपर से गिरने का पहले ही बन चुका था.तो नीचे सारे इंतजाम कर दिए गए थे,खाई के नीचे हमने जाल और पेड पहले भी बिछा दिए गए थे.हमने इसकी एक दो बार प्रेक्टिस भी कर ली थी ताकि समय आने पर हम परफेक्ट लैंडिंग कर सके …

अब जब युवराज ऊपर जा रहा था तो तुम्हारे जाने के बाद मैं फिर से डॉक्टर ,त्रिवेदी जी और चंपा से मिली ,त्रिवेदी जी ने मुझे बताया की तुम उनकी ही गन अपने साथ ले गए हो जिसमे नकली गोलीयां उन्होंने पहले से ही भर कर रखी थी,बस बात युवराज की थी की उसका क्या करना है ,वो अपनी असली गोली ही चलाएगा इसलिए हमने फैसला किया की उसके आने तक और अटैक करने तक मैं सुमित से बच कर रहूंगी जबकि बलवीर ऐसी जगह खड़ा होगा जंहा से उसको गोली मारने से रोका जा सके ,और फिर मैं अपनी गोलीयां उसके ऊपर उतार दूंगी ,बदले में तुम्हारे पास कोई चारा नही बचेगा मुझे गोली मारने

के.मुझे गोली लगेगी जो की नकली गोलीयां होंगी और मैं नीचे गिरूँगी और साथ ही बलवीर भी मेरे पीछे कूद जाएगा ,बस वही हुआ बात खत्म ……..”

ऐसे तो मेरे होठो पर मुस्कान थी लेकिन मैं अपने काम का पक्का इंसान था अगर ये इंडिया होता तो मैं अब तक इन्हें गिरफ्तार कर चुका होता ,मैंने एक गहरी सांस ली ,साले सब ने मिलकर मुझे अच्छा बेवकूफ बनाया था ……..

“और ठाकुर ..??”

“हम्म ठाकुर ..हमने बहुत सोचा की आखिर उसे कैसे मारा जाए,तब तक बलवीर छिपकर वही था और ठाकुर के ऊपर नजर रखे था लेकिन वो हवेली में घुसकर उसे नही मार सकता था ..”

“ हमे पता चला की ठाकुर घर में पूजा कर रहा है और सभी को बुलाया है.अब ठाकुर इतना शरीफ हो जाए और सभी से दोस्ती करने की सोचे ये तो अजीब बात थी वो भी अपने बेटे के मरने के बाद ...नही ऐसा तो नही हो सकता था हा ये जरूर हो सकता था की वो सबसे बदला लेना चाहता हो और कोई षडयंत्र कर रहा हो ,तो बलवीर को हवेली में घुसना ही पड़.वंहा कुछ लोग हमारे वफादार थे जो की कुसुम मौसी के लोग थे और कुछ बलवीर और मेरे बचपन के दोस्त थे.वो हमारा बहुत साथ तो नही दे सकते थे लेकिन उनकी मदद से हवेली में घुसा तो जा सकता था. बलवीर और कुसुम मौसी ने मिलकर पता लगाया की आखिर ठाकुर करने क्या वाला है,कुछ पता नही चला सिवाय इसके की मंत्री चौहान ठाकुर से एक दिन पहले मिलने आया था ,अमरीश ने अपनी सुरक्षा बड़ा रखी थी और कुसुम को भी अपने पास नही फटकने दे रहा था ,तो हमारा टारगेट था चौहान …

चौहान रसिक आदमी था और ये हमारे लिए एक अच्छी बात थी ,उसकी एक पुरानी रखैल थी जिसका उसके घर रोज का ही आना जाना था हमने उसे पकड़ा ,अच्छे पैसे दिए ताकि वो चौहान को अच्छे से दारू पिलाये और डॉक्टर बॅनर्जी और उसकी असिस्टेंट को वंहा आने दे बस…

डॉक्टर बॅनर्जी ने जाकर उस इंजेक्शन का प्रयोग किया जो पुलिस वाले कैदियों से सच बुलवाने के लिए प्रयोग में लाते है और साले ने सब कुछ उगल दिया.उसे सुबह याद भी नही

था की उसने क्या किया था.सुबह सब कुछ ठाकुर के प्लान के मुताबिक ही होने दिया गया ,सभी को उसने दवाई खिलाई और बेफिक्र हो गया ,दोनों ही आराम से बैठे अपने जीत का जश्न मना रहे थे लेकिन उन्हें पता नही था की बलवीर काल बनकर छत में उनका इंतजार कर रहा था.

अमरीश और चौहान चंपा और गीता से अपनी हवस मिटाने के फिराक में थे तभी बलवीर वंहा आ धमका .उसे देखकर ऐसे भी दोनों का पेंट ही गीला हो गया था क्योकि उन्होंने सोचा था की जब सब ही बेहोश है तो उन्हें किसी बॉडीगार्ड की जरूरत नही है उन्होंने सभी को बाहर भेज दिया था ,और बलवीर ने वही किया जो उसे करना था पहले उन्हें बांध कर छत में ले गया वंहा बिठाकर अच्छे से दारू पिलाई और फिर छत से फेक दिया ,और रात में ही वंहा से निकल कर यंहा आ गया ………..''

फुलवा की बात से वंहा शांति सी छा गई थी,फुलवा ने थोड़े देर रुककर फिर से बोलना शुरू किया

''मैं उसे अपने हाथो से मारना चाहती थी लेकिन क्या करे सभी चीजे अपने हाथो में तो नही होती ,ऐसे मुझे खुशी है की मेरे बलवीर ने ये काम पूरा किया ''

उसने मुस्कुराते हुए बलवीर की ओर देखा ,बलवीर भी मुस्कुराते हुए उसे ही देख रहा था

''तुम दोनों खूनी हो ,मैं तुम्हे इसकी सजा दिलाकर रहूंगा ''

मेरा पुलिसिया जमिर ना जाने कैसे फिर से जाग गया था

लेकिन वो दोनों हंस पडे

''मरे हुए लोगो को कैद नही किया जाता इंस्पेक्टर बाबू ..''

फुलवा जोरो से हंसी और साथ ही चंपा भी. मुझे अब चंपा पर गुस्सा आ रहा था क्योकि वो भी फुलवा के साथ हँस रही थी ,ऐसे वो भी तो इस खेल में शामिल थी ….

''तुम बहुत ही ईमानदार हो सुमित.ऐसे ईमानदारी हमारे खून में है हमारे पिता ठाकुर के ईमानदार थे.मैं फुलवा का और तुम पुलिस के ''

बलवीर ने मुस्कुराते हुए मुझे देखा लेकिन उसकी बात सुनकर मैं बहुत ही बुरी तरह से चौका था..

“क्या ..ये क्या बक रहे हो ??”

मैंने अपना सर झटका

लेकिन वो ही नही बल्कि चंपा और फुलवा भी मुस्कुरा रहे थे ..

“ये सच है सुमित ,संग्राम सिंह ही प्रवीण शर्मा है..”

चंपा की बात सुनकर मैं कुछ देर के लिए उस समय में खो गया जब मेरे पिता और माँ शादी के समय हवेली गए थे.वो सभी से इतनी आत्मीयता से मिल रहे थे

मैं बलवीर को देख रहा था उसकी आंखों में आंसू था..

“ये बात मुझे भी नही पता थी भाई लेकिन पिता जी से मर संपर्क तब से था जब उन्होंने ठाकुर का काम छोड़ शहर जाने का फैसला किया.तब तुम छोटे थे और हमारी नानी के पास रहते थे,तुम्हे कभी भी हेवली नही लाया गया था क्योकि मा नही चाहती थी की तुमपर इन सबका साया पड़े ,और तुम्हारे ही भविष्य के कारण मा के पिता जी को ठाकुर का काम छोड़ने को मनाया था…...शहर जाने के बाद पिता जी ने अपना नाम बदल दिया और एक आम इंसान की जिंदगी जीने लगे,वही तुम्हारी परवरिश हुई,लेकिन पिता जी मेरे संपर्क में थे,उन्होने बताया की मेरा भाई यानी तुम पुलिस में चले गए हो और तुम भी हमारी ही तरफ अपने काम के प्रति बेहद ही वफादार हो.

लेकिन वक्त को ना जाने क्या मंजूर था कि तुम्हारी पोस्टिंग हमारे थाने में हो गई ,बहुत दिनों तक तो मुझे भी नही पता था की मेरा भाई ही थाने का वो पुलिस वाला है जिसपर फुलवा फिदा हो गई है ,लेकिन फिर जब मेरी पिता जी से बात हुई तो मुझे पता चला की तुम ही मेरे भाई हो ये बात मैंने फुलवा को बताई और तब उसे अपने और तुम्हारे जिस्मानी रिश्ते पर बड़ा ही दुख हुआ लेकिन फिर उसने चंपा को यंहा लाने का फैसला किया ,बाकी का तो तुम जानते ही हो ….”

मैं बलवीर की बात सुनकर किसी और ही दुनिया में पहुच गया था

‘‘लेकिन मुझे इन सबका पता कैसे नही चला ‘‘

मैं जैसे अपने ही आप से पूछ रहा था

‘‘पता कैसे चलता सर जी हमने पता चलने ही कहा दिया ‘‘

ये आवाज मेरे पीछे से आ रही थी ,जिसे मैं इतने अच्छे से जानता था की आंखे बंद कर भी पहचान सकता था ,मैं पीछे मुड़ा

‘‘तो आप भी यही है त्रिवेदी जी ‘‘

त्रिवेदी हंसते हुए आया पास आया ,मैं बलवीर को और बलवीर मुझे देख रहा थे.अचानक ही हम दोनों जोर से गले मिल गए और वही त्रिवेदी ने एक सीट पकड़ कर बैठ गए थे ..

‘‘ओहोहो कितना मधुर मिलन है ,इसी बात में थोड़ी दारू हो जाए फुलवा बेटी ‘‘

त्रिवेदी की बात सुनकर फुलवा ने मुस्कुराकर पास खड़े एक वेटर को इशारा किया

‘‘अच्छा बेवकूफ बनाया आप लोगो ने ,पापा तो पापा मा ने भी भनक नही लगने दी ‘‘

मैं जैसे खुद से ही बोल रहा था लेकिन मेरे दिल और चेहरे में बस खुशी ही खुशी थी

‘‘अरे सर अगर आप को बता देतो तो क्या आप ये सब होने देतो,संग्राम भी जानता था और हम भी की उसका खून कभी अपने काम से गद्दारी नही करेगा ,सब सच जानते हुए भी आप अपने काम की ईमानदारी के कारण फुलवा और बलवीर को सलाखों के पीछे पहुचाने में लगे रहते और इसका फायदा वो ठाकुर उठा ले जाता ...तो कहते है ना की अंत भला तो सब भला और जय हो संग्राम सिंह और जय हो बलवीर सिंह ‘‘

त्रिवेदी ने सामने रखा एक पैक एक ही झटके में अपने गले से उतार लीया …

.... समाप्त ....